चिंतन

भारत में आर्थिक सुधारों के नायक मनमोहन सिंह

भारत के पहले अर्थशास्त्री से प्रधानमंत्री तक का सफर तय करने वाले डा. मनमोहन सिंह एक अच्छे अध्यापक, एक अच्छे सलाहकार, एक अच्छे गवर्नर, एक अच्छे वित्त मंत्री, एक अच्छे प्रधानमंत्री के साथ-साथ एक विजनरी व दृढ़ राजनेता, प्रशासक और सौम्य व्यक्तित्व के लिए हमेशा याद किए जाएंगे। पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अगर आजाद भारत के नव निर्माण की नींव रखी तो डा. मनमोहन सिंह ने विकसित भारत यात्रा की बुनियाद रखी। देश में आर्थिक सुधारों के जनक डा. मनमोहन सिंह का जाना भारत के लिए राष्ट्रीय क्षति है। पूर्व प्रधानमंत्री डा. सिंह को भारत को लाइसेंस राज से मुक्त कराने वाले और देश को उस स्थिति से उबारने वाले उद्धारक के रूप में याद किया जाएगा जब इसका स्वर्ण भंडार भी गिरवी रख दिया गया था। एक भविष्यदृष्टा राजनेता के तौर पर पहचान बनाने वाले डा. सिंह विकास के पथ पर अग्रसर भारत के शिल्पकार थे। कांग्रेस नेता के रूप में उन्होंने 2004-2014 तक 10 वर्षों के लिए देश का नेतृत्व किया और उससे पहले वित्त मंत्री के रूप में देश के आर्थिक ढांचे को तैयार करने में मदद की। वह वैश्विक स्तर पर वित्तीय और आर्थिक क्षेत्र की एक मशहूर शख्सियत थे। भारत में आर्थिक उदारीकरण के नायक डा. मनमोहन के कार्यकाल में ही सूचना का अधिकार (आरटीआई), शिक्षा का अधिकार (आरटीई), मनरेगा, 2008 की आर्थिक मंदी से भारत को बचाना, 3.69 करोड़ छोटे और सीमांत किसानों के करीब 72 हजार करोड़ रुपये के कर्ज की माफी, वर्ष 2013 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत भोजन का अधिकार, जिसमें 81.35 करोड़ लोग कवर हैं जैसे युग परिवर्तनकारी फैसले हुए। 2008 में भारत और अमेरिका के बीच परमाणु सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। इस समझौते के तहत भारत को अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए परमाणु तकनीक और ईंधन मिलने का रास्ता खुल गया। परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (एनएसजी) ने भारत को एक विशेष छूट दी। इस छूट की मदद से भारत ने फ्रांस, रूस, कनाडा, जापान और कोरिया समेत दर्जनभर से ज्यादा देशों के साथ शांतिपूर्ण उपयोग के लिए परमाणु समझौतों पर हस्ताक्षर किए। डील का ही असर है कि वर्ष 2022 में 22 परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों की मदद से देश की स्थापित परमाणु ऊर्जा क्षमता 6 हजार 780 मेगावॉट तक पहुंच गई थी। मनरेगा को मजबूती देकर सरकार प्रविंबल (रेवड़ी कल्चर) को खत्म कर सकती है, खाद्य सुरक्षा के तहत मुफ्त अनाज योजना को भी मनरेगा से जोड़ा जा सकता है। मौजूदा भारतीय अर्थव्यवस्था के आर्किटेक्ट मनमोहन सिंह ने अभावों के बीच अपने जीवन की शुरुआत की थी, पर कठिन परिश्रम के दम पर प्रधानमंत्री तक का सफर तय किया। वे एक अनिच्छुक राजनेता थे, जिन्हें मुख्यधारा की उबड़-खाबड़ राजनीति रास नहीं आती थी। सोनिया गांधी ने अपनी पार्टी के अनुरोध के बावजूद देश में विदेशी मूल के मुद्दे पर हो रहे विरोध के चलते प्रधानमंत्री पद स्वीकार करने से इनकार कर दिया था और जब उन्होंने इस शीर्ष पद के लिए मनमोहन सिंह को चुना तो हर किसी को बहुत हैरानी हुई थी। राजनेता के रूप में डा. सिंह का संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन के सहयोगियों के साथ भी संतुलित दृष्टिकोण रहा। कांग्रेस नीत संप्रग सरकार के कई मंत्रियों पर करप्शन के आरोप लगे, पर डा. मनमोहन सिंह हमेशा बेदाग रहे। विकास को हरित लक्ष्य से जोड़ने वाले डा. सिंह ने आरोपों के बावजूद सदैव अपनी और अपने पद की गरिमा बनाए रखी। दिवंगत डा. सिंह को विनम्र श्रद्धांजलि।

व्यक्तित्व
राज कुमार सिंह

काजल की कोठरी में बेदाग रहे मनमोहन

मनमोहन की मंशा पर संदेह और सवाल कभी उनके राजनीतिक विरोधियों ने भी नहीं उठाया। भारत सरीखे राजनीति-संवेदनशील देश में एक अर्थशास्त्री का वित्त मंत्री बनना एक आश्चर्यजनक घटना थी। तब देश की अर्थव्यवस्था अभूतपूर्व संकट के दौर से गुजर रही थी और सोना तक गिरवी रखना पड़ा था, लेकिन कोई विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता कि राजीव गांधी की हत्या के चलते प्रधानमंत्री बने पीवी नरसिम्हा राव ने वित्त मंत्री के लिए मनमोहन सिंह को ही क्यों चुना? कारण से इतर परिणाम को देखें तो इसमें दो राय नहीं कि मनमोहन भारत की अर्थव्यवस्था को संकट से निकाल कर ऐसी दिशा देने में सफल रहे, जो वैश्विक मंदी के झटके झेलने में भी कामयाब रही।

कभी गांव में मिट्टी के दीपक की रोशनी में पढ़ने वाले मनमोहन सिंह का देश का दीपक बनने तक का सफर इतना प्रेरक रहा कि आप उनके व्यक्तित्व के किसी भी पहलू से प्रेरणा ले सकते हैं। बेशक ऐसे गुदड़ी के लाल नेतृत्व में भारत में और भी हुए हैं, लेकिन मनमोहन सिंह ने अपने 92 साल के जीवन में इतनी भूमिकाएं सफलतापूर्वक निभायीं कि तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि उन्हें किस रूप में याद रखा जाये। पंजाब के गाह गांव में मिट्टी के दीये की रोशनी में शिक्षा के प्रति अपनी लगन से कैंब्रिज और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी तक पहुंचे छात्र के रूप में या पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स के प्राध्यापक के रूप में; भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में सलाहकार के रूप में या भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में; देश के वित्त मंत्री के रूप में या फिर देश के अराजनीतिक प्रधानमंत्री के रूप में।

लोकतंत्र में असहमति की गुंजाइश तो रहनी ही चाहिए, पर मनमोहन की मंशा पर संदेह और सवाल कभी उनके राजनीतिक विरोधियों ने भी नहीं उठाया। भारत सरीखे राजनीति-संवेदनशील देश में एक अर्थशास्त्री का वित्त मंत्री बनना एक आश्चर्यजनक घटना थी। तब देश की अर्थव्यवस्था अभूतपूर्व संकट के दौर से गुजर रही थी और सोना तक गिरवी रखना पड़ा था, लेकिन कोई विश्वासपूर्वक नहीं कह सकता कि राजीव गांधी की हत्या के चलते प्रधानमंत्री बने पीवी नरसिम्हा राव ने वित्त मंत्री के लिए मनमोहन सिंह को ही क्यों चुना? कारण से इतर परिणाम को देखें तो इसमें दो राय नहीं कि मनमोहन भारत की अर्थव्यवस्था को संकट से निकाल कर ऐसी दिशा देने में सफल रहे, जो वैश्विक मंदी के झटके झेलने में भी कामयाब रही।

बेशक आर्थिक उदारीकरण के फैसलों पर तब सवाल भी उठे थे। आज भी उसके परिणाम पूरी तरह निरापद नहीं माने जा सकते, लेकिन संकट के दौराहे या चौराहे पर आपको अपनी समझ से एक दिशा चुननी पड़ती है, जिसके सही या गलत होने का फैसला आने वाला समय ही कर सकता है। क्या भारत की अर्थव्यवस्था, खासकर घरेलू उद्योग-बाजार आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण के लिए पूरी तरह तैयार थे? यह सवाल तब भी पूछा गया था, जिसका संतोषजनक जवाब अभी तक नहीं मिल पाया। फिर भी आर्थिक उदारीकरण के बाद देश की अर्थव्यवस्था की रफ्तार बताती है कि उस समय वही सही विकल्प था। हां, देश की समृद्धि के साथ ही बढ़ती आर्थिक विषमता यह भी संकेत दे रही है कि उदारीकरण का स्वरूप और दिशा, भारत की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप संशोधित हो सकती थी। अभी भी हो सकती है, ताकि उदारीकरण और संपन्नता का लाभ देश की पूरी आबादी तक पहुंचे। जाहिर है, वित्त मंत्री बनने से भी ज्यादा चौंकाने वाला था मनमोहन सिंह का प्रधानमंत्री बनना। अटल बिहारी वाजपेयी सरीखे विराट जननेता की अगुवाई वाली राजग सरकार को अपदस्थ कर मतदाताओं ने 2004 में सोनिया गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस और उसकी अगुवाई वाले संप्रग के पक्ष में जनादेश दिया। सोनिया गांधी के विदेशी मूल के मुद्दे पर 1999 में ही शरद पवार, पीए संगमा और तारिक अनवर कांग्रेस तोड़ कर अलग राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बना चुके

थे। ऐसे में जब 2004 का जनादेश आया तो सोनिया गांधी के विदेशी मूल का मुद्दा फिर राजनीतिक गलियारों और मीडिया में सतह पर आ गया। वास्तविक कारण तो सोनिया गांधी बेहतर जानती होंगी, लेकिन उन्होंने खुद प्रधानमंत्री बनने के बजाय मनमोहन सिंह की ताजपोशी कर देश ही नहीं, दुनिया को भी चौंका दिया। मनमोहन सिंह दो कार्यकाल पूरा करने वाले, जवाहर लाल नेहरू के बाद देश के दूसरे प्रधानमंत्री बने। प्रधानमंत्री के रूप में उनके दो कार्यकाल कैसे रहे, इसका आकलन न तो आसान है, और न ही निर्विवाद।

उन्होंने खुद भी कहा था कि शायद इतिहास उनका आकलन ज्यादा उदारता से करेगा, बजाय समकालीन मीडिया और विपक्ष के, खासकर संसद के अंदर रवैये के मद्देनजर। दरअसल मनमोहन सिंह एक गठबंधन सरकार का नेतृत्व कर रहे थे, जो उनकी अराजनीतिक पृष्ठभूमि के मद्देनजर बेहद जटिल काम था। उनके मंत्रिमंडल में कई सदस्य ऐसे थे, जो नेहरू-गांधी परिवार के विश्वस्त माने जाते थे। जाहिर है, मंत्रिमंडल के सदस्यों का चयन और विभागों का बंटवारा भी दस जनपथ से ही हुआ था। मनमोहन सिंह बस उसके मुखिया भर थे। फिर सोनिया गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रीय सलाहकार परिषद के रूप में एक व्यवस्थागत ढांचा ही बना दिया गया, उन्हें सलाह देने के लिए। थोड़ा असहज लग सकता है, पर सच यही है कि मनमोहन सिंह भारत के 14वें प्रधानमंत्री तो रहे, पर सत्ता के सूत्र पूरी तरह उनके नियंत्रण में नहीं थे। बाद में उन्हीं के मीडिया सलाहकार संजय बारू की द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर शीर्षक से एक संस्मरणात्मक पुस्तक आयी, और एक फिल्म भी बनी, जिसमें अनुपम खेर ने मनमोहन की भूमिका निभायी। थोड़ा और स्पष्ट करना हो तो राजनीतिक प्रबंधन और प्रभाव वाले निर्णय दस जनपथ से होते थे, पर जिम्मेदारी और जवाबदेही मनमोहन की। इसके बावजूद मनमोहन सिंह प्रधानमंत्रित्वकाल से देश की दशा और दिशा पर अपने निशान छोड़ने में सफल रहे।

अपनी मौन और विनम्र छवि के बावजूद मनमोहन ने कुछ मौकों पर ठोस स्टैंड लिया और अपने इरादों को अंजाम तक पहुंचाया। 2004 में पहली बार बनी संप्रग सरकार वाम मोर्चा के बाहरी समर्थन पर भी टिकी थी। परमाणु मुद्दे पर भारत के प्रति कुछ बड़े देशों का सौतेला व्यवहार समाप्त करने के लिए 2008 में जब अमेरिका से परमाणु संधि की बात आयी तो मनमोहन सरकार को भी दांव पर लगाने की सीमा तक चले गये। वाम मोर्चा ने समर्थन वापस ले लिया, पर सपा-बसपा के समर्थन से उसकी भरपाई कर ली गयी। उनके ऐसे दूरदर्शी निर्णय देश की विदेश नीति को भी सही दिशा देने वाले साबित हुए। मनमोहन सिंह की मंशा और व्यक्तिगत ईमानदारी पर संदेह और सवाल कभी नहीं उठा, लेकिन उनकी सरकार को भ्रष्ट सरकार बताया गया, क्योंकि उसी दौरान राष्ट्रमंडल खेलों से लेकर टूजी स्पेक्ट्रम और कोयला आवंटन तक कई घोटाले उजागर हुए।

जन लोकपाल के मुद्दे पर अन्ना हजारे का चर्चित आंदोलन भी हुआ, जिससे बने जनमत में 2014 में संप्रग सरकार सत्ता से बेदखल हो गयी और अरविंद केजरीवाल ने आम आदमी पार्टी बनाकर अपनी राजनीतिक पारी की शुरुआत कर ली। आप कह सकते हैं कि काजल की कोठरी में भी मनमोहन सिंह बेदाग ही रहे, पर मतदाताओं का विश्वास जीत कर कभी लोकसभा नहीं पहुंच पाये। वह बिना कोई चुनाव लड़े देश के शीर्ष पदों पर पहुंचे। डॉ. मनमोहन सिंह रिकॉर्ड 33 वर्ष तक राज्यसभा में सक्रिय सदस्य के रूप में अपनी भूमिका निभाते रहे। वर्ष-1991 में वह पहली बार राज्यसभा पहुंचे। उसके बाद 1995, 2001, 2007 और 2013 में फिर से राज्यसभा के लिए चुने गए। सन् 1998 से लेकर 2004 के बीच वह राज्यसभा में नेता विपक्ष भी रहे।

(लेखक राजनीतिक विश्लेषक हैं, ये उनके अपने विचार हैं। लेख पर अपनी प्रतिक्रिया edit@haribhoomi.com पर दे सकते हैं।)

श्रद्धांजलि
डॉ. रमेश ठाकुर

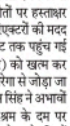

आर्थिक जगत के विलक्षण वास्तुकार थे डॉक्टर साहब

बानवे वर्ष में डॉ. मनमोहन सिंह ने दुनिया को अलविदा कह दिया। उनका संपूर्ण मौन व्यक्तित्व ऐसा रहा जिससे देश भी कई मर्तबा अधीर होकर उठ खड़ा हुआ। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को न सिर्फ भारत ने, बल्कि विश्व बिरादरी ने अपना सगा अर्थ-व्यवस्था का विलक्षण कोहिनूर समान वास्तुकार खो दिया। पूरे संसार की आंखें उनके निधन से नम हैं। दो दफा प्रधानमंत्री के रूप में डॉक्टर साहब ने 5 ऐसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए जिन्हें मौजूदा क्या, आने वाली पीढ़ियां भी स्मरण करती रहेंगी। 2005 में 'सूचना का अधिकार' और 'मनरेगा कानून' को लागू करना। फिर 2009 में 'शिक्षा का अधिकार कानून'। वहीं, 2013 में दो बड़े फैसले 'राष्ट्रीय खाद सुरक्षा कानून' और 'भूमि अधिग्रहण कानून' पर अंतिम निर्णय लेने को भारतवासी सदैव याद करेंगे। डॉ. सिंह को अर्थव्यवस्था का सूत्रधार कहा गया। आर्थिक उदारीकरण और आर्थिक सर्वेक्षणों में सुधार के लिए उनकी एकाग्रता के सभी काबिल रहे। यूपीए सरकार के दूसरे टर्म में जब प्रधानमंत्री बनाने की बात हुई, तो प्रणब मुखर्जी का नाम सबसे तेज दौड़ा। पर, प्रणब मुखर्जी ने खुद आगे बढ़कर सोनिया गांधी और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व से गुहार लगाई कि देश की अर्थव्यवस्था जिस लिहाज से आगे बढ़ रही है, उसे डॉ. मनमोहन सिंह से बेहतर दूसरा कोई गति नहीं दे सकता। इसलिए वो गति निरंतर रहे, दोबारा से डॉक्टर साहब को ही कमान सौंपी जाए। उनके कहने के बाद ही यूपीए चेयरपर्सन सोनिया गांधी ने दोबारा डॉ. सिंह के नाम पर मुहर लगवाई। 1991 में वित्तमंत्री रहते उन्होंने जब देश की गड़बड़ अर्थव्यवस्था को संभाला था, तब स्वंय अटल बिहारी वाजपेयी ने उनकी तारीफ की थी। अपने वित्तमंत्री कार्यकाल के दौरान पूर्व प्रधानमंत्री नरसिंह राव ने भी डॉ. सिंह के फैसलों को सराहा था। दरअसल वो ऐसा दौर था जब दशकों से बंद पड़ी भारतीय अर्थव्यवस्था के दरवाजों को खोलने की शुरुआत मनमोहन सिंह द्वारा की गई थी। वित्तमंत्री रहते लाइसेंस राज को खत्म करने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है। उन्होंने सबसे पहले विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने का काम किया और भारत के भीतर विदेशी कारोबार को अपने अर्थ स्टाइल से आकर्षित करवाया। तभी से भारत में बाहरी कंपनियों के आगमन की शुरुआत हुई। ये काम उन्होंने बिना ढोल बजाए किया। न प्रचार किया और शोर-शराबा। जबकि, उनके चुप रहने और शांत भाव की 'मौनता' पर विभिन्न सियासी दलों ने हमेशा असहनीय और अखरने वाली तल्ख टिप्पणियां की। पर, उन्होंने कभी किसी को पलट कर कोई कड़वा जवाब नहीं दिया। उन्होंने व्यक्तिगत रिश्तों के मापदंडों को सियासत से सदैव उपर रखा। हालांकि, बीते एकाध दशक से उन पर ज्यादा ही कटाक्ष होने लगे, तो उनके भीतर का शांत शायर जाग उठा। तब, उन्होंने अपने सियासी विरोधियों को अपने दो शेर के जरिए जवाब दिया। उन शेर को लोग आज उनके न रहने पर खूब गुनगुना और याद कर रहे हैं। उनका पहला शेर था 'माना तेरे दीद के काबिल नहीं हूं मैं, तू मेरा शौक देख, मेरा इंतजार देख'। और दूसरा शेर 'हजारों जवाबों से अच्छी मेरी खामोशी, न जाने कितने सवालों की आबरू रखी', था। ये दोनों शेर हमेशा चर्चाओं में रहे। गौरतलब है कि अर्थव्यवस्था के अलावा डॉक्टर मनमोहन सिंह को उच्च शिक्षा में अमूलचूक परिवर्तन और बड़ा सुधारक भी माना गया। एक मर्तबा खुद उन्होंने स्वीकारा था कि विश्व के उच्च शिक्षा संस्थान में पढ़ने के बाद ही उन्होंने देश में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों को संभालने का अवसर मिला। इसलिए वह उच्च शिक्षा के सदैव पक्षधर रहे। प्रत्येक निर्णयों में उनका धैर्य, संयम और उदारता देखने लायक होती थी। प्रेशर में आकर या जल्दबाजी में उन्होंने कभी कोई निर्णय नहीं लिया। 2005 में मनरेगा का जब फाइनल ड्राफ्ट तैयार होकर उनके समक्ष प्रस्तुत किया गया, तो उसमें उन्होंने बदलाव करने को कहा, जिसको लेकर उन्होंने सोनिया गांधी की नाराजगी भी सही। लेकिन बाद में हुआ वही जो मनमोहन सिंह ने चाहा। मनमोहन सिंह सरकार में अरुणा राय उनकी सलाहकार थी, जिन्होंने ही मनरेगा में महत्वपूर्ण बदलाव के सुझाव दिए थे, उनकी राय पर ही डॉक्टर साहब ने रोजगार गारंटी अधिनियम कानून लागू किया गया। उसमें अर्थशास्त्री ज्यां द्रेज की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। मनमोहन सिंह का व्यक्तित्व निःसंदेह करिश्माई था। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण के तीनों संस्करणों में उन्होंने अपना बहुमूल्य योगदान दिया, जिसे देश कभी नहीं भूलेगा। डॉ. मनमोहन सिंह देश के बेशकीमती हीरे ही नहीं, बल्कि धरोहर जैसे थे। उनके योगदान के किस्से आने वाली पीढ़ियां सुनती और पढ़ती रहेंगी।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

मस्तिष्क को जैसा चिंतन देंगे वैसा ही वह सोचेगा

श्रीराम शर्मा
दर्शन

क्या आप अत्यधिक चिंतनशील प्रकृति के हैं? सारे दिन अपनी बाबत कुछ न कुछ गंभीरता से सोचा ही करते हैं? आप अपने मस्तिष्क को सारे दिन विशेषतः रात में किसी भी चिंतन की क्रिया में डाल देते हैं। जैसे गाड़ी का पहिया किसी लीक में पड़ कर आगे निरंतर उसी दिशा में बढ़ता रहता है, उसी प्रकार मस्तिष्क को चिंतन की किसी भी समस्या में उसको लगा देने से वह उसी में फंसा रहता है। वह खुद रुकता नहीं, बल्कि चिंतन के प्रवाह में आगे बढ़ता रहता है। मस्तिष्क तो चिंतन का एक यंत्र है। उसका कार्य चिंतन करना ही है। यदि आप उसे कोई अच्छी या बुरी समस्या दिए रहेंगे, तो निश्चय जानिए वह उसी समस्या के उखाड़-पछाड़ में संलग्न रहेगा। वह विश्राम की परवाह न कर बौद्धिक चिंतन ही किए जाएगा। आधुनिक मनोविज्ञान वेत्ताओं की नई खोज यह है कि अधिक बौद्धिक चिंतन मनुष्य के शरीर के लिए हानिकारक है। जो जितना अधिक मानसिक चिंतन करता है, उसका शरीर उतना ही क्षीण होता जाता है। भूख नष्ट हो जाती है। भोजन में कोई भी रुचि नहीं रह जाती। रक्तचाप, व्रण, हृदय रोग, सिर दर्द आदि उभर उठते हैं। चिंतनशील व्यक्ति प्रायः भयभीत से, शंकालु से और भविष्य के लिए चिंतित रहते हैं। गुप्त मन में बैठा हुआ उनका भय ही उन्हें खाया करता है। आप बौद्धिक चिंतन या मानसिक श्रम करने वालों के स्वास्थ्य को देखिए। वे पहले दुबले रहते हैं तो भी शरीर पर मांस नहीं बढ़ता। उनकी हड्डियां ही हड्डियां चमका करती हैं।

विनम्रता, प्रेम और मधुर भाषा ही आध्यात्मिकता की पाठशाला

बाबा हरदेव
प्रेरणा

भक्तिपूर्ण विचार ही सत्संग में रख सकते हैं। विनम्र भाव, प्रेम भाव व मधुर भाषा का प्रयोग करें। यह आध्यात्मिकता की पाठशाला है। महिलाओं के साथ यदि छोटे बच्चे हों तो संगत में पीछे ही बैठें ताकि किसी को असुविधा न हो। सत्संग में आपस में बात न करें। अगर जरूरी हो तो संगत से बाहर जाकर बात करें। सत्संग में आकर आनंद लें, ये आपका अधिकार है। एक आदमी ने पांच लोगों से कहा आप सोचकर बताएं कि अगर डाक्टर ये बता दे कि आपकी मौत तीन महीने बाद हो जाएगी, तो आप उन तीन महीनों में क्या करोगे? सभी ने अपनी राय व्यक्त की मगर एक आदमी बोला तो मैं तीन महीने में अपने मालिक प्रभु के दर्शन करूंगा। बेहद प्रेम करूंगा, हृदय से भक्ति करूंगा, संतों की बहुत सेवा करूंगा और तीन महीने तक सत्संग करूंगा। तू ही निरंकार, मैं तेरी शरण हां, मैंनू बख्श लो का सुमिरन तो हृदय से इतना करूंगा कि जब तक मेरे प्राण न निकल जाएं, तब तक अपने मालिक प्रभु के चरणों में जुड़ा रहे। संगत मां से प्रार्थना करूंगा कि हे संगत मां, तेरा साथ आखिरी सांस तक बना रहे। आप साथ संगत है, आपका कहना तो सद्गुरु भी नहीं टालते हैं। मैं यही मांगता हूं कि जब-जब दुनिया में आऊं, तब-तब तेरी संगत मुझे मिलती रहे। यही वरदान चाहता हूं। सत्संग से आनंद मिलता है, प्रभु का प्यार मिलता है। प्रेम भक्ति मिलती है। हरि अनंत हरि कथा अनंता। कहि सुनि बहु विधि संता। परमात्मा की कथा सरोवर है। इसकी महिमा अपरंपार है। परमात्मा की चर्चा करने से शांति व ठंडक मिलती है।

अंतर्मन

आज की पाती

कार्यस्थल पर लैंगिक असमानता की चुनौती

भारतीय समाज में कार्यरत महिलाएं आज एक अभूतपूर्व संघर्ष का सामना कर रही हैं। एक ऐसी व्यवस्था में जहां पारंपरिक और आधुनिक मूल्य लगातार टकरा रहे हैं, इन महिलाओं को पेशेवर सफलता और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच एक अटमाद संतुलन बनाने की चुनौती दी जा रही है। आज के आधुनिक समाज में कार्यरत महिलाएं देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। हालांकि, उनके सामने कई स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियां हैं जो उनके मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक कल्याण को प्रभावित करती हैं। कार्यस्थल और घरेलू जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाए रखना महिलाओं के लिए एक बड़ी मानसिक चुनौती है। -सुनिधि मिश्रा, कोरबा

ट्रेंड

पुष्पांजलि अर्पित

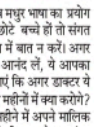

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को पुष्पांजलि अर्पित की। एक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह जी को वित्त और सार्वजनिक नीति के उनके विशाल ज्ञान के लिए हमेशा याद किया जाएगा।
-अमित शाह, केंद्रीय गृहमंत्री

अपूरणीय क्षति

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी का निधन देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। उनकी विद्वता और सादगी के गुणों को शब्दों में पिरोना असंभव है। ईश्वर पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दे।
-अरविंद केजरीवाल, पूर्व सीएम नई दिल्ली

बच्चे रामायण-गीता पढ़ें

अपने बच्चों को रामायण-गीता-महाभारत अवश्य पढ़ाएं। योगेश्वर कृष्ण ठेकर की सर्वाधिक सुलभ व सरल अवधारणा के अतिरिक्त प्रतीक है। उन्हें दो दुनों में हमारी दो अलग-अलग माताओं ने प्रेम किया और दोनों केवल उस प्रेम की आभा से अनंत काल के लिए अमर भी हो गयीं।
-कुमार विश्वास, कवि

क्रोध सबसे बुरी भावना

क्रोध आपके द्वारा महसूस की जाने वाली सबसे बुरी भावना है। आपको पता नहीं है कि यह वास्तव में कहां से आता है, और यह खुद को आश्चर्यजनक तरीकों से व्यक्त करेगा। एक बूमरैंग की तरह यह आपकी ओर ही वापस आता है।
-रोहित कपूर, फिल्मकार

करंट अफेयर

यूक्रेन की तरह मोलदोवा पर हमले की योजना बना रहा रूस

रूस और यूक्रेन के बीच जंग को अब तीन साल होने वाले हैं। कई पश्चिमी देशों का अंदाजा है कि इस युद्ध के इतना लंबा खिंचने की वजह रूस की कमजोर पड़ती ताकत है। हालांकि, मैदान पर रूस ने इन कयासों को किनारे लगाते हुए यूक्रेन पर ड्रोन्स, बैलिस्टिक मिसाइल से लेकर क्रूज मिसाइलों तक से हमला बोला है और उसके बड़े क्षेत्र पर कब्जा करने में सफलता हासिल की है। इस बीच अब रूस की तरफ से पश्चिम में एक और देश के खिलाफ मोर्चा खोले जाने का खतरा उभर रहा है। यह है एक छोटा देश मालदोवा, जिस पर रूस ने सैन्य अभियान की साजिश रचने के आरोप लगाए हैं और धमकियां दी हैं। ऐसे में यह जानना अहम है कि आखिर रूस ने मालदोवा पर किस तरह की साजिश के आरोप लगाए हैं? पुतिन शासन से मोलदोवा को किस तरह का खतरा है? दुनिया में रूस की धमकियों को लेकर डर का माहौल क्यों है? और पुतिन के अगले कदम क्या हो सकते हैं? रूस की खुफिया एजेंसियों ने आरोप लगाया है कि मालदोवा की राष्ट्रपति माइआ सैंडू यूक्रेन की सीमा के नजदीक ट्रांसनिस्ट्रिया में एक सैन्य अभियान चलाने की योजना बना रही हैं। इन एजेंसियों ने अनुमान लगाया है कि मोलदोवा का यह अभियान युद्ध में भी बदल सकता है।

ऑफ बीट

धार्मिक-आध्यात्मिक जागरण का महापर्व कुंभ मेला

महाकुंभ का यह मेला हर 12 वर्ष में ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार चार पवित्र स्थलों हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में से किसी एक स्थान पर आयोजित होता है। मान्यता है कि समुद्र मंथन के दौरान अमृत की बूंदें इन चार स्थानों पर गिरी थीं, जिससे इन स्थलों की पवित्रता बढ़ गई। 2025 में यह महाकुंभ मेला प्रयागराज में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक पूरी आस्था और श्रद्धा के साथ आयोजित किया जा रहा है। महाकुंभ विश्व के सबसे बड़े धार्मिक-आध्यात्मिक समागम के रूप में सुप्रतिष्ठित है। कुंभ मेला सनातन भारतीय आस्था, संस्कृति और परंपराओं का अद्भुत संगम है। महाकुंभ भारतीय संस्कृति का एक अद्भुत आध्यात्मिक आयोजन है। भारतीय समाज की दृढ़ आस्था है कि संगम के पवित्र जल में डुबकी लगाने से व्यक्ति के सभी पाप धुल जाते हैं। यह सनान न केवल आत्मा की शुद्धि का प्रतीक है, बल्कि इसे मोक्ष प्राप्ति का मार्ग भी माना जाता है। यह मेला हर 12 वर्ष में ज्योतिषीय गणनाओं के अनुसार चार पवित्र स्थलों हरिद्वार, उज्जैन, नासिक और प्रयागराज में से किसी एक स्थान पर आयोजित होता है। मान्यता है कि समुद्र मंथन के दौरान अमृत की बूंदें इन चार स्थानों पर गिरी थीं, जिससे इन स्थलों की पवित्रता बढ़ गई।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से aapkepatra.haribhoomi@gmail.com पर भेज सकते हैं।

मेरा हमेशा से विश्वास रहा है कि भारत को ईश्वर से प्रचुर उद्यमिता कौशल का वरदान मिला हुआ है। -डॉ. मनमोहन सिंह

भद्र राजनेता का जाना

पूर्व प्रधानमंत्री, देश में खुली अर्थव्यवस्था के सूत्रधार, महान अर्थशास्त्री और सही मायनों में राजनीति के भद्र पुरुष डॉ. मनमोहन सिंह, जिन्होंने अपनी सादगी, विद्वता और धैर्य से राजनीति को एक नई दिशा दी, का जाना राष्ट्र के लिए वाकई एक अपूरणीय क्षति है। 1990 के दशक की शुरुआत में यह तत्कालीन वित्त मंत्री मनमोहन सिंह की नीतियां ही थीं, जिन्होंने देश की अर्थव्यवस्था को आकार दिया। यह गहरे वित्तीय संकट का वही दौर था, जब विदेशी मुद्रा भंडार तकरीबन खत्म हो गया था और देश आर्थिक पतन के कगार पर खड़ा था। उनके द्वारा किए गए ऐतिहासिक सुधारों ने दशकों से चले आ रहे प्रतिबंधात्मक नियंत्रणों को तो खत्म किया ही, अर्थव्यवस्था को भी वैश्विक बाजारों के लिए खोल दिया। उन्होंने सेबी के गठन सहित विभिन्न संस्थागत सुधारों का भी नेतृत्व किया, ताकि शेयर बाजार में जवाबदेही सुनिश्चित हो सके। प्रधानमंत्री के रूप में भी, उनके कार्यकाल में भारत सशक्त विकास दर के साथ आगे बढ़ा। अगर देश 2008 की वैश्विक मंदी से कामयाबीपूर्वक उबर सका, तो इसके पीछे भी उनकी आर्थिक दूरदर्शिता ही थी। बतौर प्रधानमंत्री उनके कई दूरगामी निर्णय जैसे सरकार से जानकारी मांगने का अधिकार, न्यूनतम सौ दिनों की ग्रामीण रोजगार योजना, 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा के अधिकार इत्यादि ऐसे रहे, जो वर्तमान में भी भारतीय लोकतंत्र को मजबूती दे रहे हैं। मनमोहन सिंह योजना आयोग के उपाध्यक्ष रहे, तो केंद्रीय बैंक का भी उन्होंने नेतृत्व किया। एशियाई विकास बैंक से लेकर आईएमएफ को भी अपनी सेवाएं दीं। देश-विदेश के प्रतिष्ठित शैक्षिक संस्थानों में अध्यापन करने की वजह से ही शायद नौकरशाही व राजनीति के उच्चस्थ पदों पर बैठने के बावजूद उनमें हमेशा एक शिक्षक जैसी सहजता दिखी। वर्तमान दौर में जब राजनेता एक-दूसरे पर लांछन लगाने का कोई मौका नहीं छोड़ रहे, तब देश की राजनीति में मनमोहन सिंह जैसे भद्र और साफ-सुथरी छवि वाले नेता की कमी निस्संदेह खलेगी। वह विद्वान अर्थशास्त्री थे, लेकिन खांटी राजनेता नहीं। लेकिन, अपने कार्यकाल के अंतिम दिनों में राज्यसभा में वेल चेयर पर पहुंचना, राजनीति को लेकर उनकी गहरी प्रतिबद्धता को ही दिखाता है, जिसकी तारीफ खुद प्रधानमंत्री मोदी ने भी की। अर्थव्यवस्था के महानतम वास्तुकारों में से एक का जाना वाकई शोकाकुल करने वाला है, लेकिन उनके शब्द 'भारत अब पूरी तरह से जाग चुका है। हम उबरेंगे, हम जीतेंगे', आने वाली पीढ़ियों को भी प्रेरणा देते रहेंगे।

अजब यकीन-सा उस शख्स के गुमान में था

आर्थिक पुनर्जीवन के पुरोधा डॉ. मनमोहन सिंह भारतीय राजनीति की रुपया ग्रंथि के केंद्र में रहे हैं। इंदिरा गांधी द्वारा किए गए रुपये के अवमूल्यन के नतीजे से 1991 में नरसिंह राव घबराए हुए थे, पर वह डॉ. सिंह ही थे, जिन्होंने 72 घंटे में रुपये के दो ऐतिहासिक अवमूल्यन कराकर भारतीय अर्थव्यवस्था को नई गति दी।

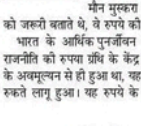

अंशुमान तिवारी
वरिष्ठ लेखक-पत्रकार

अमेरिकी डॉलर की कीमत अब 85 रुपये के करीब है। रुपये की यह ढलान रुकती नहीं दिखती। करेंसी की कीमत घटने-बढ़ने के अपने आर्थिक कारण हैं, लेकिन भारतीय राजनीति के लिए रुपये से रिश्ता बड़ा अतरंगी है। रुपये की गिरावट पर जो राष्ट्रवादी आग्रह कभी हुंकारते थे, वे आज मौन मुस्कुरा रहे हैं और जो उस वक्त रुपये के अवमूल्यन को जरूरी बताते थे, वे रुपये की उम्र का हिसाब बता रहे हैं।

भारत के आर्थिक पुनर्जीवन के पुरोधा डॉ. मनमोहन सिंह इस भारतीय राजनीति की रुपया ग्रंथि के केंद्र में रहे हैं। आर्थिक सुधारों का उद्घाटन रुपये के अवमूल्यन से ही हुआ था, यह डॉ. सिंह का ऐसा साहसी फैसला, जो रुकते-रुकते लागू हुआ। यह रुपये के एक नहीं, बल्कि दो अवमूल्यन थे, जिन्होंने भारत की आर्थिक किस्मत ही बदल दी। 1991 से आज तक डॉ. मनमोहन सिंह के अलावा भारत की शेष सियासत रुपये की कीमत को लेकर अजीब बौखलाहट में रही है। रुपये का अवमूल्यन डॉ. मनमोहन सिंह का सबसे बड़ा साहस था। मगर इसे समझने के लिए आजादी के बाद भारतीय रुपये के मूल्य निर्धारण के सनसनीखेज रोमांच से गुजरना होगा।

1947 में जाने तक अंग्रेज भारत में मौद्रिक प्रणाली बना चुके थे, जिसकी शुरुआत 1835 में क्वाइनेज कानून के लागू होने से हुई थी। आजादी के वक्त भारतीय रिजर्व बैंक विनिमय दर तय करने के लिए 'पार वैल्यू' प्रणाली का पालन कर रहा था। इस प्रणाली में मुद्रा की कीमत किसी दूसरी करेंसी या सोने से तय की जाती थी, रुपये की कीमत ब्रिटिश पाउंड पर आधारित थी, पाउंड की कीमत अमेरिकी डॉलर और डॉलर की सोने पर। वह गोल्ड स्टैंडर्ड का दौर था।

रिजर्व बैंक के आधिकारिक दस्तावेज के मुताबिक 1947 में करीब 4.15 ग्रेन सोना यानी लगभग 0.27 ग्राम सोना एक रुपये के बराबर था। तब एक ब्रिटिश पाउंड में तेरह रुपये आते थे। एक पाउंड करीब 2.73 अमेरिकी डॉलर का था। यानी एक डॉलर लगभग 4.76 रुपये का था। 1949 में रुपये का पहला तकनीकी अवमूल्यन हुआ। 1966 में पहला बड़ा नीतिगत अवमूल्यन, जो इंदिरा गांधी ने किया था। इनके बाद रुपया-सोना विनिमय दर क्रमशः 2.88 ग्रेंस और

1.83 ग्रेंस रह गई। पूरी दुनिया में जोरदार हंगामे और अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन व फ्रांस के टकराव के बाद 1971 में गोल्ड स्टैंडर्ड विदा हुआ, लेकिन इससे भारत की मौद्रिक नीति में बहुत बड़ा तूफान आ चुका था।

आजादी के बाद भारत का निर्यात न के बराबर था। विदेशी मुद्रा के नाम पर बस विदेशी सहायता आती थी। व्यापार घाटा ऊंचा था। 1962 में चीन से युद्ध के बाद आर्थिक हालात खराब हो रहे थे। राजकोषीय घाटे में बढ़ोतरी बड़ी मुसीबत थी। 1965 में पाकिस्तान से युद्ध के कारण रक्षा खर्च बेतहाशा बढ़ा। 1965 और 1966 में सूखा भी पड़ा। लाल बहादुर शास्त्री के निधन के बाद इंदिरा गांधी को प्रधानमंत्री बने कुछ ही महीने बीते थे। उन्हें उम्मीद थी कि मौद्रिक नीति बदलने से व्यापार घाटा कम होगा, तो विदेशी पूंजी भी आने लगेगी। वह छह जून, 1966 का दिन था, इंदिरा गांधी ने रुपये का 35.5 फीसदी अवमूल्यन कर दिया। अर्थव्यवस्था इस भूकंप के लिए तैयार नहीं थी। अंतरराष्ट्रीय सहयोग नहीं मिला। महंगाई बढ़ती चली गई। रिजर्व बैंक ने मौद्रिक नुकसान कम करने की कोशिश की। इधर, 1971 में गोल्ड स्टैंडर्ड खत्म हो गया। रुपये की कीमत ब्रिटिश पौंड से तय होती थी। दुनिया भर की मुद्राओं में भारी उतार-चढ़ाव हुए। भारतीय रिजर्व बैंक ने कुछ प्रमुख मुद्राओं का एक समूह बनाया, जिसके आधार पर रुपये की कीमत तय की जाती थी। यह प्रणाली 1975 से लागू हुई।

1966 का अवमूल्यन इंदिरा गांधी की साख पर भारी पड़ा था। इसके बाद आर्थिक नीतियों की दिशा पलट गई। लाइसेंस परमिट राज आ गया। एमआरटीपी एक्ट बना। निजी बैंकों में जमा धन को जनता तक पहुंचाने के वादे के साथ बैंकों का राष्ट्रीयकरण हुआ। पर भारतीय अर्थव्यवस्था अपने खोल में सिमटकर बुरी तरह पिछड़ गई। इसके खौफनाक तजुर्बे के बाद रुपये की विनिमय दर भारतीय राजनीति सबसे वर्जित विषय बन गई। 1991 में विदेशी मुद्रा भंडार खत्म हो रहा था। भुगतान संतुलन का संकट था। 21 जून, 1991 को पीवी नरसिंह राव प्रधानमंत्री बने। डॉ. मनमोहन सिंह वित्त मंत्री बने। डॉ. सिंह मुतमइन थे कि रुपये का अवमूल्यन किए बिना आर्थिक सुधारों का नारियल नहीं फूटेगा। इधर, रुपये के अवमूल्यन को लेकर प्रधानमंत्री राव असहज थे या यों कहें 1966 में इंदिरा गांधी के अवमूल्यन की असफलता ने उन्हें डरा रखा था। 1991 के विदेशी मुद्रा संकट के बीच भारत के पास विकल्प सीमित थे। लंबी मशक्कत के बाद वित्त मंत्री डॉ. सिंह ने प्रधानमंत्री राव को रुपये के लगातार दो अवमूल्यनों पर राजी कर लिया। पहला एक जुलाई और दूसरा तीन जुलाई 1991 को होना था। रुपये की कीमत क्रमशः 7 व 9 फीसदी घटाई जानी थी। पहला अवमूल्यन तो ठीक-ठाक हो गया, पर प्रधानमंत्री राव इससे इतना डर गए कि 3 जुलाई की सुबह उन्होंने वित्त मंत्री डॉ. सिंह को बुला लिया। तत्कालीन मंत्री जयराम रमेश की किताब में इस किस्से का जिक्र है कि प्रधानमंत्री राव ने वित्त मंत्री डॉ. सिंह को निर्देश दिया कि अब दूसरा अवमूल्यन नहीं होगा।

डॉ. सिंह ने समझाने की भरसक कोशिश की, पर प्रधानमंत्री सहज नहीं हुए। अंततः प्रधानमंत्री के निर्देश पर तीन जुलाई को सुबह 9:30 बजे डॉ. सिंह ने रिजर्व बैंक के तत्कालीन गवर्नर डॉ. सी. रंगराजन को फोन किया, ताकि अगला अवमूल्यन रोका जा सके, लेकिन तब तक देर हो गई थी। रिजर्व बैंक के पास दो अवमूल्यनों का आदेश पहले ही पहुंच चुका था। गवर्नर ने डॉ. सिंह को बताया कि सुबह नौ बजे रुपये के दूसरे और पहले से बड़े अवमूल्यन को लागू किया जा चुका है। डॉ. सिंह ने राहत की सांस ली और प्रधानमंत्री को फैसला सूचित कर दिया। उस वक्त तक यह रुपये का सबसे बड़ा नीतिगत अवमूल्यन था, वह भी सिर्फ 72 घंटों में। इस फैसले ने भारत को बदल दिया। अर्थव्यवस्था ने फिर पीछे पलटकर नहीं देखा। रुपये के अवमूल्यन के बाद संसद में लंबे समय तक प्रधानमंत्री राव व वित्त मंत्री डॉ. सिंह को अपनी ही पार्टी और विपक्ष की लानतें झेलनी पड़ी थीं। 1991 में रुपये के अवमूल्यन के बाद राज्यसभा में एक बहस हुई, जिसमें डॉ. सिंह का हस्तक्षेप ऐतिहासिक दस्तावेज है, उन्होंने कहा था कि मुद्रा विनिमय दर केवल एक मूल्य मात्र है, जिसका प्रतिस्पर्धात्मक होना जरूरी है। अंग्रेज भारत को प्राथमिक उत्पादों का निर्यातक बनाकर रखना चाहते थे, औद्योगिक उत्पादों का निर्यातक नहीं। इसलिए घरेलू मुद्रा को हमेशा ताकतवर रखने के संस्कार भर दिए गए। रुपये का संतुलित अवमूल्यन हमें प्रतिस्पर्धात्मक बनाता है, तो वह राष्ट्र विरोधी कैसे हो जाएगा? आज टूटते रुपये के बीच डॉ. मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए भाजपा और कांग्रेस रुपये के अवमूल्यन को लेकर अपने-अपने राजनीतिक अतीत याद करना चाहेंगी? *'अजब यकीन-सा उस शख्स के गुमान में था, वो बात करते हुए भी नई उड़ान में था।'* -ताबिश कमाल, ...अलविदा डॉक्टर साहब

edit@amarujala.com

रोशनी की लकीर

इतना भी बुरा नहीं रहा 2024

वाशिंगटन पोस्ट लाया है 2024 की वे उपलब्धियां, जिन पर आप शायद गौर नहीं कर पाए हों, और जो बनेंगी 2025 के लिए सबसे बड़ी प्रेरणा।

आपको शायद ऐसा लगता हो कि 2024 भी 2023 की तरह एक मुश्किल साल रहा। पश्चिम एशिया, यूक्रेन और सूडान में विनाशकारी युद्ध जारी हैं। अमेरिका ने भयानक चक्रवाती तूफान देखा, तो विश्व के तमाम देशों ने चरम मौसमी घटनाओं का सितम झेला, जिससे लोगों को चिंता और निराशा का भी एहसास कराया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि वर्ष 2024 पृथ्वी पर सबसे गर्म वर्ष के रूप में रिकॉर्ड होगा। पर यह 2024 की पूरी कहानी नहीं है।

सफल कोशिशों का साल : इस वर्ष चाड एक उपेक्षित उष्णकटिबंधीय मक्खी जनित बीमारी ल्यूमन अफ्रीकन ट्रिपैनोसोमियासिस (एचएटी) को खत्म करने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्यता प्राप्त 51वां देश बन गया है। चाड ने समर्पित प्रयासों से इसका खात्मा कर दिया। कैंसर के खिलाफ जंग में मानवता को पहली कामयाबी इस साल तब मिली, जब रूस ने इसके इलाज के लिए टीके की खोज का दावा किया। अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) ने कई जीवनरक्षक दवाओं को मंजूरी प्रदान की है।

आने वाला कल
TRENDS 2025
प्रेरणा

विक्टोरिया बिसेट

शुरुआत तो करें : 2024 में एक नया अध्यायन भी हुआ है, जो बताता है कि छोटी-छोटी शुरुआतें बड़ा अंतर ला सकती हैं। उदाहरण के लिए प्रतिदिन पांच मिनट का अतिरिक्त व्यायाम ब्लड प्रेशर को ठीक कर सकता है। खाना बनाते वक्त घूमना, आपकी स्वस्थ उम्र की संभावना को बढ़ा सकता है। वहीं, दयालुता के छोटे-छोटे कार्य मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद फायदेमंद हो सकते हैं।

वर्ष की प्रेरणा : इस वर्ष पेरिस ओलंपिक और पैरालंपिक में कई रिकॉर्ड बने, पर ब्रिटिश कोलंबिया की 99 वर्षीय बेट्टी ब्रूसेल को तैराकी के तीन विश्व रिकॉर्ड बनाते देखना और वर्जीनिया हिस्लप्पी को 105 वर्ष की उम्र में स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी से स्नातकोत्तर की डिग्री हासिल करते देखना वाकई वर्ष की प्रेरणा रहे।

संकट में उम्मीद : बदलती जलवायु के खतरों से इन्कार नहीं किया जा सकता, लेकिन कुछ अच्छे संकेत भी मिले हैं। ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले हानिकारक रसायनों को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने पर करीब 30 साल बाद सभी देशों ने सहमति जताई। नॉर्वे ऐसा पहला देश बन गया, जहां ज्यादातर वाहन गैस के बजाय बिजली से चलते हैं।

हौसले की कहानी : अमेरिका में आए भयानक बवंडर में एक दिल छू लेने वाली तस्वीर भी सामने आई, जब तूफान हेलेन की बाढ़ में एक पिता ने 27 मील दूर चलकर अपनी बेटी को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। बाढ़ में फंसकर एक नर्स और एकल मां ने जब अपना घर और सारी संपत्ति खो दी, तब स्थानीय समुदाय ने अस्थायी आवास ढूंढने और नया घर खरीदने के लिए 2,06,000 डॉलर से अधिक जुटाए।

पर्यावरण से संकेत : इक्वेरियन लिंक्स नाम की लुप्तप्राय यूरोपीय जंगली बिल्ली को विशेषज्ञों ने संरक्षित कर लिया है। वहीं, हवाईयन कौवे, जिन्हें 'अलाला' भी कहते हैं, वर्षों तक कैद रहने के बाद अब उड़ने लगे हैं। 2024 में कई खगोलीय घटनाएं हुईं। अमेरिका से लेकर दक्षिण अफ्रीका तक एक 'घरम' भू-चुंबकीय तूफान के कारण, 500 वर्षों में ओरोरा के सबसे जीवंत प्रदर्शनों में से एक का अनुभव किया गया।

अनंत आशा

हर निराशा की एक सीमा होती है, लेकिन आशा अनंत है। - मार्टिन लूथर किंग, जूनियर

जिज्ञासा सबसे बड़ी प्रेरणा है

हममें से किसी के लिए भी जीवन आसान नहीं है। लेकिन उससे क्या? हमें दृढ़ता और खुद पर विश्वास होना चाहिए कि किसी भी चीज को पाने की क्षमता हमारे अंदर है और उसे हम एक दिन प्राप्त कर ही लेंगे।

वर्ष 1903 के अंत में मुझे और मेरे पति को रेडियोधर्मिता और नए रेडियोधर्मी तत्वों की खोज के लिए नोबेल पुरस्कार दिया गया। इस आयोजन से हमारे काम का प्रचार-प्रसार बहुत बढ़ गया और कुछ समय तक शांति नहीं रही। क्योंकि हर दिन आगंतुकों द्वारा व्याख्यानों और लेखों की मांग लगातार बढ़ती रही।

मैरी क्यूरी

मैं छोटी उम्र से ही प्राकृतिक दुनिया के रहस्यों पर मोहित हो गई थी। मेरे सामने रुकावट के तौर पर सामाजिक बाधाएं थीं। इसके बावजूद, मैंने इन बाधाओं को खुद को परिभाषित करने से मना कर दिया और जहां भी संभव हो, ज्ञान की तलाश की, और अध्ययन करते हुए मुझसे जो भी अपेक्षा की जाती थी, उसकी सीमाओं को पार किया। इस यात्रा ने मुझे एक महत्वपूर्ण सबक सिखाया कि जिज्ञासा नवाचार की प्रेरक शक्ति है। हममें से किसी के लिए भी जीवन आसान नहीं है। लेकिन उससे क्या? हमें दृढ़ता और सबसे बढ़कर खुद पर भरोसा होना चाहिए। खुद पर विश्वास होना चाहिए कि हमारे अंदर किसी भी चीज को पाने की क्षमता है और उसे हम एक दिन प्राप्त कर लेंगे। मुझे लगता है कि बगैर डरे अपने सपनों की ओर बढ़ते रहना ही जीवन है। जीवन में किसी भी चीज से हमें नहीं डरना चाहिए, बल्कि उसे समझना जरूरी है, क्योंकि अब समय है, ज्यादा समझने का, ताकि हम कम डरें। जीवनचक्र बहुत अजीब है, आप एक पल में खुश होते हैं, तो उसी क्षण दुखी भी हो जाते हैं।

जीवन धारा

साल 1906 में जब हम उस पुरानी प्रयोगशाला को छोड़ने ही वाले थे, जहां हम बहुत खुश थे, तभी भयानक आपदा आई, जिसने मेरे पति को मुझसे दूर कर दिया। मेरे लिए यह शब्दों में बताना असंभव है कि मेरे करीबी और सबसे अच्छे दोस्त के चले जाने से जीवन में क्या प्रभाव पड़ा। इस आघात से मैं टूट गई, मुझे लगा कि मैं भविष्य का सामना करने में सक्षम नहीं हूं। कुछ भी हो जाए, मैं नहीं भूल सकती कि मेरे पति मुझसे कहा करते थे कि जीवन में कुछ भी हो अपने काम को जारी रखना, भले ही मैं तुमसे दूर रहूं। उन्होंने लोगों के बारे में कम और विचारों के बारे में ज्यादा जिज्ञासु बने रहने को भी कहा था। उस शनिवार की सुबह आखिरी बार अपने पति को ताबूत में देखा। परिवार के लोगों ने कब्र को भर दिया और उस पर फूलों के ढेर लगा दिए। सब कुछ खत्म हो गया, मेरे लिए भी यह जीवन के अंत जैसा था। लेकिन मेरे पति के विचार हमेशा मेरे साथ रहे।

भारत 2025 में वैश्विक नवाचार का पावर हाउस होगा

बीते दशक में भारत स्टार्टअप और नवाचार के लिए वैश्विक हब बनकर उभरा है। बढ़ते पूंजी प्रवाह, वैश्विक पहुंच के विस्तार और तकनीकी उन्नति के साथ देश 2025 में भी परिवर्तनकारी विकास के लिए तैयार है।

रवि शर्मा
आईआईआईटी ऊना व नागपुर के बोर्ड ऑफ गवर्नर्स के चेयरमैन

बीते दशक में भारत स्टार्टअप और नवाचार के लिए वैश्विक हब बनकर उभरा है। बढ़ते पूंजी प्रवाह, वैश्विक पहुंच के विस्तार और तकनीकी उन्नति के साथ देश 2025 में भी परिवर्तनकारी विकास के लिए तैयार है। हालांकि, इस गति को बरकरार रखने के लिए व्यवस्थागत चुनौतियों, जैसे-सीमित शिक्षा-उद्योग सहयोग और कमजोर संस्कृति का समाधान किया जाना जरूरी है।

पिछले दशक में भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम में उल्लेखनीय विकास हुआ है। वर्ष 2014 में पांच सौ से कम स्टार्टअप को मंजूरी मिली थी। वहीं 2023 तक यह संख्या बढ़कर 90 हजार तक पहुंच गई, जिनमें सौ से ज्यादा यूनिकॉर्न शामिल हैं। भारत अब अमेरिका और चीन के बाद दुनिया के तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप इकोसिस्टम में शामिल हो गया है। स्टार्टअप का विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार हुआ है। शुरुआती क्षेत्रों में ई-कॉमर्स और फिनटेक (जैसे फ्लिपकार्ट व पेटीएम) पर फोकस था। हाल ही में एआई, ब्लॉकचेन और रोबोटिक्स का लाभ उठाने वाले डीप-टेक स्टार्टअप के साथ-साथ हेल्थटेक, एग्रीटेक, एडटेक और क्लाइमेट टेक ने भी गति पकड़ ली है।

भारतीय स्टार्टअप अब अंतरराष्ट्रीय बाजारों को लक्षित कर आगे बढ़ रहे हैं। वार्षिक स्टार्टअप फंडिंग 2014 के दो अरब डॉलर से बढ़कर 2023 में 25 अरब डॉलर से अधिक हो गई। पिछले दशक में संचयी फंडिंग 150 अरब डॉलर को पार कर गई है। फिनटेक सालाना आठ अरब डॉलर आकर्षित करता है, इसके बाद ई-कॉमर्स, एडटेक और हेल्थटेक का नंबर है। जलवायु तकनीक तेजी से बढ़ रही है, फंडिंग 35 फीसदी चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रही है।

आने वाला कल
TRENDS 2025
स्टार्टअप/व्यवसाय

उद्योग- 2025 : क्लाउड कंप्यूटिंग और एआई द्वारा संचालित आईटी निर्यात 200 अरब डॉलर से अधिक होने का अनुमान है। हेल्थकेयर बाजार के 372 अरब डॉलर तक बढ़ने की उम्मीद है, जिसमें टेलीमेडिसिन और प्रिसिजन मेडिसिन अग्रणी हैं। सौर और पवन ऊर्जा में निवेश से 2030 तक भारत के 500 गीगावाट लक्ष्य की ओर विकास होगा। डिजिटल भुगतान अपनाने और ग्रामीण विस्तार के कारण बाजार का आकार 200 अरब डॉलर से अधिक होने का अनुमान है। उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (पीएलआई) योजनाएं इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मा जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा देंगी।

नए अवसर, नई उम्मीदें : एआई, आईओटी और ब्लॉकचेन स्मार्ट सिटी, लॉजिस्टिक्स और हेल्थकेयर जैसे क्षेत्रों में विकास को बढ़ावा देंगे। फ्रेजवर्क्स और ब्राउजरस्टैक जैसी सफलता की कहानियों के साथ भारतीय स्टार्टअप तेजी से वैश्विक अवसरों की खोज कर रहे हैं। डिजिटल इंडिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020, जैसी नीतियां नवाचार, वित्त पोषण व सरलीकृत अनुपालन के लिए रूपरेखा प्रदान करती हैं। हालांकि कुछ चुनौतियां भी हैं। शिक्षा जगत और उद्योग के बीच सहयोग कमजोर है, जो नवाचार को दबा रहा है। अमेरिका के विपरीत, भारतीय विश्वविद्यालय शायद ही कभी व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य समाधान पेश करते हैं। भारत अपनी जीडीपी का केवल 0.65 फीसदी अनुसंधान एवं विकास पर खर्च करता है, जबकि अमेरिका का 2.8 फीसदी है। वहीं, अमेरिका में 25 फीसदी से अधिक स्टार्टअप अकादमिक अनुसंधान से उत्पन्न होते हैं, जबकि भारत में मजबूत प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तंत्र का अभाव है। एनईपी 2020 के अंतर्गत अनुसंधान केंद्रित शिक्षा को प्रोत्साहित करना और राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन की स्थापना करना और इन्क्यूबेशन केंद्रों व विश्वविद्यालय-उद्योग भागीदारी को बढ़ावा देना शामिल है। वहीं, हमारे यहां उद्यम के विफल होने को कलंक के रूप में देखा जाता है, जबकि सिलिकॉन वैली में इसका जश्न मनाया जाता है। इसके अलावा, प्रतिभाशाली नवप्रवर्तक बेहतर अवसरों की तलाश में विदेश चले जाते हैं। ऐसे में, शिक्षा-उद्योग सहयोग को मजबूत करने की जरूरत है। संयुक्त शोध प्रयोगशालाएं स्थापित हों, विश्वविद्यालय संचालित स्टार्टअप को प्रोत्साहन मिले। शोध एवं विकास के लिए फंडिंग बढ़ाएं। ग्रामीण क्षेत्रों पर केंद्रित स्टार्टअप को प्रोत्साहन मिले। कुल मिलाकर, भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम तकनीकी प्रगति, वैश्विक विस्तार व सरकारी समर्थन से प्रेरित होकर 2025 तक पर्याप्त वृद्धि के लिए तैयार है। नवाचार संस्कृति, अकादमिक-उद्योग साझेदारी को और वैश्विक बाजार पहुंच का विस्तार करके भारत 2025 में वैश्विक नवाचार पावरहाउस में बदल सकता है।

अमेरिका से तुलना

अमेरिका सालाना 300 अरब डॉलर आकर्षित करता है, जो भारत से 12 गुना अधिक है। लेकिन, भारत की स्टार्टअप फंडिंग अमेरिका की 8-10 फीसदी की तुलना में 25-30 फीसदी की तेज दर से बढ़ी है। साथ ही अमेरिका डीप-टेक और जीवन विज्ञान में उत्कृष्ट है, जबकि भारत फिनटेक और उपभोक्ता-उन्मुख क्षेत्रों में हावी है।

कल्पमेधा

पराधीन रहना सबसे बड़ी कायरता है। वह मनुष्य हमेशा दुखी रहता है और आसानी से अपना कल्याण नहीं कर सकता, जो दूसरों पर आश्रित हो।

- सुभाषचंद्र बोस

सौम्यता की मिसाल

सादगी, सौम्यता, मितभाषिता और शांत स्वभाव उनके व्यक्तित्व की खासियत थी। उन्हें सदा सच्चाई पर यकीन रहा। इसीलिए उनका व्यक्तिगत जीवन हमेशा बेदाग रहा। वे व्यावहारिक रूप से जमीनी राजनेता नहीं थे, मगर देश को समृद्धि के शिखर पर पहुंचाने के प्रति उनका समर्पण अभूतपूर्व था। वे जीते-जी देश की आर्थिक स्थितियों को लेकर चिंतित देखे जाते रहे। वे अपने को इसके लिए देश का कर्जदार मानते रहे कि विभाजन के बाद एक बेघर हुए आदमी को सरकार के शीर्ष स्तर तक पहुंचाया। सामान्य कपड़ा व्यवसायी परिवार में पैदा हुए मनमोहन सिंह ने अपनी मेहनत, लगन और प्रतिभा के बल पर कैंब्रिज और आक्सफोर्ड जैसे दुनिया के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में दाखिला लेकर अर्थशास्त्र में ऊंची डिग्रियां हासिल कीं। फिर वे वाणिज्य मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार, वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार, योजना आयोग के सदस्य के रूप में आर्थिक नीतियों के मामलों में सरकार का सहयोग करते रहे। भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में अपनी सराहनीय सेवाएं दीं। उनके कार्यों की पहचान सबसे अधिक तब हुई जब वे प्रधानमंत्री के आर्थिक मामलों के सलाहकार नियुक्त हुए।

वह ऐसा दौर था, जब भारत की आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई थी। विदेशी मुद्रा भंडार काफी खाली हो चुका था। वह पीवी नरसिंहराव का कार्यकाल था। उनसे पहले चंद्रशेखर के कार्यकाल में सोना गिरवी रख कर उर्वरक आदि का इंतजाम करना पड़ा था। ऐसे वक्त में मनमोहन सिंह ने आर्थिक उदारीकरण का सुझाव दिया था। लाइसेंस राज खत्म करने और करों में छूट जैसे उपाय आजमाए गए। उसका नतीजा यह हुआ कि आर्थिक विकास दर कुलाचें भरने लगी। विदेशी निवेश आना शुरू हो गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियां भारत का रुख करने लगीं। इस तरह न केवल महंगाई पर रोक लगी और प्रति व्यक्ति आय बढ़ी, बल्कि विदेशी मुद्रा भंडार भी भरना शुरू हो गया। फिर उन्हें वित्तमंत्री बनाया गया और निष्ठा के साथ निरंतर वे आर्थिक सुधारों पर काम करते रहे। यह कहने में किसी को संकोच नहीं कि उन्होंने वित्तमंत्री रहते जो आर्थिक ढांचा तैयार किया था, उसी पर विकास की मीनारें आगे भी खड़ी होती रहीं। बीच में वे जरूर सात-आठ वर्षों तक सरकार से बाहर रहे, पर राज्यसभा में विपक्ष के नेता के तौर पर आर्थिक नीतियों को लेकर अपनी सलाह हमेशा देते रहे। फिर प्रधानमंत्री बने, तो दो पूरे कार्यकाल तक उन्होंने देश के आर्थिक ढांचे को इस कदर मजबूत बना दिया कि मंदी के हिचकोले उसमें दरार नहीं डाल सके।

हालांकि प्रधानमंत्री के रूप में उनका दूसरा कार्यकाल विवादों से भरा रहा। उनके कई मंत्रियों पर घोटालों के आरोप लगे, उन्हें सबसे कमजोर प्रधानमंत्री कहा जाने लगा। मगर कभी भी वे सच्चाई से डिगे नहीं। बेशक वे कम बोलते थे और लोगों को लगता था कि वे साहसी नहीं हैं, मगर उन्होंने अपनी सरकार को दांव पर लगा कर जिस तरह अमेरिका के साथ परमाणु करार किया, वह उनके साहस का बड़ा उदाहरण था। फिर उन्होंने सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, महात्मा गांधी रोजगार गारंटी योजना, भोजन का अधिकार और अंतिम दिनों में लोकपाल जैसे कानून बना कर साबित कर दिया कि उनकी निष्ठा आम लोगों के जीवन में बेहतरी और शासन-प्रशासन में पारदर्शिता लाने के प्रति है। यही वजह है कि आज उनके जाने पर वे लोग भी उनके कार्यों की प्रशंसा कर रहे हैं, जो कभी उनके आलोचक हुआ करते थे।

चीन की चाल

भारत के प्रति चीन का रवैया पहले ही संदेहों के घेरे में रहा है। चीन अपने हित में और विकास के नाम पर जो फैसले करता है, वह कई बार पड़ोसी देशों के लिए जोखिम का वाहक बन जाता है। यह आशंका खासकर इसलिए भी पैदा होती है, क्योंकि पिछले कुछ समय से सीमावर्ती इलाकों में चीन की गतिविधियां उसके भीतर छिपी विस्तारवाद की भूख को दर्शाती हैं। यही वजह है कि अब चीन अपनी विकास यात्रा को आगे ले जाते हुए ऊर्जा उत्पादन के मकसद से ब्रह्मपुत्र नदी पर बांध बनाने जा रहा है, तो उसके इस फैसले से भारत और बांग्लादेश की चिंता बढ़ गई है। गौरतलब है कि चीन ने तिब्बत पठार के पूर्वी हिस्से में दुनिया का सबसे बड़ा बांध बनाने की घोषणा की है। चीन यह बांध जिस यारलुंग जांगबो नदी पर बनाने जा रहा है, उसे भारत में ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है। माना जा रहा है कि इस बांध के जरिए चीन हर वर्ष तीन सौ अरब किलोवाट प्रतिघंटे बिजली पैदा करेगा।

प्रथम दृष्टया यह चीन के अपने दायरे में की जा रही विकास की एक गतिविधि है, लेकिन इसके नतीजे में भारत और बांग्लादेश के सामने कई तरह के जोखिम और अन्य चुनौतियां पैदा हो सकती हैं। दरअसल, यारलुंग जांगबो नदी भारत में अरुणाचल प्रदेश की ओर मुड़ती है। अगर बांध बनने के बाद चीन किन्हीं स्थितियों में या फिर भू-राजनीतिक तनाव उभरने के बाद प्रतिक्रिया स्वरूप इसके पानी को नियंत्रित करता है तो इसका सीधा असर भारत में पानी की आपूर्ति पर पड़ सकता है। यानी एक तरह से इससे चीन पर भारत की निर्भरता बढ़ जाएगी। इसी तरह, इस बांध से अगर बेलगाम तरीके से पानी छोड़ा जाएगा तो भारत के कई इलाकों में अचानक और भयावह बाढ़ से तबाही मच सकती है। भारत की इस चिंता का विस्तार बांग्लादेश में होता है, क्योंकि इसी तरह का प्रभाव वहां भी पड़ेगा। यों चीन अपनी इस योजना का बचाव करते हुए इससे उपजी चिंताओं का समाधान कर लिए जाने की बात कह रहा है, लेकिन उसके इस फैसले से भारत के सामने लगातार आशंका बनी रहेगी।

क्वांटम कंप्यूटर में क्रांतिकारी कदम

क्वांटम कंप्यूटर की क्षमता को देखते हुए इसके विकास में भारत समेत अनेक देश लगे हैं। यही वजह है कि आविष्कार से पहले इसकी क्षमताओं का मूल्यांकन कर लेने वाले देश इसके अनुसंधान पर बड़ी धनराशि खर्च कर रहे हैं।

प्रमोद भार्गव

गूगल ने इसी महीने 'विलो' नाम की क्वांटम चिप बना कर तकनीक के क्षेत्र में हलचल पैदा कर दी है। अत्यंत सूक्ष्म, महज चार वर्ग सेंटीमीटर की, यह चिप एक तरफ तो तीस वर्ष से भी ज्यादा पुरानी समस्या का हल खोजने में सक्षम है, वहीं यह पांच मिनट में ऐसे काम कर सकती है, जिन्हें करने में सबसे तेज सुपर कंप्यूटर को भी अरबों साल लग सकते हैं। इस चिप से कृत्रिम बुद्धि, फ्यूजन ऊर्जा तथा तारामंडल के ग्रह-नक्षत्रों का अध्ययन करने में मदद मिलेगी। मौसम और प्राकृतिक आपदाओं की सटीक भविष्यवाणी करने में सुविधा होगी। तकनीकी क्षेत्र में इस नवीन उपलब्धि की सभी जगह चर्चा है। एलन मस्क जैसे लोग इस उत्पाद को लेकर अचंभित हैं। इसलिए इसे 'सुपर ब्रेन' की संज्ञा दी जा रही है। 'विलो' चिप व्यावसायिक रूप में क्वांटम कंप्यूटिंग की नई दिशा तय करती हुई मील का पत्थर साबित होगी।

कुछ समय पहले तक असंभव-सी लगने वाली चीजें आज प्रौद्योगिकी की मदद से सरलता से परिणाम तक पहुंच रही हैं। एक समय संगणक के विकास ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव किया था। अब कृत्रिम बौद्धिकता यानी एआइ ने चिकित्सा से लेकर हथियारों के निर्माण तक हर क्षेत्र में कंप्यूटर और रोबोट के प्रयोग को नया आयाम दिया है। पारंपरिक कंप्यूटर की दुनिया में इस प्रगति के समांतर एक और अनुसंधान चल रहा है, जिसका नाम है 'क्वांटम कंप्यूटिंग' यानी अति-सूक्ष्मता का विज्ञान। भारत ने भी अब इस क्षेत्र में गति लाने का एलान कर दिया है। भौतिक-शास्त्र के क्वांटम सिद्धांत पर काम करने वाली इस कंप्यूटिंग में असीमित संभावनाएं देखी जा रही हैं। शोध के लिहाज से यह विषय किसी के लिए भी रुचि का हो सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार एक पूर्ण विकसित क्वांटम कंप्यूटर की क्षमता सुपर कंप्यूटर से भी ज्यादा आंकी जा रही है। इसकी शुरुआत के बाद भारतीय और पश्चिमी वैज्ञानिक मान रहे हैं कि भारतीय भाववादी सिद्धांत को जाने बिना अणु या कण में चेतना का आकलन नहीं किया जा सकता।

क्वांटम कंप्यूटिंग या यांत्रिकी एक लैटिन शब्द है। इसका अर्थ अतिसूक्ष्म कण है। इस विषय के अंतर्गत पदार्थ के अति सूक्ष्म कणों का अध्ययन किया जाता है। इनमें परमाणु, न्यूक्लियस तथा इलेक्ट्रान और प्रोटान सभी मौलिक कणों का अध्ययन शामिल है। इसमें इनके व्यवहार और उपयोगिता का अध्ययन किया जाता है। इस नवीन विषय के अध्ययन की नींव 1890 में वैज्ञानिक मैक्स प्लांक ने डाली थी। हालांकि इस समय तक वैज्ञानिक यह मान कर चल रहे थे कि भौतिकी में जितने नियमों का आविष्कार होना था, लगभग हो चुके हैं। ज्ञान ने पहले परमाणु को ही ऐसा सबसे सूक्ष्मतम कण बताया था, जिसने विश्व का निर्माण किया है। फिर आगे की खोज से ज्ञात हुआ कि परमाणु भी विभाजित हो सकता है। यानी उसे और अत्यंत सूक्ष्म कणों में बांटा जा सकता है। फलतः ये सूक्ष्म कण, इलेक्ट्रान, प्रोटान और न्यूट्रान नाम के लघुतम रूपों में सामने आए।

कण यांत्रिकी को भविष्य का कंप्यूटर माना जा रहा है। यह परमाणु

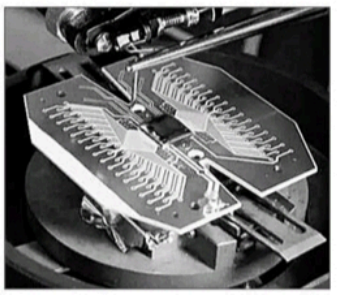

और उप परमाणु के स्तर पर ऊर्जा और पदार्थ की व्याख्या करती है। पारंपरिक कंप्यूटर बिट (अंश) पर काम करते हैं, वहीं क्वांटम कंप्यूटर में प्राथमिक इकाई क्यूबिट यानी कणांश होती है। पारंपरिक कंप्यूटर में प्रत्येक बिट का मूलाधार या मूल्य शून्य (0) और एक (एक) होता है।

> **क्वांटम यांत्रिकी का क्षेत्र जितना महत्वपूर्ण है, उस तुलना में इस क्षेत्र में कुशल युवाओं की संख्या बहुत कम है। एक अनुमान के मुताबिक दुनियाभर में एक हजार से भी कम लोग क्वांटम अभियांत्रिकी या भौतिकी में शोधरत हैं। अनेक कंपनियां योग्य और कल्पनाशील लोगों की तलाश में हैं। हैरानी इस पर भी है कि इस क्षेत्र में भविष्य की आपार संभावनाएं होने के बावजूद इस जटिल विषय की ओर युवा आकर्षित नहीं हो रहे हैं। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि कुशाग्र बुद्धि वाले जो विद्यार्थी कल्पनाशील विचार रखते हैं, उन्हें हतोत्साहित कर कंपनियों के पारंपरिक कार्यों में खपाया या सरकारी नौकरियों के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।**

कंप्यूटर इसी शून्य और एक की भाषा में कुंजी-पटल (की-बोर्ड) से दिए निर्देश को ग्रहण करके समझता और परिणाम देता है। वहीं क्वांटम की विलक्षणता यह होगी कि वह एक साथ शून्य और एक दोनों को ग्रहण कर लेगा। यह क्षमता क्यूबिट की वजह से विकसित होगी। नतीजतन, यह दो क्यूबिट में एक साथ चार मूल्य या परिणाम देने में सक्षम हो जाएगा। एक साथ चार परिणाम स्क्रीन पर प्रकट होने की इस अद्वितीय क्षमता के कारण इसकी गति पारंपरिक कंप्यूटर से बहुत ज्यादा होगी। उससे कहीं अधिक मात्रा में यह कंप्यूटर डेटा ग्रहण और सुरक्षित रखने में समर्थ होगा। इसीलिए दावा किया जा रहा है कि इसकी मदद से आंकड़ों और सूचनाओं को कम से कम समय में प्रसारित किया जा सकेगा। एआइ, जीपीटी चैट और चैटबाट जैसी तकनीक इसकी सहायता से और तेजी से गतिशील रहेंगी। मगर विलो चिप निर्माण की घोषणा ने सुपर कंप्यूटर के निर्माताओं को फिलहाल सकते में डाल दिया है, क्योंकि 'विलो चिप' की क्षमताएं ब्रह्मांड व्यास की तरह शक्तिशाली और असीमित बताई गई हैं।

क्वांटम कंप्यूटर की क्षमता को देखते हुए इसके विकास में भारत समेत अनेक देश लगे हैं। यही वजह है कि आविष्कार से पहले इसकी क्षमताओं का मूल्यांकन कर लेने वाले देश इसके अनुसंधान पर बड़ी धनराशि खर्च कर रहे हैं। चीन ने 15 अरब डालर खर्च करने की घोषणा की है। चीन की ई-कामर्स कंपनी अलीबाबा अलग से इस पर काम कर रही है। यूरोपीय संघ इस क्षेत्र में करीब आठ अरब डालर खर्च कर रहा है। भारत सरकार ने भी इस दिशा में शोध को बढ़ावा देने के लिए क्वांटम सूचना विज्ञान और प्रौद्योगिकी संस्था का गठन तो पहले ही कर लिया था, लेकिन केवल क्वांटम तकनीक पर नवीन शोध और आविष्कार के लिए 2023-24 से 2030-31 तक चलने वाले इस अभियान पर 6003.65 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। भारत इतनी बड़ी राशि पहली बार खर्च कर रहा है।

फिलहाल ऐसा माना जा रहा है कि क्वांटम यांत्रिकी का क्षेत्र जितना महत्त्वपूर्ण है, उस तुलना में इस क्षेत्र में कुशल युवाओं की संख्या बहुत कम है। एक अनुमान के मुताबिक दुनियाभर में एक हजार से भी कम लोग क्वांटम अभियांत्रिकी या भौतिकी में शोधरत हैं। अनेक कंपनियां योग्य और कल्पनाशील लोगों की तलाश में हैं। हैरानी इस पर भी है कि इस क्षेत्र में भविष्य की आपार संभावनाएं होने के बावजूद इस जटिल विषय की ओर युवा आकर्षित नहीं हो रहे हैं। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि कुशाग्र बुद्धि वाले जो विद्यार्थी कल्पनाशील विचार रखते हैं, उन्हें हतोत्साहित कर कंपनियों के पारंपरिक कार्यों में खपाया या सरकारी नौकरियों के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। इसका सामना क्वांटम भौतिकी के जनक मैक्स प्लांक को भी करना पड़ा था। जब प्लांक दसवीं कक्षा के छात्र थे, तब उन्होंने इस विषय पर काम करने का विचार अपने गुरु को दिया, तो उनका उत्तर था, 'भौतिकी में अब नए आविष्कारों की संभावनाएं खत्म हो चुकी हैं। इसमें जितना शोध और अनुसंधान होने की संभावनाएं थीं, वे पूरी हो चुकी हैं। अतः इस विचार को छोड़ दो।' मगर यह मैक्स की दृढ़ इच्छाशक्ति थी कि उन्होंने अपने विचार को शोध के रूप में आगे बढ़ाया और क्वांटम भौतिकी को जन्म दिया। अब यही क्वांटम भौतिकी कंप्यूटर की क्वांटम यांत्रिकी बन रही है। 'विलो' चिप को इस कंप्यूटर का सुपर ब्रेन माना जा रहा है। यह भी कहा जा रहा है कि इस क्षेत्र में जो देश बढ़-चढ़ कर नेतृत्व करेगा, वही दुनिया पर राज भी करेगा।

लौटना बचपन में

मोनिका भाम्भू कलाना

पिछले कुछ वर्षों के दौरान एक धारणा यह बनी है कि बचपन में खुशियां देने वाले माहौल को फिर से रचकर व्यक्ति दिमागी तनाव को कम कर सकता है। 'किडल्टिंग' या 'किडएडल्टिंग' शब्द के रूप में इसे बच्चों की तरह बेवजह कुछ भी करके खुश होने की प्रक्रिया के रूप में देखा-जाना गया। लेकिन इस पर सोचा जाना चाहिए कि क्या सचमुच स्मृति में जो अच्छा होता है, उसे कृत्रिम तरीके से फिर से रचकर वैसा ही फिर महसूस किया जाना संभव है? बच्चे के लिए कुछ भी करना इसलिए आनंदमय होता है कि वह न चीजों के प्रति और न स्वयं के प्रति ही उतना सचेत होता है। वह हर गतिविधि को करते वक्त उसमें पूरा शामिल होता है। उसका दिमाग और मन अलग-अलग खंडों में विभाजित नहीं होते। बचपन की ओर लौटने में एक बड़ा अवरोध है। वापस कहीं नहीं लौटा जा सकता, इसीलिए हर वापसी हास्यास्पद हो जाती है।

शुरुआत में जिस 'किडल्टिंग' को तनाव दूर करने की दवा के रूप में देखा गया, अब वह एक मर्ज में तब्दील होता जा रहा है। आधुनिक सभ्यता का यह बड़ा अभिशाप है कि यहां दूसरों के खोजे हुए फार्मूले फैशन बनने के अलावा व्यक्ति की कोई मदद नहीं कर पाते। ऐसे प्रयासों द्वारा स्मृति को जीवित करने का प्रयास उसे निष्क्रिय या मृत कर देना ही हो सकता है। स्मृति को जीने के लिए अपने माता-पिता, पड़ोसियों और बचपन के दोस्तों तक पहुंचना एक राह हो सकती है, लेकिन उस परिवेश को दुबारा निर्मित करने की कोशिश में कुछ हाथ नहीं आता। आज के युवा जिम्मेदारियों से बचने के लिए समय-समय पर प्रचारित किए जाने वाले ऐसे खेल खेलने के आदी हो रहे हैं। कोपेनहेगन विश्वविद्यालय में अपराध विज्ञान के प्रोफेसर और 'इंफैटिलाइज्ड' पुस्तक के लेखक कीथ हेवर्ड का कहना है कि युवा बच्चे ही बने रहना चाहते हैं... उनकी हरकतें और मानसिकता किशोरों जैसी हैं। आखिर वे ऐसा दिखाते-दिखाते उन्हीं चीजों में फंस जाते हैं।

> **दुनिया मेरे आगे**
>
> **यह ठीक है कि हर कार्य को आनंद के साथ करना हम बच्चों से सीख सकते हैं। बच्चों से सीखने के लिए और भी बहुत कुछ है, लेकिन इसके लिए बच्चों की प्रवृत्तियां अपनाना जरूरी नहीं है। एक उम्र में जो सच्चा और सहज लगता है, वही समय के साथ न बदलने पर जड़ लगने लगता है।**

हम जो भी करते हैं सब हमारे व्यक्तित्व का अंग बनता है, भले ही कितना छोटा क्यों न हो। किसी के कार्यों से ही उसकी मानसिकता का पता चलता है। आजकल युवा चलन के तौर पर बहुत जल्द नई चीजों को अपना लेते हैं। वे हर चीज के लिए अलग नाम रख लेते हैं। वे अमूमन इसे शौक या ऐसी आदत कहना पसंद करते हैं जिसमें सहजता महसूस होती है। मगर सहजता की तलाश ऐसी चीजों की ओर क्यों लेकर जाती है, यह एक बड़ा सवाल है? असहजता के कारण को जाने बिना मनोवैज्ञानिकों द्वारा सुझाए गए अस्थायी समाधानों को अपनाते वक्त एक नए फैशन का हिस्सा बनने के अलावा इससे क्या परिणाम होंगे, इसके बारे में नहीं सोचना भी शायद सहजता का फर्मूला है। तनाव दूर करने की प्रक्रिया में समाधान के ही नए तनाव बन जाने की आशंका सदैव रहती है। फिल्में और सोशल मीडिया ने ऐसे चलन को बढ़ावा दिया है। साठ वर्ष के नायक बीस वर्ष के लड़के की तरह उछल-कूद करते और बेपरवाह दिखाए जाते हैं।

यह सही है कि आज के व्यस्त, तनावपूर्ण और प्रतिस्पर्धा भरे जीवन में 'किडल्टिंग' कुछ क्षणों की राहत और खुशियों के लिए जगह बनाने का काम करती है। यहां तक कि धीमे उपचार जैसा असर भी देखा जा सकता है। इसीलिए इसे शुरू में मानसिक स्वास्थ्य के लिए कारगर उपाय माना गया, लेकिन आखिर यह एक तरह से शिशुकरण की प्रवृत्ति है, जहां अजीब तरीके से कुछ भी करने को मस्ती का प्रतीक मान लिया गया है। उम्र और शरीर से युवा हो चुके जो लोग खुद को बच्चा मानते हैं, उन्हें रोजमर्रा के जीवन में लगातार निर्देश और संरक्षण की जरूरत होती है। ऐसे व्यवहार को 'विलंबित वयस्कता' के तौर पर माना जाता है।

सवाल है कि यह सब कब तक चल सकता है। एक निश्चित वक्त में इसे अभिनय की तरह भले किया जाना संभव हो, इसके साथ आगे नहीं बढ़ा जा सकता। दुनिया वही है और सारी आकांक्षाएं उसी से जुड़ी हैं। इसलिए तनाव का स्रोत भी वही है। उसका सामना तो परिपक्वता से ही करना होगा। तनाव के स्रोत आखिर कहां हैं, उन्हें जाने बिना अपनी चेतना से दूर होने के उपाय करना आखिर कैसी समझदारी भरी तरकीब है?

कुछ अध्ययनों में देखा गया है कि आज के युवा जिम्मेदारियों से बचना चाहते हैं, वे स्वयं को बच्चा समझते हैं। यह ठीक है कि हर कार्य को आनंद के साथ करना हम बच्चों से सीख सकते हैं। बच्चों से सीखने के लिए और भी बहुत कुछ है, लेकिन इसके लिए बच्चों की प्रवृत्तियां अपनाना जरूरी नहीं है। एक उम्र में जो सच्चा और सहज लगता है, वही समय के साथ न बदलने पर जड़ लगने लगता है। बचपन में जो चीजें खुशियां देती थीं, वे वैसी ही समय बीतने पर नहीं रह जाती हैं। बस वे यादों में ही वैसी रहती हैं। आज के मनुष्य की मानसिकता सच्चाहांत तक सीमित होकर रह गई है। इसलिए वह अपने दिमाग को बिल्कुल साफ रखना चाहता है। स्मृति भी उसके लिए तनाव है। वह ऐसी स्थिति में रहना चाहता है जहां मन को कुछ भी सोचने की जरूरत न पड़े, लेकिन यह संभव नहीं रह गया है। वापस लौटने के प्रयास हमें हमारी अच्छी स्मृतियों से भी महरूम करते हैं, उनसे हासिल कुछ भी नहीं होता। 'किडल्टिंग' को कोरोना महामारी के दौरान प्रसारित किया गया, जब खाली समय में पुरानी यादों के नाम पर इसे विज्ञापित करना आसान भी रहा। इसे व्यावसायियों ने अपने-अपने तरीके से भुनाया। यह सही है कि जड़ों से जुड़े रहते हुए ही कोई व्यक्ति आगे बढ़ने का एक बेहतर तरीका खोज सकता है, लेकिन तनाव दूर करने के लिए नए तनाव वाला समाधान ढूंढ़ना शून्य या विपरीत नतीजे भी दे सकता है।

डिजिटल साम्राज्यवाद

आधुनिक युग में साम्राज्यवाद ने जटिल रूप ले लिया है। यह अब सैन्य या राजनीतिक नियंत्रण तक सीमित नहीं है, बल्कि आर्थिक, सांस्कृतिक और डिजिटल क्षेत्र में भी अपने पैर पसार चुका है। यह नया साम्राज्यवाद परोक्ष रूप से देशों की नीतियों और समाजों को प्रभावित कर रहा है। आर्थिक क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियां आज सबसे बड़ी चुनौती बन गई हैं। ये विकासशील देशों के संसाधनों को बटोर कर और श्रम का शोषण कर अपना मुनाफा बढ़ा रही हैं। इसी चलते स्थानीय उद्योग हाशिये पर चले जाते हैं। विदेशी मीडिया और मनोरंजन उद्योग ने भारतीय समाज में उपभोक्तावाद को इस हद तक बढ़ावा दिया है कि हमारे परंपरागत मूल्य और सांस्कृतिक धरोहर कमजोर हो रहे हैं। डिजिटल युग में, डेटा का इस्तेमाल एक हथियार के रूप में किया जा रहा है। इस समस्या से निपटने के लिए आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना होगा। स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन और स्थानीय उत्पादों को प्राथमिकता देना इस दिशा में बड़ा कदम होगा। शिक्षा के क्षेत्र में सांस्कृतिक मूल्यों और भारतीय इतिहास को मजबूत आधार बनाया जा सकता है।

- अवनीश कुमार गुप्ता, आजमगढ़

जानलेवा शौक

'शौक का फंदा' (दुनिया मेरे आगे, 25 दिसंबर) पढ़ा। सेल्फी का चलन बढ़ रहा है। खासकर युवाओं में इसका चलन काफी दिखाई देता है। मगर लापरवाही से ली गई सेल्फी के कारण अक्सर हादसे हो जाते हैं। ऐसे में कई बार तो लोगों की मौत हो जाती है। आए दिन सेल्फी के कारण हादसे के समाचार पढ़ने को मिलते हैं। मोबाइल जब आया होगा, तो शायद ही किसी ने यह कल्पना की होगी कि संचार का यह साधन एक दिन बच्चों से लेकर बड़ों तक के लिए जानलेवा भी साबित होगा। मोबाइल से सेल्फी लेना एक आदत सी हो गई है। फिर हम ये भी नहीं देखते कि कहां खड़े हैं। युवाओं में तो इसका जुनून चरम पर पहुंच गया है। जोखिम भरी स्थितियों में सेल्फी खिंचवाना, अब पूरी दुनिया में दुर्घटनाओं का एक नया कारण बन चुका है। दुनिया भर में प्रतिदिन करोड़ों सेल्फी ली जाती हैं। सेल्फी लें, मगर संभल कर। इस तरह नहीं कि जान ही चली जाए।

- साजिद अली, चंदन नगर, हंदौर

अनैतिकता का दायरा

सामान्य तौर पर कोई भी मनुष्य या कोई समुदाय सामाजिक मान्यता के विरुद्ध आचरण दिखाता है या अनैतिक व्यवहार करता लगता है, तो हम उनकी शिकायत कर डालते हैं। अमूमन मनुष्य या किसी संस्था के खिलाफ आलोचना करना सहज होता है। मगर इस बात को भुला दिया जाता है कि आखिर वह ऐसी किस परिस्थिति में निर्मित हो गए? कहीं न कहीं जो भावनाएं पनपती हैं, वह भी इसी समाज की परिस्थितियों का परिणाम होती हैं। विकास की राह में भटकाव कहां पर हुआ, इस बात को न सिर्फ कानूनी बल्कि राजनीतिक संदर्भ में भी देखने की जरूरत होती है। यह सही है कि वैज्ञानिक मस्तिष्क किसी भी घटना को कार्य और कारण के रूप में ही देखता है, लेकिन बुद्धिमानी तो इस बात में भी है कि कार्य और कारण का दायरा आप कहां तक ले जा सकते हैं। हमारे कानूनविद, शिक्षाविद, वैज्ञानिक और सरकार को इस संदर्भ में व्यापक दृष्टि से सोचने की जरूरत है।

- मिथिलेश कुमार, भागलपुर

सिमटते जंगल

पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र से छेड़छाड़ का नतीजा है कि जंगल सिमटते जा रहे हैं। रिहायशी इलाकों में वन्यजीवों का आना अब सामान्य बात हो गई है। मगर यह सिलसिला अगर बढ़ रहा है, तो यह चिंता की बात है। आए दिन बाघ और तेंदुए आबादी वाले क्षेत्रों में घुस जाते हैं। इससे लोगों की जान खतरे में पड़ जाती है। मनुष्यों और वन्यजीवों के बीच बढ़ता संघर्ष हमारे द्वारा विकास के नाम पर प्रकृति के साथ किए गए खिलवाड़ का नतीजा है। इसके लिए हम लोग ही जिम्मेदार हैं। शहर लगातार जंगल की ओर बढ़ रहे हैं और वन्यजीवों का दायरा धीरे-धीरे सिमटता जा रहा है। आवश्यकता है कि हम समय रहते संभल जाएं और शहरीकरण को प्राकृतिक संपदाओं और जीवों के लिए खतरा न बनाएं। प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार और वन विभाग को इस ओर अब अधिक प्रयास करने होंगे।

- नितिन रावत, फिरोजाबाद

हमें लिखें, हमारा पता : edit.jansatta@expressindia.com | chaupal.jansatta@expressindia.com

सम्पादकीय

नौकरियों को लेकर अच्छे संकेत नहीं

राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय ने असंगठित क्षेत्र के उपक्रमों का वार्षिक सर्वेक्षण जारी किया। आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया कि अक्टूबर 2023 से सितंबर 2024 के बीच ऐसे छोटे असंगठित उपक्रमों की तादाद में इससे पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में 13 फीसदी का इजाफा हुआ है। ऐसे रोजगार से मिलने वाली नौकरियां भी बढ़ी हैं लेकिन इसकी दर काफी कम रही है। इसे एक अच्छे संकेत के रूप में पेश किया जा सकता है क्योंकि नौकरियों में कोई भी इजाफा स्वागतयोग्य है। परंतु समेकित स्तर पर देखें तो इसे पूरी अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा संकेतक मानना मुश्किल है। खासतौर पर प्रतिष्ठानों और नौकरियों में जो इजाफा हुआ उसका अधिकांश हिस्सा 'ओन अकाउंट एंटरप्राइजेज'(ओएई) में हुआ जहां अनिवार्य रूप से एक व्यक्ति काम करता है या जो पारिवारिक दुकान होती है जहां बाहरी किसी व्यक्ति को काम पर नहीं रखा जाता है। इस आंकड़े से कई सवाल पैदा होते हैं। पहला, इस बात में संदेह है कि यह अर्थव्यवस्था की वास्तविक वृद्धि दर्शाता है या नहीं। छोटे कारोबारों में से कई असंगठित बने हुए हैं। ये न केवल कर और नियामकीय प्राधिकारियों की नजर से ओझल हैं बल्कि वे बड़े पैमाने पर होने वाले ऐसे सर्वेक्षणों में भी सामने नहीं आ पाते।

विगत एक दशक में अर्थव्यवस्था निरंतर संगठित हुई है। इसमें वित्तीयकरण के साथ-साथ वस्तु एवं सेवा कर तथा अन्य ढांचागत बदलावों की अहम भूमिका रही है। ऐसे में यह संभव है कि जो वृद्धि नजर आ रही है वह केवल सांख्यिकीय गणना भर हो और इसी संगठित होने की दर्शा रही हो। ऐसी सांख्यिकीय संरचनाएं पहले भी देखी गई हैं। उदाहरण के दिनों में कर्मचारियों के लिए बनी सरकार की अल्प बचत योजनाओं में निवेश करने वालों की संख्या में हाल के दिनों में इजाफा हुआ है। यह रोजगार में वास्तविक इजाफा दर्शाता है या केवल मौजूदा रोजगार संगठित हुए हैं, यह बहस का विषय है। एक अन्य तथा अधिक गहन प्रश्न यह है कि यदि इस तरह के रोजगार बढ़े भी हैं तो इसे स्वस्थ अर्थव्यवस्था का संकेत माना जाए या अस्वस्थ। जैसा कि इसी समाचार पत्र में विशेषज्ञों ने कहा, रोजगार पर केंद्रित सर्वेक्षणों ने दिखाया है कि हाल के समय में शहरी रोजगार कम हुए हैं। काफी लंबे समय के बाद ऐसा देखने को मिला है। जबकि इस बीच कृषि क्षेत्र में रोजगार बढ़े हैं। इससे संकेत मिलता है कि एक विकासशील अर्थव्यवस्था में रोजगार निर्माण और वृद्धि के इंजन को जिस तरह काम करना चाहिए, शायद भारत में वैसा नहीं हो रहा है। दूसरे शब्दों में कहें तो लोगों को कृषि से बाहर कहीं अधिक उत्पादक क्षेत्रों में काम करना चाहिए। अगर ऐसा है तो इन ओएई की संख्या को अर्थव्यवस्था में सुधार या वृद्धि का परिचायक नहीं माना जाना चाहिए बल्कि यह तो ऐसी खराब स्थिति का परिचायक है जहां लोग अपनी दुकानें खोलने को विवश हैं। यह काफी लंबे समय से देश के जीडीपी में असंगठित क्षेत्र की सेवाओं के दबदबे की परिभाषा रही है कि ऐसे छोटे, सेवा आधारित प्रतिष्ठान उन लोगों को नौकरियां देते हैं।

अमेरिका और नाटो की हरकतों से विश्व युद्ध की आशंका के बादल

अमेरिकी विदेश मंत्री एंथोनी ब्लिंकन ने संयुक्त राष्ट्र संघ की सभा में स्पष्ट रूप से कहा है कि इस सभा में सबको विदित है कि तो कुख्यात आतंकवादी संगठन हमास ,हिजबुल्ला और फलस्तीन इस्लामिक जिहाद को कई वर्षों से ईरान प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूप से आर्थिक सामरिक सहायता कर इजराइल का विरोध करवाता आ रहा है. ब्लिंकन ने कहा हमास के इसराइल पर हमले में अमेरिका पूरी तरह से इसराइल के साथ खड़ा है और वह किसी अन्य देश के हमले से इजरायल की रक्षा करने के लिए प्रतिबद्ध है हमास का आह मण इजरायल की प्रभु सत्ता को चुनौती देने वाला है इसलिए इसराइल को हमास पर आक्रमण करने का पूरा-पूरा वैधानिक हक है इजरायल को अपनी जनता तथा अपनी भूमि की रक्षा करने का पूरा अधिकार है इसराइल अपना कर्तव्य निभा रहा है।

संजीव ठाकुर

अमेरिकी पूर्व राष्ट्रपति जो बायडेन जाते-जाते भी यूक्रेन को सामरिक तथा आर्थिक मदद का पैकेज देकर रूस के खिलाफ विश्व युद्ध की चिंगारी को भड़काकर जा रहे हैं। डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद भी रूस यूक्रेन और इसराइल हमास युद्ध रुकने के आसार नजर नहीं आ रहे हैं। रूस यूक्रेन युद्ध को 2 वर्ष से अधिक समय हो चहां है वहीं इसराइल हमास और फिलिस्तीन युद्ध को भी एक वर्ष से अधिक हो चुका है। अमेरिका यूरोपीय देश यूक्रेन की आर्थिक तथा सामरिक मदद करके विश्व युद्ध की आशंका को बने हुए हैं। इसके अलावा भी यह देश यूक्रेन को रूस के खिलाफ लगातार भड़काते आ रहे हैं और यही वजह है की विश्व युद्ध की भीषण विभीषिका से इनकार नहीं किया जा सकता है। लिंकन ने स्पष्ट कहा है यदि ईरान, जॉर्डन, सीरिया या लेबनान अमेरिकी सैनिकों पर हमला करेगा तो उसका तुरंत माकूल जवाब दिया जाएगा। इधर ईरान के प्रमुख आयतुल्लाह खुमैनी ने कहा कि गाजा पट्टी में निर्दोष नागरिकों तथा बच्चों महिलाओं की हत्या का सारा दोष अमेरिका प्रशासन को जाता है जिसने इसराइल को गाजा पट्टी पर निर्दोष नागरिकों पर आक्रमण करने की खुली छूट देकर रखी है और यदि अमेरिका इस युद्ध में शामिल होता है तो खाड़ी के अनेक राष्ट्र शामिल होंगे जिसकी सारी जिम्मेदारी अमेरिका पर होगी। यह बात पूरी दुनिया को मालूम है कि हमास के पीछे ईरान और मिडिल ईस्ट के कई देश शामिल हैं और ईरान के पीछे ड्रैगन तथा रूस का खुला समर्थन है। चीन और रूस ने फिलिस्तीन तथा हमास को अपने समर्थन का ऐलान किया है. रूस चाहता है कि अमेरिका का ध्यान रूस यूक्रेन युद्ध से हट जाए और वह यूक्रेन को पूरी तरह नष्ट कर अपने देश की सीमा में शामिल कर ले। इसी तरह की चाहत चीन ने भी पाल कर रखी है वह ताइवान के मामले में अमेरिकी हस्तक्षेप से परेशान है और वह चाहता है कि अमेरिका का ध्यान इसराइल हमास युद्ध में लगा रहे और वह इसी दौरान आक्रमण करके ताइवान को अपनी प्रभु सत्ता में शामिल कर लेंघ चीन और रूस में खुले तौर पर ईरान को भड़काकर हमास हिन्बुल्लाह और फिलिस्तीन इस्लामी जिहाद को सहायता करने तथा आक्रमण करने की इजाजत दे दी थी तब जाकर ईरान ने हमास को सीधे-सीधे इसराइल पर आक्रमण करने का निर्देश भी दिया हैद 7 अक्टूबर 23 को हमास के आक्रमण से लगभग 1200 से 1500 इसराइली नागरिक सैन्य अधिकारी बच्चे तथा स्त्रियों की सरेआम हत्या कर दी गई। जवाब में इजरायल ने फिलिस्तीन के गाजा पट्टी पर हमला कर हमास के फ्रंटलाइन आतंकवादियों को खत्म कर दिया है कॉलेटरल डैमेज के रूप में वहां के नागरिक तथा बच्चों एवं स्त्रियां भी मौत की नींद सो चुके हैंघ हमास इसराइल लड़ाई में क्या मोड़ तब आया जब गाजा के एक अस्पताल में बम गिरकर 500 लोगों की हत्या कर दी गई और इसका सारा ठीकरा इसराइल के सर फोड़ दिया गया है इसराइल ने इस बात से साफ इनकार किया है और कहा है कि इसके पीछे खुद हमास एवं फिलिस्तीन इस्लामी जिहाद है जिसने गाजा के इस अस्पताल में हमला कर इसराइल के खिलाफ एक नया षड्यंत्र रचा है। इस हमले से क्रुद्ध होकर खाड़ी देशों के सभी मुस्लिम राष्ट्र जिनकी संख्या लगभग 57 है सब एक हो गए हैं और इजरायल के साथ लगभग 87 देश समर्थन में जुड़ गए हैं जिसमें प्रमुख तौर पर अमेरिका ,ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया,कनाडा एवं अन्य देश जिसमें भारत भी शामिल है का इसराइल को समर्थन है। अब मुख्य मुद्दा यह है कि हमास द्वारा 200 नागरिकों को बंधक बना लिया है जिनको वह मुक्त करने के मूड में नहीं दिखाई दे रहा है इजराइल का लगातार आक्रमण कर यह दबाव है कि पहले वह बंधकों को इसराइल के हवाले करें फिर इसराइल अपना आक्रमण रोकेगा।अब इजरायल की थल सेना भी आक्रमण करने पूरी तरह सक्षम एवं तैयार है ऐसी स्थिति में पूरी गाजा पट्टी संपूर्ण तबाह हो जाएगी और लगभग 20 लाख फिलिस्तीन निवासी नागरिक शरणार्थी बन चुके और बेघर भी हो चुके हैं। ईरान ने हमास को इसराइल पर आक्रमण के आदेश देने के समय तक यह नहीं सोचा था की स्थिति यहां तक बिगड़ जाएगी। चीन रूस जरूर ईरान के साथ हैं पर यह जरूरी नहीं है कि इसराइल और हमास की युद्ध से पैदा होने वाले विश्व युद्ध में वे ईरान और खाड़ी देशों का कितना साथ दे पाएंगे। भारत को भी हमास इजरायल युद्ध से चौकन्ना रहने की आवश्यकता होगी क्योंकि हमारा पड़ोसी पाकिस्तान भी हमास जैसे आतंकवादियों को बना देने का कई वर्षों से मुजरिम है और वह कभी भी आतंकवादियों के माध्यम से भारत में हमला कर सकता है तथा भारत को अपनी सीमा पर चौकसी बढ़ा देना चाहिए। इसके अलावा भारत ने अपनी नीति स्पष्ट करके रखी है, उसने हमास के आतंकवादियों का विरोध किया है पर फिलिस्तीन देश का वह कई वर्षों से समर्थन करता आया है और 38 टन मदद की रसद तथा दवाइयां उसने गाजा पट्टी पर भिजवाई भी है। भारत का दृष्टिकोण मानवतावादी है। उसने हमास का विरोध इसराइल पर आक्रमण करने के लिए किया है इसीलिए उसने इसराइल का समर्थन किया पर अब इजरायल के गाजा पट्टी पर निर्दोष लोगों के मारे जाने का विरोध भी किया है। अरब खाड़ी के कई देश भारत से यह उम्मीद लगाए बैठे हैं कि वह जॉर्डन,लेबनान, मिश्र, ईरान ,इराक और इजरायल, अमेरिका ,ब्रिटेन के नेताओं से चर्चा कर युद्ध विराम पर प्रभावी कदम उठाये। सबकी नजर भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर है क्योंकि नरेंद्र मोदी के संबंद्ध सभी देश के राष्ट्र प्रमुखों से मधुर है एवं भारत की नीति ही शांति संदेश देने की रही है। ऐसे में भारत एक प्रमुख शांति दूत के रूप में वैश्विक भूमिका निभा सकता है जो विश्व युद्ध रोकने में काफी कारगर होगी।

आज का राशिफल

हमारे अनुभवी ज्योतिषियों की टीम के अनुसार आप कई विधि तरीकों को पूरा करेंगे। कल आप यह समझ पाएंगे कि आपके नसीब के ऐसे दीवारें बंद है, जब आपके सितारे बुलंद होंगे और तुम्हारी तरक्की, अपनी मित्र बनों से सहायता लेना पड़ेगा। हम न किसी रास्ते से और अधिक कुछ हो सुनहरे ख्वाब सजाकर ऊर्जा की समस्त करेंगे, विशेष फलदायिक संकेतों में से, जब यह सहायता नहीं लेना और कामीदी से लाभ प्राप्त करेगा

मेष
शुभ समाचार मिलेंगे। आनंददायी प्रसास होगा। उत्तम वैवाहिक सुख की अनुभूति होगी। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना होगा। असंयमित विचार आपको परेशानी में डाल सकते हैं। दुर्घटना से सावधान रहें।

वृष
कोई महत्वपूर्ण डिसीजन लेने में आपको दिक्कत होगी। माता के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। परिवार या जमीन, संपत्ति से संबंधित मामलों के लिए उचित समय नहीं है। पर्याप्त नींद नहीं मिल से आप अस्वस्थ महसूस कर सकते हैं।

मिथुन
दोस्त भी आपके सहायक होंगे। आंख या दांतों में दर्द हो सकता है। अच्छा भोजन मिलने के योग हैं। आप अपनी मधुर वाणी से किसी का भी मन जीत पाएंगे। काम में सफलता मिलने की संभावना है। आपका दिन लाभदायी है।

कर्क
आप का दिन आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टिकोण से लाभदायी है। धन लाभ के लिए आप लंबी अवधि का निवेश करने की योजना बनाएंगे। यदि आप व्यापार के साथ जुड़े हुए हों, तो उसके विस्तार की योजना बना पाएंगे। नौकरी-व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा।

सिंह
किसी भी काम को करते वक्त सावधानी बरतनी चाहिए। आज आपका दिन शुभ रहेगा। नए काम शुरू ना करने की आपको सलाह दी जाती है। दोस्तों एवं परिजनों से मुलाकात होगी। दोस्तों से सुख एवं आनंद की प्राप्ति होगी।

कन्या
पर्यटन के लिए मित्र तथा परिजनों के साथ योजना बन सकती है। मन में प्रसन्नता छाई रहेगी। आज किए गए काम में सफलता प्राप्त होने के योग हैं। नौकरी या व्यापार में विरोधियों पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। आर्थिक लाभ होगा। आज परिजनों का साथ मिलेगा।

तुला
वैचारिक समृद्धता बढ़ेगी। आप अपने व्यवहार से लाभ प्राप्त कर सकेंगे। दोस्तों से मेल-जोल बना रहेगा। व्यापार के लिए आज का दिन लाभदायी है। आप का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। मन खुश रहेगा। सुख और आनंद की प्राप्ति होगी।

वृश्चिक
पढ़ाई में आगे बढ़ने के लिए भी समय अच्छा है। बाहर का भोजन न करें। इससे पेट संबंधी कोई रोग हो सकते हैं। अत्यधिक झमेलान आपके मन को विचलित रखेंगे। आपको पानी वाली जगहों पर जाने से आज बचना चाहिए।

धनु
व्यापार में ज्यादा गुस्से से आज उग्र विवाद हो सकता है। पार्टनरशिप के कामकाम में सावधानी बरतें। कोर्ट-कचहरी के काम में सावधानी बरतें। सगे-सम्बंधियों से अनबन के योग हैं। आध्यात्मिकता से मन को शांति मिल सकती है।

मकर
शरीर और मन से आप तरोताजा महसूस करेंगे। आपका दिन मित्रों और स्वजनों के साथ आनंद-प्रमोद में बीतेगा। छोटी यात्रा या प्रवास भी हो सकता है। आज आप कोई धार्मिक या पुण्य का काम करेंगे। आज का दिन आपके लिए शुभ है।

कुंभ
आज का आपका दिन मध्यम फलदायी कहा जा सकता है, परंतु आर्थिक रूप से लाभदायी रहेगा। खर्च अधिक होगा, लेकिन इनकम भी बनी रहेगी। दूर रहने वाले रिश्तेदारों से कोई अच्छा संदेश मिल सकता है।

मीन
आज परिश्रम की अपेक्षा कम फल प्राप्त कर सकेंगे। फिर भी आप दृढ़तापूर्वक अपना काम आगे बढ़ा सकेंगे। आप अपने व्यवहार और वाणी से लोगों को प्रभावित कर सकेंगे। आपकी सौम्यवाणी के कारण आप नए सम्बंध स्थापित कर सकेंगे। आपका आज का दिन लाभदायी रहेगा।

शख्सियत

बढ़ता राजस्थान

नमस्कार साथियों हमारी आज की शख्सियत कॉलम के स्टार हैं भारतीय पुलिस के शानदार वरिष्ठ अधिकारी श्री एस. सेंगाधिर सर। 10 मई सन 1971 को धर्मपुरी में जन्मे एमबीएससी (पशु पोषण) बीवीएससी और एएच की शिक्षा के बाद पुलिस सेवा में आए और बहुत बेहतरीन कार्य कर रहे हैं। आज अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस.कम.विदेशक, राजस्थान पुलिस अकादमी जयपुर के पद को सुशोभित कर रहे हैं। इससे पूर्व ये अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, पुलिस मुख्यालय जयपुर। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, इन्टेलिजेन्स राजस्थान, जयपुर। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, सुरक्षा जयपुर। महानिरीक्षक पुलिस, अजमेर रेन्ज अजमेर। महानिरीक्षक पुलिस, जयपुर रेन्ज जयपुर। महानिरीक्षक पुलिस, इन्टेलिजेन्स. जयपुर। महानिरीक्षक पुलिस,सीआईडी सीबी जयपुर। महानिरीक्षक पुलिस,प्रशिक्षण जयपुर। उप महानिरीक्षक पुलिस, सीबीआई चेन्नई रेन्ज, चेन्नई। पुलिस अधीक्षक, केंद्रीय जांच ब्यूरो, एससीबी चेन्नई। कमांडेंट, 5वीं बटालियन आरएसी जयपुर। उप निदेशक एवं प्राचार्य, राजस्थान पुलिस अकादमी जयपुर। पुलिस अधीक्षक, भरतपुर। पुलिस अधीक्षक, अजमेर।

पुलिस अधीक्षक, टोंक। पुलिस अधीक्षक, झुंझुनू। पुलिस अधीक्षक, हनुमानगढ़।

पुलिस अधीक्षक, राजसमंद। पुलिस अधीक्षक,बाड़मेर। कमांडेंटए 10वीं बटालियन, आरएसी बीकानेर। सहायक पुलिस अधीक्षक, जोधपुर पूर्व। सहायक अधीक्षक पुलिस कार्यालय, मानसरोवर जयपुर रहे। जयपुर रेंज आईजी के कार्यकाल के दौरान इनकी

श्री एस. सेंगाधिर (आईपीएस) एडिश्नल डीजी

शानदार कार्यशैली को देखने व समझने का मौका लगा। कोविड़-19 के दौरान पुलिस के साथ सम्पर्क सभा में हमेशा पुलिसकर्मियों के हौसले को बढ़ाया। बहुत ही सरल व सहज व्यक्तित्व के धनी हैं सेंगाधिर सर दैनिक बढ़ता राजस्थान की टीम इनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती है।

रूपक शर्मा

आज का इतिहास

28 दिसंबर की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ

- गैलीलियो ने 1612 में नेप्च्यून ग्रह को देखा और इसे स्थिर तारे की संज्ञा दी।
- किंग ताकसिन 1767 में थाईलैंड के राजा बने तथा उन्होंने थोनबुरी को अपनी राजधानी बनाया।
- स्पेन ने 1836 में मेक्सिको की स्वतंत्रता को मान्यता दी।
- आईओवा 1846 में 29वां अमेरिकी प्रांत बना।
- भारतीय नेशनल कांग्रेस पार्टी की 1885 में स्थापना हुई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का पहला अधिवेशन 1885 में बंबई में हुआ, जिसमें 72 प्रतिनिधि शामिल हुए।
- सिनेमा के इतिहास में 1895 में पहली बार किसी कहानी को फिल्म का रूप दिया गया। यह फिल्म फ्रांस के अविष्कारक लूमीर बंधुओं ने बनाई जिन्हें फिल्म जगत का जनक कहा जाता है।
- दक्षिण अमेरिकी देश इक्वाडोर ने 1906 में अपना दूसरा उदारवादी संविधान अंगीकार किया।
- इटली के मेसिना में 1908 में आये भूकंप से करीब 80 लोग मारे गये।
- इंपिरियल एयरवेज ने 1926 में भारत और इंग्लैंड के बीच यात्री और डाक सेवा शुरू की।
- कोलकाता में 1928 में पहली बार बोलती फिल्म मेलोडी ऑफ लव प्रदर्शित हुई।
- रॉबर्ट सुलिवन 1942 में पहले पायलट बने, जिन्होंने अटलांटिक महासागर के ऊपर एक सौ बार उड़ानें भरी।
- द पीक डिस्ट्रिक्ट 1950 में ब्रिटेन का पहला राष्ट्रीय पार्क बना।
- इंग्लैंड के उत्तर में स्थित सबसे बड़े बूचड़खाने को 1957 में पशुओं की फुट एंड माउथ बीमारी की वजह से बंद करने का फैसला लिया गया था।
- सोवियत संघ ने 1957 में परमाणु परीक्षण किया।
- चीन ने 1966 में लोप नोर में परमाणु परीक्षण किया।
- अमेरिकी राज्य फ्लोरिडा के मियामी में 1968 में हुए पोप उत्सव में एक लाख लोग शामिल हुए।
- जर्मनी के तानाशाह के उप प्रमुख मार्टिन बोरमाशस की 1972 में अस्थियां मिलीं।
- पाकिस्तान में 1974 में आये 6.3 तीव्रता के भूकंप में 5200 मरे।
- अमेरिका ने 1976 में नेवादा में परमाणु परीक्षण किया।
- भारत के दिग्गज बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने 1983 में वेस्टइंडीज के खिलाफ मद्रास टेस्ट में अपना 30 वां शतक जड़कर महान बल्लेबाज सर डॉन ब्रैडमैन का रिकॉर्ड तोड़ा था।
- राजीव गांधी के नेतृत्व में 1984 में कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में जीत मिली।
- पोलैंड के अन्वेषक मारके कार्मिस्की 1995 में एक ही वर्ष में उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों पर झंडा फहराने वाले पहले व्यक्ति बने, विश्व सिनेमा का दूसरी सदी में प्रवेश।
- भारतीय डाक विभाग द्वारा 2000 में वीरता पुरस्कार विजेताओं के सम्मान में पांच डाक टिकटों के सेट में 3 रुपये का एक सचित्र डाक टिकट जारी किया गया।
- इस्लाम ने 2003 में कजाकिस्तान के बैंकानूर अंतरिक्ष स्टेशन से दूसरा वाणिज्य उपग्रह छोड़ा।
- अमेरिका में 2003 में ब्रिटेन के कुछ विमानों में स्काई मार्शल यानी सुरक्षा गार्ड तैनात करने का फैसला लिया।
- रूस ने 2007 में ईरान के बुशेहर विद्युत संयंत्र के लिए परमाणु ईंधन की दूसरी खेप खेप भेजी।

विशेष आलेख

'हजारों जवाबों से अच्छी है मेरी खामोशी...न जाने कितने सवालों की आबरू रखी'

सुनील कुमार महला

26 दिसंबर 2024 को आर्थिक सुधारों के पुरोधा, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री(14 वें) डॉ मनमोहन सिंह का हमारे बीच से 92 वर्ष की उम्र में अवसान हो गया। सभी जानते हैं कि डॉ सिंह एक प्रख्यात अर्थशास्त्री थे जिन्होंने अपने नीतियों और नेतृत्व से भारत को आर्थिक और वैश्विक ऊंचाइयों पर पहुंचाया। सच तो यह है कि उनके आर्थिक सुधारों को पूरी दुनिया ने लोहा माना है।सच तो यह है वे देश में उदारीकरण लेकर आए।कहना गलत नहीं होगा कि वे सादगी, विनम्रता और शिद्दता की मूरत थे। अविभाजित भारत के पंजाब में 26 सितंबर 1932 को जन्मे डॉ सिंह ने कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड जैसी यूनिवर्सिटीज से अपनी पढ़ाई पूरी की थी। श्री गुरमुख सिंह और श्रीमती अमृत कौर के घर जन्मे सिंह ने 1948 में पंजाब में अपनी मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। कैम्ब्रिज से उन्होंने 1957 में अर्थशास्त्र में प्रथम श्रेणी ऑनर्स की डिग्री हासिल की। इसके बाद 1962 में उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के नफील्ड कॉलेज से अर्थशास्त्र में 'डी.फिल' की उपाधि प्राप्त की।उन्होंने योजना आयोग उपाध्यक्ष (अब नीति आयोग), भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) गवंनर, और आर्थिक सलाहकार जैसे कई महत्वपूर्ण पदों पर काम किया और भारतीय अर्थव्यवस्था की तस्वीर बदल दी थी। बहुत कम लोग ही यह बात जानते होंगे कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की सरकार के तहत 2006-2007 में भारत ने 10.08त्न की वृद्धि दर दर्ज की थी। यह 1991 में अर्थव्यवस्था के उदारीकरण के बाद से भारत में दर्ज की गई सबसे अधिक जीडीपी थी। उच्चतम जीडीपी वृद्धि दर 2006-2007 में 10.08त्न थी। यहां यह उल्लेखनीय है कि मनमोहन सिंह ने जुलाई, 1991 के बजट में अपने प्रसिद्ध भाषण में कहा था, 'पृथ्वी पर कोई भी ताकत उस विचार को नहीं रोक सकती जिसका समय आ गया है। मैं इस प्रतिष्ठित सदन को सुझाव देता हूं कि भारत का दुनिया में एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उदय होना चाहिए, यह एक ऐसा ही एक विचार है। वे वित्त मंत्रालय में सचिव, प्रधानमंत्री के सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष भी रहे। वर्ष 1991 से 1996 तक वे भारत के वित्त मंत्री रहे और इस दौरान उन्होंने अनेक आर्थिक सुधार किए। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ष 1987 और 1990 के बीच जिनेवा में दक्षिण आयोग के महासचिव के रूप में उनकी नियुक्ति हुई तथा 1971 में, डॉ. सिंह वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार में आर्थिक सलाहकार तथा वर्ष 1972 में वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। यहां हम यहां उनके राजनीतिक करियर की बात करें तो डॉ मनमोहन सिंह 1991 से भारत के संसद के उच्च सदन (राज्यसभा) के सदस्य रहे, जहां वे 1998 से 2004 के बीच विपक्ष के नेता थे। उल्लेखनीय है कि वे पहली बार 1991 में राज्य सभा के लिए चुने गए थे और उन्होंने उच्च सदन में पांच बार असम और 2019 में राजस्थान का प्रतिनिधित्व किया।पाठक जानते हैं कि वे वर्ष 2004 से लेकर वर्ष 2014 तक यूपीए सरकार में प्रधानमंत्री रहे। यह भी उल्लेखनीय है कि उन्होंने 22 मई 2004 को प्रथम बार और 22 मई 2009 को दूसरी बार पीएम पद की शपथ ली थी। उल्लेखनीय है कि वह जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी और नरेंद्र मोदी के बाद चौथे सबसे लंबे समय तक पीएम पद पर रहने वाले प्रधानमंत्री थे।वे भारत के पहले सिख प्रधानमंत्री भी थे। अपने दस साल के प्रधानमंत्री काल में उन्होंने देश में शिक्षा का अधिकार (आरटीई), सूचना का अधिकार (आरटीआई, वर्ष 2005), विश्व की सबसे बड़ी रोजगार गारंटी योजना(मनरेगा योजना(वर्ष 2005) समेत तमाम कई बड़े फैसले लिए, जो अपने आप में एक मिसाल है। उल्लेखनीय है कि आधार योजना भी उनके ही कार्यकाल में शुरू की गई थी। कहना गलत नहीं होगा कि आधार योजना से भारतीयों को नव पहचान मिली और इससे आमजन की विभिन्न सरकारी सेवाओं तक पहुंच आसान और सरल हो गई। साथ ही कई पहचान पत्रों की जगह इस एक पहचान पत्र आधार कार्ड ने लोगों का जीवन आसान किया। इतना ही नहीं डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) यानी कि लोगों के खाते में सीधे पैसे ट्रांसफर करने की प्रणाली भी उनके ही कार्यकाल की देन है जिससे भ्रष्टाचार पर काफी हद तक लगाम लगी और लोगों तक सरकारी सहायता सीधे पहुंचने लगी। कहना गलत नहीं होगा कि भारत-अमेरिका परमाणु समझौता भी डॉ. सिंह के कार्यकाल की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि रही है। यहां यह भी गौरतलब है कि वर्ष 2008 की आर्थिक मंदी के झटकों से भी उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था में नई जान फूंकते हुए उसे उबारा था। पाठकों को बताता चलूं कि उन्होंने भारत के निर्यात रुझान और स्व-संचालित विकास की संभावनाएं शीर्षक से किताब भी लिखी थी, जिसमें उन्होंने भारत की अंतर्मुखी व्यापार नीति की आलोचना की थी। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय और प्रतिष्ठित दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में फिकल्टी के रूप में तथा यूएनसीटीएडी (अंकटाड) यानी कि (व्यापार और विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन) में 1966-1969 तक सचिवालय में भी काम किया। 1969 से 1971 तक, सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रोफेसर भी रहें।

पुरस्कारों और सम्मानों की यदि बात करें तो उन्हें 1987 में भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान, पद्म विभूषण, वर्ष 1995 में उन्हें भारतीय विज्ञान कांग्रेस का जवाहरलाल नेहरू जन्म शताब्दी पुरस्कार, वर्ष 1993 और 1994 वर्ष के वित्त मंत्री के लिए एशियां मनी पुरस्कार, वर्ष 1993 वर्ष के वित्त मंत्री के लिए यूरो मनी पुरस्कार, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय का एडम स्मिथ पुरस्कार और कैम्ब्रिज में सेंट जॉन्स कॉलेज में विशिष्ट प्रदर्शन के लिए राइट पुरस्कार (1955) प्रदान किये गए थे। इतना ही नहीं उन्हें कैम्ब्रिज और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों सहित कई विश्वविद्यालयों से मानद उपाधियां प्राप्त हुई थीं। उन्होंने अनेक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों और संगठनों में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

गौरतलब है कि साइप्रस में राष्ट्रमंडल शासनाध्यक्षों की बैठक (वर्ष 1993) और वर्ष 1993 में वियना में मानवाधिकारों पर विश्व सम्मेलन में उन्होंने भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व भी किया। बहरहाल, कहना गलत नहीं होगा कि मनमोहन सिंह की छवि बेशक बहुत ही कम बोलने वाले और अधिकतर शांत रहने वले व्यक्तियों में की जाती रही है, लेकिन जब भी वे बोलते थे, वो सुर्खियां बन जाती थीं। मसलन,27 अगस्त 2012 को संसद में उन्होंने यह कहा था कि हजारों जवाबों से अच्छी है मेरी खामोशी है... न जाने कितने सवालों की आबरू रखी। इतना ही नहीं, 23 मार्च 2011 को नेता विपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज के एक तंज पर जवाब में मनमोहन सिंह ने कहा था- माना के तेरी दीद के काबिल नहीं हूं मैं, तू मेरा शौक तो देख मेरा इंतजार तो देख। बहरहाल, अंत में यही कहूंगा कि भले ही आज डॉ सिंह हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन वे देश-दुनिया के प्रतिष्ठित नेताओं में से एक हैं। आर्थिक नीतियों के संबंध में उन्होंने देश ही नहीं अपितु विदेशों पर एक गहरी और अमिट छाप छोड़ी है। उनको शत-शत नमन, विनम्र श्रद्धांजलि।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक श्रीमती कमलेश विजयवर्गीय द्वारा बढ़ता राजस्थान प्रिंटिंग प्रेस,इण्डस्ट्रियल सेंट्र खातीपुरा,जिलाई रोड (राज.) से मुद्रित एवं 185/ 116 "प्रतिक्षा" सेक्टर-18, प्रताप नगर सांगानेर, जयपुर से प्रकाशित, संपादक-मनुजा पाठक*। प्रधान संपादक-राम विलास विजयवर्गीय मो. 9414242258, 9214048888,जयपुर फोन न.0141-2796794,795 टोंक कार्यालय-बाईपास निवाई, टोंक फोन न.01432-244881 निवाई 01438-222201,202,203 अलवर कार्यालय-मोहताब सिंह का जोहड़,अलवर मो. 7733000123,कोटा कार्यालय-छावनी मेन रोड,कोटा मो.9414823448 । ई मेल-badhatarajasthan@yahoo.com *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार

हिन्दुस्तान 1936

विदा अर्थशास्त्री

डॉक्टर मनमोहन सिंह की इस दुनिया से विदाई भारतीय अर्थव्यवस्था के एक युग के अंत की तरह है। लगभग तीन दशक से भी ज्यादा पहले 24 जुलाई, 1991 को डॉक्टर मनमोहन सिंह ने वित्त मंत्री के रूप में अपना ऐतिहासिक बजट पेश किया था। तब उन्होंने जिस ईमानदारी से अर्थव्यवस्था की कमियों को स्वीकार किया था, वह विरल है, इसका श्रेय तत्कालीन विद्वान प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव को भी दिया जाना चाहिए। राव ने एक ईमानदार अर्थशास्त्री के रूप में मनमोहन सिंह पर जो भरोसा किया, वही भरोसा आज भी फलीभूत हो रहा है। उस भरोसे पर मनमोहन सिंह खरे उतरे थे और उसी भरोसे ने उन्हें प्रधानमंत्री पद तक पहुंचाया था। कोई आश्चर्य नहीं, साल 2008 में जब दुनिया की ज्यादातर अर्थव्यवस्थाएं महामंदी से डगमगा रही थीं, तब भारत की बाग डोर अपने एक कुशल अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के हाथों में थी। भारत अपनी उदार नीतियों और छोटी बचत की वजह से उस महामंदी से बच गया। अवश्य याद करना चाहिए, जब देश को अपना सोना तक गिरवी रखना पड़ा था, तब भी मनमोहन सिंह ने अर्थव्यवस्था को अपमान से उबारने का बीड़ा उठाया था और फिर कभी सोना गिरवी रखने की नौबत नहीं आई।

भारतीय बाजार को दुनिया के लिए खोलने का फैसला हो या गांव-गांव तक रोजगार देने की नरेगा जैसी योजना हो, मनमोहन सिंह इस देश की आर्थिक नब्ज को बहुत बेहतर जानते थे। 24 जुलाई, 1991 को संसद में खड़े होकर उन्होंने साफ कहा था कि अगर अर्थव्यवस्था के हित में निर्णायक कार्रवाई नहीं की गई, तो बाद में स्थितियों को संभालना मुश्किल हो जाएगा। यह भी गौर करने की बात है कि मनमोहन सिंह ने वित्त मंत्री के रूप में जिन आर्थिक सुधारों की शुरुआत की, उसे उनके बाद के सभी वित्त मंत्रियों ने बल प्रदान किया। आज आर्थिक उदारीकरण के कमाल को अनेक आंकड़े हमारे सामने रख देते हैं। बॉम्बे शेयर बाजार का सूचकांक साल 1991 में चढ़ता भी था, तो 1,000 अंकों पर बंद हो जाता था और आज यही सूचकांक 78,000 के पार पहुंच गया है। 1990 से पहले विश्व जीडीपी में भारत का योगदान बमुश्किल एक प्रतिशत था, जो अब नौ प्रतिशत के करीब पहुंच रहा है। भारत आज दुनिया में चौथे नंबर की अर्थव्यवस्था है। विकसित होने के लिए दृढ़ संकल्पित है, तो इसमें मनमोहन सिंह के योगदान को अवश्य देखा जाना चाहिए।

भारत आज दुनिया में चौथे नंबर की अर्थव्यवस्था है। विकसित होने के लिए दृढ़ संकल्पित है, तो इसमें मनमोहन सिंह के योगदान को अवश्य देखना चाहिए।

हमें याद रखना होगा, जब उन्होंने खुले मन से देश की आर्थिक कमियों को स्वीकार किया, तब वह आर्थिक कायाकल्प की ओर बढ़े। उन्होंने भारत की ताकत और वक्त को पहचान लिया था, तभी उन्होंने 1991 के भाषण में दोटूक कहा था, 'हम उस लंबे और कठिन मार्ग की कठिनाइयों को कम करके नहीं बता रहे हैं, जिस पर हमने चलने का निश्चय किया है। परंतु जैसा कि, विक्टर ह्यूगो ने एक बार कहा था, विश्व में कोई भी शक्ति उस विचार को नहीं रोक सकती, जिसका समय आ गया है। अतः मैं इस महान सदन को सुझाव देता हूं कि विश्व में एक प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में भारत का उभरना एक ऐसा ही विचार है। पूरे विश्व के सामने मैं जोर देकर और स्पष्टतः कहता हूं : अब भारत सजग है, हम विजयी होंगे, हम कामयाब होंगे।' जोश, जुनून से भरपूर मनमोहन सिंह के उस ऐतिहासिक उद्बोधन को कदम-कदम पर याद रखने की जरूरत है, क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था को अपनी मंजिल तक जल्दी पहुंचना है।

हिन्दुस्तान Hindustan | 75 साल पहले 28 दिसंबर, 1949

भ्रांति निवारण

काश्मीर के प्रधानमंत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्ला (तब राज्यों के मुख्यमंत्री को प्रधानमंत्री ही कहा जाता था) लेक सक्सेस जाते हुए कुछ समय के लिए काहिरा के हवाई अड्डे पर ठहरे थे। वहां पत्र प्रतिनिधियों से वार्तालाप करते हुए उन्होंने काश्मीर के सम्बन्ध में जो बातें बताईं उनसे निस्संदेह काहिरा के पत्रकारों की आंखें खुल गई होंगी और उन्हें पता लग गया होगा कि काश्मीर और भारत के पारस्परिक सम्बन्ध के बारे में पाकिस्तान ने मुस्लिम देशों में जो प्रचार किया है, वह कितना विपैला, कितना असत्य और कितना दुर्भावनापूर्ण है।

पिछले दिनों युक्तप्रांतीय शिक्षा मंत्री के सभा-सचिव मौलाना महफूजुर्रहमान ने सऊदी अरबिया की यात्रा से लौटकर कहा था कि पाकिस्तान का 'विश्वव्यापी मुस्लिम राष्ट्र दल' बनाने का दूषित प्रस्ताव मध्य-पूर्व के मुस्लिम राष्ट्रों को बिल्कुल नहीं भाया है। शेख अब्दुल्ला की अधिकारपूर्ण और खरी-खरी बातों ने पाकिस्तानी प्रचार के ढोल की पोल खोलने में और अधिक योग प्रदान किया होगा, इसमें सन्देह नहीं है।... उन्होंने काश्मीर की घटनाओं का कुछ विस्तार के साथ परिचय करते हुए कहा कि काश्मीर तथा मिस्र का बहुत पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध है। जगलूल पाशा के रूप में मिस्र ने विश्व के समक्ष स्वतंत्रता के लिए लड़ने वाले एक महान योद्धा का आदर्श रखा है और काश्मीर ने उनसे प्रेरणा ग्रहण की है। एक और महापुरुष हैं, जिन्होंने काश्मीर को सम्मान दिखाया और वह हैं स्वतंत्रता और सत्य के लिए अनवरत युद्ध करने वाले विश्व-विख्यात युगपुरुष महात्मा गांधी। यह इस बात का द्योतक है कि काश्मीर किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय से प्रेरित होकर नहीं अपितु एकमात्र स्वतंत्र आकांक्षा के वशीभूत होकर अपने स्वत्वों के लिए संघर्ष कर रहा है। वह एक ऐसे सिद्धान्त के लिए संग्राम कर रहा है, जो प्रत्येक काश्मीरी को, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय का क्यों न हो, अपने देश का स्वयं स्वामी बनने का अधिकार प्रदान करता है। ऐसी दशा में क्या यह बताने की आवश्यकता है कि कौन काश्मीर का मित्र और कौन उसका शत्रु है? पाकिस्तान काश्मीर को स्वतंत्र नहीं होने देना चाहता, वह चाहता है कि चूंकि काश्मीर प्रधानतः एक मुस्लिम बहुल प्रदेश है, इसलिए उसे पाकिस्तान में लुप्त हो जाना चाहिए। इसका अर्थ है कि पाकिस्तान काश्मीर को एक स्वतंत्र देश के रूप में नहीं देखना चाहता, वह उसे हड़प लेना चाहता है।

शालीनता की मिसाल मनमोहन सिंह

यहां सुनें करें

हरीश खरे | वरिष्ठ पत्रकार

वह खूब पढ़ाई-लिखाई के दम पर केवल देश के वित्त मंत्री या प्रधानमंत्री ही नहीं बने, बल्कि देश को सही दिशा देने वाले दिग्गज भारतीय नेताओं में शुमार हो गए।

मनमोहन सिंह को यह देश हमेशा याद करता रहेगा। देश के स्तर पर देखें, तो उनके बड़े योगदान की शुरुआत साल 1991 में तब हुई थी, जब देश की अर्थव्यवस्था चरमरा गई थी। ऋण का बोझ बहुत बढ़ गया था। देश का खजाना खाली होने वाला था। तब पुरानी सोच और पुरानी नीतियों का ढांचा ही देश में चल रहा था, उसे बदलने का समय आ गया था। तब डॉक्टर मनमोहन सिंह ने लगभग अकेले ही अर्थव्यवस्था में सुधार के कार्य शुरू किए। जो आर्थिक सुधार उन्होंने शुरू किए, वे बिल्कुल नए थे, तो उनका विरोध भी खूब हुआ। बहुत से लोगों ने कहा कि विदेशी ताकतों के मुताबिक देश की अर्थव्यवस्था की नींव रखी जा रही है, लेकिन केंद्रीय वित्त मंत्री के रूप में अर्थशास्त्री मनमोहन सिंह आर्थिक सुधारों की राह पर चलते रहे।

वह सच्चे देशभक्त थे और उन्होंने अर्थव्यवस्था को सुधारने की दिशा में भी तभी कदम उठाए, जब वह आश्वस्त हो गए कि इस कदम से देश को दूरगामी लाभ होगा। तब बहुत से लोगों को यह लगता था कि हम अपने जाने-माने रास्ते से भटक रहे हैं, नए जोखिम भरे रास्ते पर चल पड़े हैं, मगर उस नए रास्ते का ही कमाल है कि हम आज विश्व में एक मजबूत आर्थिक मुकाम पर पहुंच गए हैं। इस मुकाम से और आगे चलते हुए यह देखना भी जरूरी है कि हम क्या नहीं सकता।

वह दूरदृष्टि वाले नेता थे। अक्सर कह दिया जाता है कि वह सियासत में माहिर नहीं थे, पर ऐसे सोचना गलत है। ऐसा नहीं है कि उनको सियासत की समझ नहीं थी। उन्हें हमेशा यही लगता था कि हमारे जैसे देश में, जहां इतनी विविधता है, अनगिनत पहचानें हैं, वहां राजनीति न ही हो, तो बेहतर है। राष्ट्र के रूप में हमारा अनुभव भी तब यही संकेत कर रहा था कि देश में मजबूत अर्थव्यवस्था के लिए राजनीतिक स्थिरता का माहौल जरूरी है। ऐसे में, उच्च स्तर पर नेताओं के बीच परस्पर संघर्ष या राजनीति न हो। उनकी यह कोशिश रहती थी कि हम सियासी खींचतान को जितना भी कम कर सकते हैं, हमें जरूर करना चाहिए। उनकी यही खूबी रही और उनके जैसे प्रधानमंत्री ने दस साल देश को चलाया। कुछ लोग उन्हें कमजोर प्रधानमंत्री कहते हैं, तो क्या हुआ? समय के अनुकूल राजनीति में उनके योगदान को कोई नहीं भुला सकता।

आज प्रधानमंत्री के रूप में उनकी मजबूतियों पर जरूर गौर करना चाहिए। प्रधानमंत्री तो बहुत आएंगे, पर मनमोहन सिंह का आर्थिक और राजनीतिक योगदान अमिट रहेगा। उन्होंने सही समय में देश को सही दिशा में ले चलने का आह्वान किया। किसी भी देश को देख लीजिए, अगर सही समय पर सही फैसला न लिया जाए, तो उसे आगे बढ़ने का सही रास्ता नहीं मिलता।

एक सहृदय व्यक्ति के रूप में भी वह हमेशा याद किए जाएंगे। प्रधानमंत्री के रूप में दस साल पद पर रहते हुए उन्होंने एक मिसाल कायम की कि सार्वजनिक जीवन में शालीनता, शिष्टाचार और विनम्रता बहुत महत्वपूर्ण हैं। अगर कोई समाज इन खूबियों से दूर हटता है, तो उस समाज में ओछापन आता है, वहां छोटी-छोटी बातों पर लोग झगड़ा करने लगते हैं। हिंसा होने लगती है और देश की तरक्की पर बुरा असर पड़ता है। गलाकाट प्रतिस्पर्द्धा के इस आधुनिक दौर के शासन-प्रशासन में शालीनता व विनम्रता को सुनिश्चित करना उनकी एक बड़ी कामयाबी रही।

यह भी ध्यान देना चाहिए कि देश में किसी भी राजनीतिक पार्टी को जब पूर्ण बहुमत नहीं मिल पा रहा था, जब मिली-जुली सरकार का दौर आया, तो प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एक सर्वमान्य नेता के रूप में बहुत कारगर साबित हुए। उन्होंने कुछ ही समय में यह साबित कर दिया कि वह सबको साथ लेकर चल सकते हैं। उनकी वह सहजता अब एक मिसाल होगी।

जब वह प्रधानमंत्री थे और मैं उनका मीडिया सलाहकार था, तब महाराष्ट्र से कुछ बच्चे उनसे मिलने आए थे। मैंने उन बच्चों को प्रधानमंत्री से मिलवाया, बातचीत के दौरान एक बच्चे ने पूछा कि बचपन में आप कैसे पढ़ते थे? तब प्रधानमंत्री ने बचपन को याद करते हुए बताया था कि उनके घर में लाइट नहीं थी। वह सड़क किनारे लैंप पोस्ट के नीचे बैठकर पढ़ते थे।

इस बात का जिक्र वह नहीं करते थे, न इसे उन्होंने बढ़ा-चढ़ाकर कभी पेश किया। यह बात हम नहीं भूल सकते कि एक साधारण भारतीय, जिसके पीछे कोई बड़ी ताकत नहीं थी, जो किसी बड़े सियासी परिवार से नहीं आया था, जो एक अल्पसंख्यक समुदाय से आया था, जो सिखों में भी सबसे सशक्त जट सिख वर्ग से नहीं था। हर तरह से जिनकी बुनियाद साधारण थी। ऐसे व्यक्ति ने अपनी मेहनत से दिन-रात पढ़ाई करके, ऑक्सफोर्ड, कैंब्रिज से ज्ञान प्राप्त किया और उस ज्ञान को देश की सेवा में लगा दिया।

जब उन्हें साल 2004 में प्रधानमंत्री बनाया गया, तो वह अपने आप में देश की योग्यता के साथ एक प्राकृतिक न्याय की तरह था। डॉक्टर भीमराव आंबेडकर ने कहा था कि 'शिक्षा शेरनी का दूध है, जो पिएगा, वह दहाड़ेगा।' उनकी यह बात डॉक्टर मनमोहन सिंह पर पूरी तरह सटीक बैठती थी। वह पढ़ते हुए ही प्रधानमंत्री के पद पर पहुंचे थे। उनके पास मूल रूप से अध्ययन, अध्यापन और शोध के अलावा कोई ताकत नहीं थी। लगातार ज्ञान प्राप्त करते रहना, खुद को समय के अनुरूप ढालते रहना और उसका जहां-जितना संभव हो, समाज व देशहित में इस्तेमाल करना। वास्तव में, मनमोहन सिंह जीवन भर यही तो करते रहे। आंबेडकर की बात उन पर सबसे ज्यादा लागू होती है।

उन्हें देखकर यह कहा जा सकता है कि कोई व्यक्ति पढ़ाई करके भी प्रधानमंत्री बन सकता है। मनमोहन सिंह इसकी मिसाल हैं। कमजोर पृष्ठभूमि से आने वाला व्यक्ति केवल पढ़ाई के बल पर भी देश सेवा का सर्वोच्च अवसर पा सकता है, जैसा मनमोहन सिंह ने पाया। वह केवल देश के वित्त मंत्री या प्रधानमंत्री ही नहीं बने, बल्कि देश को दिशा देने वाले दिग्गज भारतीय नेताओं में शुमार हो गए।

मैंने तो करीब से देखा है, विश्व के दिग्गज नेता उनसे कितने सम्मान के साथ मिलते थे। तब परस्पर जो आदर भाव होता था, वह अद्भुत और दर्शनीय होता था। उनसे मिलने आने वाले लोग भी आश्चर्य में पड़ जाते थे कि लोकतंत्र में एक ऐसा इंसान भी ऐसी सर्वोच्च ऊंचाई पर पहुंच सकता है। वह नेताओं और छात्रों के लिए प्रेरणास्रोत रहेंगे। वह केवल भारत के लिए नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए आदर्श रहेंगे।

(प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के मीडिया सलाहकार रहे लेखक के ये अपने विचार हैं)

महिलाओं की बढ़ती शक्ति के बावजूद सुरक्षा में कई सेंध

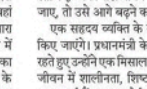

यहां सुनें करें

अनीता भटनागर जैन | पूर्व आईएएस अधिकारी

सिंहावलोकन- 2024

वह साल अब समाप्त होने को है। कुछ लोगों ने नववर्ष के संदेश भेजने भी शुरू कर दिए हैं, शायद इस आशंका से कि वह संदेशों की भीड़ में कहीं खो न जाए। भीड़ में खो जाने या असुरक्षित महसूस करने से अपने आप ध्यान महिलाओं की तरफ जाता है, यानी ज्यादातर ऐसी खामोश चीखें, जो हमारे समाज में अक्सर सुनाई नहीं देतीं। विश्व या किसी देश की आर्थिक-सामाजिक प्रगति के आकलन का निर्विवादित पहलू है- आधी आबादी की सुरक्षा और उसका उत्थान। वर्ष 2024 में कुछ दिल दहलाने वाली घटनाएं सुर्खियों में आईं। कोलकाता में एक मेडिकल कॉलेज में प्रशिक्षु महिला डॉक्टर के साथ बलात्कार व हत्या; मणिपुर में दो समुदायों की लड़ाई में जाति विशेष की महिलाओं का सामूहिक बलात्कार व हत्या; एक पिता का अपनी ही बेटी की विवाहिता ननद से बदला लेने हेतु किया गया बलात्कार; 12वीं कक्षा में पढ़ने वाली छात्रा का एक लड़के के अवांछित दबाव से बचने के लिए दादी के घर रहना और वहीं पर उस पुरुष द्वारा छात्रा को जिंदा जला देने जैसी घटनाएं विचलित कर गईं।

विश्व या किसी देश की आर्थिक-सामाजिक प्रगति के आकलन का निर्विवादित पहलू है- आधी आबादी की सुरक्षा और उसका उत्थान।

वैश्विक शांति व सुरक्षा सूचकांक में, जो महिलाओं के समावेश, न्याय व सुरक्षा स्थिति को बताता है, भारत 177 देशों में 128वें स्थान पर आंका गया है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, महिलाओं के विरुद्ध अपराध में राष्ट्रीय औसत 66.4 है, जबकि देश की राजधानी दिल्ली का स्थान 144.4 अंकों के साथ सर्वोच्च है। 13 राज्य व केंद्रशासित क्षेत्रों का आंकड़ा राष्ट्रीय औसत से अधिक है। माना जाता है कि 90 फीसदी यौन उत्पीड़न जान-पहचान के व्यक्ति द्वारा ही होता है। जब पिता बेटी को 'परिवार की इज्जत' के लिए मार सकता है, तो वह बेटी अपने घर में भी असुरक्षित है। घरेलू हिंसा में 31.4 प्रतिशत मामले पति के अत्याचार के ही बताए जाते हैं।

वैसे, वर्ष 2024 में महिलाओं ने उपलब्धियों के नए सोपान भी रचे। क्लाउडिया गोल्डिन को नोबेल पुरस्कार प्राप्त होना एक ऐतिहासिक उपलब्धि रही; मेक्सिको की प्रथम महिला राष्ट्रपति क्लाउडिया शीनबाम चुनी गईं; अपने देश में वाइस एडमिरल आरती सरीन सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा की प्रथम महिला महानिदेशक बनीं; मुंबई की 16 वर्षीया काम्या कार्तिकेयन ने माउंट एवरेस्ट फतह करके देश में सबसे कम उम्र की पर्वतारोही बनने की उपलब्धि हासिल की; पायलटों में महिलाओं की हिस्सेदारी सबसे अधिक 15 फीसदी भारत में ही है आदि।

हैं, सिनेमा समाज का दर्पण होता है। पुरुष प्रधान अमानवीय प्रवृत्तियों को दर्शाती कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर हिट हुईं, जिसके लिए हम ही जिम्मेदार हैं। आज मनोरंजन के साधनों में गाली-गलौज आम बात हो गई है। यह विचार करने की बात है कि गालियां महिला प्रधान ही क्यों होती हैं? ऐसी भाषा केवल सिनेमा या टीवी तक सीमित नहीं है, अब यह आम जीवन में 'कूल' समझी जाने लगी है।

राष्ट्रपति महोदया से शिष्टाचार भेंट में कुछ स्कूली छोटी बच्चियों ने पूछा कि निर्भया जैसी घटना फिर से नहीं होगी? इस प्रश्न का उत्तर जटिल है, क्योंकि केवल प्रशासन व न्यायपालिका के पास इसका समाधान नहीं है। पूरा उत्तर तो हमारे समाज से आएगा- ईमानदार स्व-विश्लेषण से। हम सबका दायित्व है कि महिला सुरक्षा पर प्रत्येक दिन कुछ ठोस करें। गांधीजी के शब्दों में, वह बदलाव स्वयं में करें, जो हम दूसरों में देखना चाहते हैं।

(ये लेखिका के अपने विचार हैं)

मनसा वाचा कर्मणा

हताश भला क्यों होना

संदेह, हताशा, विश्वास का कम होना अथवा खो जाना, आदर्श के प्रति उत्साह का घटते जाना, भविष्य के लिए आशा का उलझन में पड़ना या चकरा जाना, ये सारे कठिनाई के सामान्य लक्षण हैं। बाहरी दुनिया में और भी बदतर लक्षण होते हैं, जैसे चिड़चिड़ेपन में वृद्धि, किसी भी बात में विश्वास करने से इनकार करना; ईमानदारी में कमी; अत्यधिक भ्रष्टाचार; सुविधा और उपभोग में ही तल्लीन रहना और दुनिया बुरी से बुरी चीजों के आने की प्रतीक्षा में है, ऐसी अपेक्षा करना। मगर यह सब चाहे जितना तीव्र हो, एक अस्थायी घटना ही है, क्योंकि जो विश्व ऊर्जा और आत्मा की कार्य-विधियों को जानते हैं, वे इसके लिए तैयार थे। मुझे स्वयं इसका पूर्वाभास हो गया था कि यह अधमतम अवस्था आएगी, अरुणोदय के पहले की काली रात; इसलिए मैं हताश नहीं हूं। मैं जानता हूं कि इस अंधकार के पीछे कैसी तैयारी हो रही है और उसके आगमन के प्रथम लक्षणों को देख और महसूस कर सकता हूं। जो ईश्वर को खोजना चाहते हैं, उन्हें अपनी खोज में दृढ़ होकर लगे रहना होगा; कुछ समय बाद अंधकार फीका पड़ जाएगा और तिरोहित होने लगेगा तथा प्रकाश आ जाएगा।

अंधकारपूर्ण स्थितियां मुझे हताश नहीं करतीं, क्योंकि मैं जानता था कि उन्हें आना ही था; वे विश्व की प्रकृति में ही विद्यमान थीं और उनको उभरना पड़ा, ताकि वे समाप्त हो जाएं अथवा बाहर निकाल दी जाएं और उनसे मुक्त होकर एक बेहतर संसार आ जाए।

उदाहरण के लिए, भारत स्वाधीन हो गया है। उसे अभी जो कठिनाइयां घेरे हुए हैं और जो कुछ समय के लिए बढ़ भी सकती हैं, विशेषकर पाकिस्तान संबंधी उलझन से, वे भी आनी ही थीं और साफ की जानी थीं। उससे अनिवार्य संघर्ष को रोकने के किए जा रहे प्रयत्न अधिक समय तक सफल नहीं हो पाएंगे... यहां भी पूरी सफाई निश्चित है, यद्यपि दुर्भाग्य से इस प्रक्रिया में काफी परिमाण में मानव पीड़ा अपरिहार्य है। बाद में ईश्वर का कार्य अधिक संभव हो जाएगा और वह हो सकता है कि विश्व को आध्यात्मिक प्रकाश की ओर ले जाने का स्वप्न साकार हो जाए। इसलिए इन अंधकारपूर्ण परिस्थितियों में भी विश्व की सहायता के लिए जो संकल्प मैंने किया है, उसके भाग्य में असफलता लिखी है, ऐसा मानने को मैं तैयार नहीं हूं।

यह विश्व प्रकृति की अंध-शक्तियों द्वारा सृजित नहीं है; अचेतन में भी परम सत्य की उपस्थिति क्रियाशील रहती है; उसके पीछे एक द्रष्टा शक्ति होती है, जो अचूक रूप से कार्य करती है।

यह विश्व वास्तव में प्रकृति की अंध-शक्तियों द्वारा सृजित नहीं है; अचेतन में भी परम सत्य की उपस्थिति क्रियाशील रहती है; उसके पीछे एक द्रष्टा शक्ति होती है, जो अचूक रूप से कार्य करती है।... इस विशाल और ऊपर से भ्रमित लगने वाली अस्तित्व की राशि में भी एक विधान है, अस्तित्व का एक सत्य है, विश्व अस्तित्व का एक मार्गदर्शक और पूरक प्रवोजन है।

श्री अरविंद

इमैनुएल मैक्रों | फ्रांसीसी राष्ट्रपति

डॉ मनमोहन सिंह के रूप में भारत ने एक महान व्यक्ति और फ्रांस ने अपना सच्चा मित्र खो दिया है। उन्होंने अपना जीवन देश के लिए समर्पित कर दिया था। हमारी संवेदनाएं भारत के लोगों के साथ हैं।

अनुलोम-विलोम
कांग्रेस स्थापना दिवस

नाउम्मीदी के दौर में उम्मीद की किरण

आज कांग्रेस का स्थापना दिवस है। लोकसभा चुनाव के बाद हुए हरियाणा व महाराष्ट्र के विधानसभा चुनावों के नतीजों ने एक बार फिर से आलोचकों को उसके खात्मे की भविष्यवाणी करने का अवसर दे दिया है, मगर वास्तव में ऐसा है नहीं। 28 दिसंबर, 1885 से लेकर आज तक इन 139 वर्षों में न जाने कितने मौके आए हैं, जब देश की इस सबसे पुरानी सियासी पार्टी को समाप्त हुआ मान लिया गया, परंतु फीनिक्स पक्षी की तरह हर बार यह अपनी राख से जीवित होती रही। इस बार भी यही होगा और कांग्रेस साल 2029 तक मजबूत स्थिति में आ जाएगी।

दरअसल, कांग्रेस का डीएनए सबको साथ लेकर चलने वाला है और इसकी सर्वस्वीकार्य विचारधारा के कारण ही बतौर संगठन इसे एक मजबूत गठबंधन बनाने में कभी किसी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। यूपीए-1 और यूपीए-2 में कांग्रेस के सहयोगी घटक दलों को केंद्र से खूब मदद मिली। इसी तरह, कट्टरवाद की विचारधारा से असहमत लोगों के लिए भी कांग्रेस एक उम्मीद की किरण की तरह है। देश के सभी अल्पसंख्यकों को इसके कार्यकाल में जिस सुरक्षा का एहसास होता है, वह किसी अन्य या गठबंधन की सरकार में शायद ही हो सका। चूंकि देश में एक बड़ी आबादी इन तबकों की है, तो उनका एकमात्र भरोसा कांग्रेस ही है। इसी तरह, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़े वर्ग में भी इस पार्टी का व्यापक जनाधार रहा है। कांग्रेस हमेशा से उनके उत्थान का खुलकर समर्थन करती आई है। जातिगत गणना की मांग व आबादी के हिसाब से हिस्सेदारी की वकालत ने इसे पिछड़े समाज के पैरोकारों में सबसे आगे लाकर खड़ा किया है।

कांग्रेस सबको साथ लेकर चलने में विश्वास करती है। महिलाओं को शिक्षा-रोजगार देने का कार्य जो कांग्रेस के दौर में हुआ, उसी का नतीजा है कि महिलाएं आज बराबरी पर खड़ी हैं। देश को पहली महिला राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष देने का कार्य भी कांग्रेस ने ही किया है और एक महिला सोनिया गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष के पद पर सबसे लंबा कार्यकाल बिताया है। इस पार्टी ने अपनी स्थापना के समय से ही देश के गरीबों, दबे-कुचले लोगों और मुख्यधारा से पीछे छूटे लोगों की आवाज उठाई है। चाहे गांधीजी की डांडी यात्रा रही हो या फिर राहुल गांधी की हालिया भारत जोड़ो यात्रा, कांग्रेस ने हमेशा आम आदमी से सीधा संवाद करके सत्ता में बैठे लोगों को आईना दिखाया। उम्मीद है, वह सिलसिला आगे भी जारी रहेगा और कांग्रेस अपने सुनहरे दिनों की ओर फिर से लौट सकेगी।

नरेश पाराशर, टिप्पणीकार

वाकई बूढ़ी हो गई यह सियासी पार्टी

जब नेता किसी दल का गठन करते हैं, तो उसके कुछ मौलिक सिद्धांत और विचार तय किए जाते हैं, जिनके आधार पर वे भविष्य की अपनी योजनाएं बनाते हैं। किंतु कांग्रेस के मामले में वास्तविकता इससे परे ही मानी जाएगी। इसकी स्थापना भारतीय जनमानस में अपनी पैठ बनाने के लिए एक अंग्रेज ने की थी, पर उस काल-खंड के कुछ प्रारंभिक क्रांति नायकों ने कांग्रेस को भारतीय महत्ता को समझा और इसे अंग्रेजी शासन की जड़ खोदने वाला हथियार बना दिया। स्वतंत्रता से पूर्व और पश्चात जहां बहुत से योग्य नेताओं ने इसका कुशल नेतृत्व किया, तो वहीं शीर्ष पदों पर कुछ अयोग्य लोगों की कब्जेदारी ने इसे नुकसान भी पहुंचाया। नतीजतन, कई बार पार्टी टूटी भी और अब तो यह अपने निचले स्तर पर है।

वर्तमान में कांग्रेस को अपने शीर्ष पर योग्यतम व्यक्ति को पदासीन करके उसे मुक्त-हस्त से कार्य करने देने की जरूरत है, लेकिन दिक्कत यही है कि यह अपनी कार्यशैली से बाहर निकलना ही नहीं चाह रही है। आज भी नेहरू-गांधी परिवार के नेता राहुल गांधी ही इसके मूल कर्ता-धर्ता बने हुए हैं, हालांकि, औपचारिक रूप से मल्लिकार्जुन खरगे को नेतृत्व सौंपा जा चुका है। इसके कारण पार्टी के जनाधार में वृद्धि के बजाय लगातार कमी ही आ रही है। विधानसभा चुनावों को छोड़ भी दें, तो लोकसभा चुनाव में भी इस पार्टी का जैसा प्रदर्शन रहा, वह यही बताता है कि इस 'ग्रैंड ओल्ड पार्टी' के दिन लद चुके हैं। कांग्रेस के शीर्ष नेताओं का असहज करने वाला व्यक्तिगत स्वभाव, सामाजिक-शैक्षणिक और आर्थिक विषयों की अपेक्षाकृत अल्प जानकारी तथा विषय-विशेषज्ञों व जमीनी नेताओं को अनसुना किया जाना, उसके क्षरण का बड़ा कारण माना जाएगा। भारतीय राजनीति इतनी व्यापकता वाली है कि इसमें कोई भी नेता बिना पूर्णकालिक हुए जनता के मानस को न तो समझ सकता है और न ही उस पर अपना पूर्ण प्रभाव डाल सकता है। मगर कांग्रेस के नेता अपने कार्यकर्ताओं में ऊर्जा पैदा करने के बजाय खुद ही छुट्टी मनाने में विश्वास करते हैं। ऐसा करते हुए वे यह भूल जाते हैं कि उनका मुकाबला उस राजनीतिक पार्टी से है, जिसके नेता दिन-रात लोगों के बीच रहते हैं और जनहित के कामों में लगे रहते हैं।

साफ है, कांग्रेस यदि फिर से खड़ी होना चाहती है, तो उसे ऊपर से नीचे तक सांगठनिक बदलाव करना होगा। जब तक पार्टी अपने आम कार्यकर्ताओं की सुध नहीं लेगी, तब तक वह शायद ही जनता के मन को भा सकेगी। इसका लगातार घटता जनाधार कम से कम यही संकेत देता है।

दिनेश सिंह, टिप्पणीकार

33 हाथी रिजर्व स्थापित किए जा चुके हैं भारत में। हाथियों के संरक्षण में स्थानीय लोगों की भागीदारी बढ़ी तो भारत में हाथियों के पर यानी वन सुरक्षित रहेंगे।

इस्लामिक कट्टरता

भारत के लिए बढ़ती रणनीतिक चुनौतियां

ड. मानन द्विवेदी
असिस्टेंट प्रोफेसर, आइआइपीए, नई दिल्ली

ड. गायत्री दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफेसर, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

शेख हसीना सरकार को अपदस्थ किए जाने के बाद से बांग्लादेश की राजनीति में भारत विरोधी स्वर सुनने को मिल रहे हैं। इतना ही नहीं, जिस पाकिस्तान से तंग आकर बांग्लादेश को एक राष्ट्र के रूप में उभरने में भारत ने मदद की, उसी भारत के लिए वह अब चुनौती भी बनता जा रहा है। पाकिस्तान से बांग्लादेश की गलबहियां बढ़ रही हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी नए समीकरण सामने आ रहे हैं। लिहाजा, भारत को इस्लामिक कट्टरता से निपटने के लिए नए सिरे से रणनीति बनानी होगी

इस्लामिक कट्टरवाद एक जटिल विषय है जो अपने दुष्प्रभाव और खतरनाक परिणामों के कारण व्यापक है। भारतीय संदर्भ में पंथनिरपेक्षता के उदय ने राष्ट्रीय चरित्र के निर्माण और उसके बाद के संरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया। इसके बावजूद कट्टरपंथी राज्य का चेहरा, जिसमें पश्चिमी देशों और संस्थानों सहित वैश्विक खिलाड़ी शामिल हैं, भारत और दक्षिण एशिया की शांति को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाते हैं और अंततः व्यापक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को प्रभावित करते हैं।

बांग्लादेश का अध्ययन एक अलग दृष्टिकोण से तैयार किया गया है, जहां हिफाजत-ए-इस्लाम और जमात-ए-इस्लामी जैसे इस्लामी कट्टरपंथी समूहों ने बांग्लादेश के भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण प्रभाव कायम किया है। इसके अतिरिक्त, ढाका में हालिया आयोजित एक समारोह के दौरान कुछ पाकिस्तानी और बांग्लादेशी राजनयिकों ने जिन्ना को याद करते हुए जोर दिया कि 'दोनों देशों, बांग्लादेश और पाकिस्तान के लिए मोहम्मद अली जिन्ना को बांग्लादेश के लिए भी राष्ट्रपिता के रूप में सम्मानित किया जाना चाहिए।'

वहीं बांग्लादेश के मोंगला और चटगांव में पाकिस्तानी व्यापारिक जहाज की डाकिंग को नियमों में छूट को ढाका और इस्लामाबाद के बीच एक नए प्रकार के संबंधों के रूप में देखा जा रहा है। पाकिस्तान और बांग्लादेश अपने संबंधों को सुधारने का प्रयास कर रहे हैं, क्योंकि बांग्लादेश में अंतरिम सरकार के सलाहकार मोहम्मद यूनुस को नई दिल्ली और ढाका के सौहार्द को चुनौती देने के लिए इस्लामी एजेंडे के रूप में उपयोग किया गया है। ढाका में सत्ता परिवर्तन, अवामी लीग समर्थित छात्र कार्यकर्ताओं और जिहादियों के बीच मिलीभगत से हुआ, जिन्होंने कुछ महीने पहले शेख हसीना सरकार को हटाया था। उस समय नई दिल्ली ने शेख हसीना के शासन को बनाए रखने के लिए राजनयिक प्रयास किए, लेकिन सफलता नहीं मिली। फिर भी पाकिस्तान और पूर्वोत्तर के विद्रोहियों की मिलीभगत से बांग्लादेश में इस्लामिक कट्टरपंथी ताकतों को नियंत्रित करना भारत के लिए हमेशा चुनौती रहा है। यहां तक कि पाकिस्तान में भी इस्लामाबाद की राजनीतिक व्यवस्था, अफगानिस्तान की कट्टरपंथी ताकतों और बलूचिस्तान व नार्थ वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी में भड़कों जा रही अशांति से खतरा है। जहां तक भारत का संबंध है, हमें एक स्थिर पड़ोसी की आवश्यकता है, जो कम से कम अपने घर को नियंत्रित कर सके। पाकिस्तान में व्याप्त बेलगाम आतंक से भारत भी दुष्प्रभावित हो सकता है। साथ ही, पाकिस्तान के नियंत्रण से गुलाम जम्मू कश्मीर को वापस पाने के भारत के प्रयासों में बाधा डाल सकता है। भारत को पहले ही अमेरिका, रूस और तुर्किए जैसे देशों के साथ इस मामले में मेहनत करनी पड़ी है।

हिंदुओं पर अत्याचार : अगस्त में शेख हसीना के इस्तीफे और घटनाक्रम की एक नाटकीय श्रृंखला के बाद देश छोड़ने के एक दिन बाद भोंगु ने एक लाख के परिसर में जबरन प्रवेश किया और कई मूर्तियों को तोड़ दिया। इन मूर्तियों को छोड़कर संपत्ति को कोई अन्य नुकसान नहीं हुआ। करीब 1,500 कलाकृतियों और मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया है। इनमें से कई मूर्तियां बांग्लादेश के संस्थापक मुजीबुर रहमान की थीं, जो भारत-पाकिस्तान के बीच 1971 के युद्ध में भारतीय सेना की वीरता के कारण ढाका को मुक्त करने में सक्षम हुए।

बांग्लादेश में रक्षा प्रतिष्ठानों और खुफिया एजेंसियों में बढ़ते कट्टरपंथ का खतरा भी बना हुआ है। वर्ष 1971 में भारत द्वारा बांग्लादेश की मुक्ति से पहले ढाका के प्रशासन ने कट्टरता, उग्रवाद और धार्मिक कट्टरता के खतरों का सामना किया है। जमात-ए-इस्लामी नामक एक आतंकवादी गुट ने मुक्ति आंदोलन को कुचलने के लिए पाकिस्तानी सेना के साथ सहयोग किया। वहां के एक पोर्टल ने यह रिपोर्ट किया है कि आइएसआइ का ध्यान केवल इस्लामी समूहों तक सीमित नहीं है, बल्कि भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में सक्रिय उल्फा और एनएससीएन- आइएम जैसे विद्रोही समूहों तक भी फैला हुआ है। प्रमाण बताते हैं कि उल्फा का शीर्ष कैडर ढाका में पाकिस्तानी उच्चायोग के संपर्क में था और कई मौकों पर फर्जी नामों और पाकिस्तानी पासपोर्ट के साथ पाकिस्तान की यात्रा कर चुका है।

भारत की विदेश नीति में सुधार : प्रधानमंत्री मोदी और भारतीय विदेश मंत्रालय ने जिस तरह से पश्चिम एशिया में भारत की विदेश नीति को सुधारने और भारत-पश्चिम एशिया आर्थिक गलियारे को यूरोप तक बढ़ाने के लिए मेहनत की है, वह उल्लेखनीय है। मुस्लिम देशों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाना भारत के लिए वरदान हो सकता है, जो इस्लामी दुनिया के नेता होने का दावा करने वाले इस्लामाबाद के राजनीतिक प्रभाव को सीमित कर सकता है।

भारत सहित पूरी दुनिया दो वैश्विक भू-रणनीतिक व भू-राजनीतिक ध्रुवों में बंट रही है। अमेरिका और पश्चिम के नेतृत्व वाले खेमे में भारत, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड क्वाड समूह के रूप में एक साथ आ रहे हैं। दूसरी ओर रूस, चीन, ईरान और उत्तर कोरिया जैसे देशों का दूसरे खेमे का निर्माण हो रहा है। शीत युद्ध के बाद की स्थिति में ये दो ब्लाक एक-दूसरे के खिलाफ खड़े नजर आते हैं। कहा जा सकता है कि इस्लामी कट्टरवाद का खतरा भारत और अमेरिका जैसे देशों के लिए एक रणनीतिक सहयोग और अभिसरण बिंदु साबित हो रहा है।

भारत-बांग्लादेश सीमा पर बाड़बंदी के बावजूद कई स्थानों पर नदियों के मध्यम से हो रहे घुसपैठ को नियंत्रित करना बड़ी चुनौती है। फाइल

बांग्लादेशी घुसपैठियों पर सख्त नियंत्रण

मुनीष त्रिपाठी
वरिष्ठ पत्रकार

विधानसभा चुनाव नजदीक आने के कारण दिल्ली में राजनीतिक माहौल गर्म है। इस बीच एक बार फिर से यहां बांग्लादेशी घुसपैठियों का मुद्दा सुर्खियों में है। खुफिया रिपोर्ट के अनुसार, दिल्ली-एनसीआर सहित देश के प्रमुख महानगरों में ये घुसपैठिये बस गए हैं। लाखों बांग्लादेशी घुसपैठिये देश की सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन चुके हैं। राजनीतिक कारण और कमजोर इच्छाशक्ति के चलते अब तक इस गंभीर समस्या की अनदेखी की गई। हालांकि हाल ही में उपराज्यपाल के आदेश के बाद दिल्ली पुलिस द्वारा घुसपैठियों और रोहिंग्याओं के खिलाफ तलाशी अभियान शुरू किया गया है। वस्तुतः ये घुसपैठिये दिल्ली-एनसीआर में हत्या, लूट, डकैती, चोरी और अन्य आपराधिक वारदात को अंजाम देते हैं, जिस कारण यहां अपराध का ग्राफ तेजी से बढ़ा है। बांग्लादेशी और रोहिंग्या मुस्लिमों के लिए दिल्ली-एनसीआर एक सुरक्षित ठिकाना बनता जा रहा है। हाल के दिनों में दिल्ली में बड़ी संख्या में इनकी पहचान की गई है।

इस बीच सर्वोच्च न्यायालय द्वारा रोहिंग्याओं की प्रत्यावर्तन के खिलाफ पैरवी करने की याचिका को खारिज करने के बाद भी सरकार रोहिंग्याओं को वापस म्यांमार भेजने में असमर्थ दिख रही है। भारत में घुस आए रोहिंग्या मुसलमानों को वापस भेजना इसलिए भी जरूरी है, क्योंकि ये लोग म्यांमार में हिंसा के दौरान वहां से भाग कर नहीं, बल्कि साजिश के तहत पिछले एक दशक के दौरान आए हैं। आरोपा इसलिए भी उठ रही है कि असम और बंगाल के शरणार्थी कैंपों को छोड़कर इतनी दूर ये दिल्ली और जम्मू तक कैसे पहुंच गए? गौरतलब है कि वर्ष 2010 से लेकर अब तक रोहिंग्या और बांग्लादेशी घुसपैठियों की संख्या में करीब चार गुना बढ़ोतरी दर्ज की गई है। जम्मू और दिल्ली में अब इन अवैध घुसपैठियों की बायोमीट्रिक, फिंगरप्रिंट, पासपोर्ट, शरणार्थी कार्ड आदि की जानकारी जुटाना शुरू किया गया है। यह कार्रवाई केंद्रीय गृह मंत्रालय के आठ अगस्त 2017 को सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को लिखे पत्र का संज्ञान लेकर की गई है। इस पत्र में गृह मंत्रालय ने भारत में घुसपैठियों की बढ़ती संख्या और उससे पैदा होने वाले राष्ट्रीय सुरक्षा संकट पर गंभीर चिंता व्यक्त की थी। भारत में घुस आए रोहिंग्याओं के राष्ट्रविरोधी गतिविधियों में संलिप्त होने के सबूत भी समय समय पर मिलते रहे हैं।

बीते दिनों एक प्रश्न के उत्तर में गृह मंत्री ने राज्यसभा में बताया था कि वर्ष 2018 से 2020 के बीच भारत में अवैध रूप से प्रवेश करने का प्रयास करने वाले तीन हजार लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें सर्वाधिक संख्या बांग्लादेश एवं म्यांमार के रोहिंग्या घुसपैठियों की है। मात्र दो वर्षों में तीन हजार घुसपैठिये तो गिरफ्तार किए गए, परंतु पिछले दो दशकों में न जाने कितने घुसपैठिये भारत में घुसकर कहां-कहां बस गए होंगे, इसकी पड़ताल करना अब बहुत मुश्किल है। जांच में यह बात भी सामने आई है कि इन घुसपैठियों को भारत में बसाने के लिए पाकिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब आदि मुस्लिम देशों से हवाला फंडिंग की जा रही है। भारत की खुफिया एजेंसियां अब इनकी जांच में जुटी हुई हैं। बहुत से रोहिंग्या घुसपैठियों ने संबंधित एजेंटों के साथ मिलीभगत करके राशन कार्ड, आधार कार्ड तथा वोटर कार्ड आदि बनवा लिए हैं। एक और चिंता की बात यह है कि इनके बच्चे बहुत ज्यादा हैं जिससे उनकी पहचान करना भी मुश्किल हो रहा है। परंतु इन तमाम दिक्कतों के बावजूद सत्यापन-प्रक्रिया पूरी प्रामाणिकता के साथ पूर्ण की जानी चाहिए और अवैध घुसपैठियों की पहचान करते हुए उन्हें वापस उनके देश भेजने का इंतजाम किया जाना चाहिए, ताकि इस समस्या को सख्ती से नियंत्रित किया जा सके।

खरी-खरी

साहित्य जगत के कचरा सेठ

विनोद कुमार विक्की

इन दिनों साहित्य कबाड़ उद्यम के रूप में महिला उद्यमी काफी सफल मानी जाती हैं। दो चार लाइन की तुकबंदी पर अपने पोज वाली तस्वीरें डालकर इंटरनेट मीडिया पर महफिल लूट लेती हैं। इंटरनेट मीडिया पर इनकी अंगड़ाई भी कालजयी होती है। सुबह-सुबह इनके द्वारा शायरी/ गजल/ व्यंग्य के रूप में कचरा बिखेरने मात्र की देर है, उन उत्पादों पर लाइक, कमेंट्स के साथ साहित्यकार मित्रों की लंबी फौज 'वाह-वाह, बहुत खूब, क्या बात, शानदार, जबरदस्त' आदि का राग अलापने लगते हैं।

ऐसे कलमवीरों की प्रेषित रचनाएं जब बिना संपादन के किसी 'इलाका एक्सप्रेस' वाले समाचार पत्र या पत्रिका में छपती है, तो इनकी रचना मात्र के छप जाने से वह पत्र-पत्रिका राष्ट्रीय, ख्यातिनाम, बहुचर्चित एवं सर्वाधिक लोकप्रिय हो जाती है। फिर इन कचरा सामग्री को फेसबुक मंडी में रखा जाता है। तत्पश्चात दैनिक ग्राहक (फेसबुक मित्रों) एवं कचरा सेठ (लेखक) के बीच बधाई और धन्यवाद का विनिमय-वितरण चलता रहता है। इन साहित्यिक कचरा की लांच करने वाली कंपनी के जो मालिक (संपादक) होते हैं, उनकी शुक्रिया रूपी शब्दों से मालामाल करते हुए कचरा सेठ द्वारा तत्काल नकद भुगतान कर दिया जाता है। जिस कंपनी (पत्र या पत्रिका के अंक) ने इनके कचरे (रचना) का निपटान (प्रकाशित) किया, उस कंपनी को सर्वश्रेष्ठ और कंपनी के आदरणीय मालिक (संपादक) को सदाशयी, मिलनसार और मार्गदर्शक के संबोधन से संबोधित किया जाता है।

इंटरनेट मीडिया सहिष्णुता वाला ऐसा प्लेटफार्म है, जहां हर तरह की मालगाड़ी का ठहराव होता है। जैसे ही इस प्लेटफार्म पर ये अपनी मालगाड़ी का माल गिराते हैं कि इनके कचरा माल पर लाइक की बोहनी हो जाती है। लेकिन मजे की बात यह है कि फेसबुक पर कभी कोई इन कचरा सेठ के कचरा प्रोडक्ट (रचना) को कचरा कहने की जहमत नहीं उठाता और इस प्रकार आभासी दुनिया में कचरा सेठों के बीच साहित्यिक सहिष्णुता और आपसी भाईचारा कायम रहता है।

पोस्ट

भारत ने मनमोहन सिंह के रूप में अपनी सर्वकालिक महान शख्सीयत में से एक को खो दिया। जब देश संघर्ष कर रहा था, तब उन्होंने डटकर काम किया। उन्होंने ऐसे योगदान दिए, जिन्हें हम कभी नहीं भूलेंगे, लेकिन उनके कार्यकाल के अरिश्री कुछ साल उम्मीद के मुताबिक नहीं रहे।
हार्दिक राजगोर@Hardism

शालीन, सुशिक्षित और शास्त्री जी की तरह ईमानदार प्रधानमंत्री ड. मनमोहन सिंह का निधन देश ही नहीं, विश्व के लिए भी अपूरणीय क्षति है। उनके सत्ता में आने पर ऐसी उम्मीदें जगी थीं, जैसी चीन में देंग शियाओ पिंग ने जगाई थीं। काश उनके पास ऐसी राजनीतिक शक्ति होती। विनम्र श्रद्धांजलि।
शिव कांत@shivkant

ड. मनमोहन सिंह को भारत के सबसे बेहतरीन प्रधानमंत्रियों में से एक के रूप में याद किया जाएगा। अर्थव्यवस्था में उनके सुधारों के बिना भारत उस 'समाजवादी' दलदल में फंसा रहता, जिसमें दशकों तक भारत को गरीब बनाए रखा। तवलीन सिंह@tavleen_singh

जागरण जनमत — कल का परिणाम

क्या दिल्ली में आम आदमी पार्टी के खिलाफ कांग्रेस का रुख आइएनडीआइए के टूटने का संकेत है?

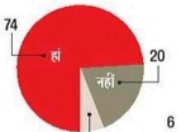

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज तक सवाल

क्या 15 लाख सालाना वेतन आयकर से मुक्त किया जाना चाहिए?

परिणाम जागरण डॉट नेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

बंगलादेशी नागरिक भरे पड़े हर ओर,
घुस आए हैं देश में सारे बनकर चोर।
सारे बनकर चोर रुन्हें अब करो इकट्ठा,
दो ग्रुप्स को गिफ्ट भेजिए जत्था पर जत्था।
ढाका से जो बात कर रहे ऐसी-वैसी,
उन्हें लाख दो लाख भेजिए बंगला देशी!
- ओमप्रकाश तिवारी

अरुण अशेष
राज्य ब्यूरो प्रमुख, बिहार

बिहार डायरी

भाजपा-जदयू की दोस्ती जरूरी और मजबूरी भी

मौसम का प्रभाव फसलों और व्यापार पर भले ही पड़ जाए, बिहार की राजनीति इससे बेअसर रहती है। इसका अपना मौसम है। ठंड का मौसम है। यहां की राजनीति गरमाई हुई है। बिभर्श का विषय यह है कि राजग अगले साल होने वाले विधानसभा चुनाव में मुख्यमंत्री पद के लिए किस चेहरे की प्रस्तावित करेगा? वैसे, यह विभर्श कुछ महीने पहले इस समाधान के साथ समाप्त हो गया था कि नीतीश कुमार ही अगली बार भी इस पद के लिए प्रस्तावित होंगे। इस बीच, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मुंह से निकल गया कि चेहरा का निर्णय सभी घटक दलों के विचार से होगा। इसके बाद राजनीति गर्म हो गई। नीतीश कुमार ने चुप्पी साध ली। भाजपा को उनकी अप्रसन्नता का पता चला तो उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी का वक्तव्य आया- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में चुनाव लड़ा जाएगा।

उधर, जदयू की त्वरित प्रतिक्रिया एक पोस्टर के माध्यम से प्रकट हुई- जब बात बिहार की हो, नाम सिर्फ नीतीश कुमार का हो। उसके बाद भाजपा ने कहना शुरू किया कि नीतीश कुमार के नेतृत्व में ही चुनाव होगा। यह विवाद की समाप्ति के लिए पर्याप्त था। लेकिन इस पूरे घटनाक्रम में जदयू में यह संदेश भेज दिया गया कि 2025 में कम विधायक रहने पर भाजपा अपना मुख्यमंत्री बनाएगी। इसे धारणा के रूप में परिवर्तित करने के लिए महाराष्ट्र का उदाहरण दिया गया- कम विधायक संख्या के कारण एकनाथ शिंदे दूसरी बार मुख्यमंत्री नहीं बन पाए।

यहां राजनीति इतनी सूक्ष्म रूप चलती है कि हर चर्चा का गुप्त निहितार्थ निकाल लिया जाता है। कुछ महीने पहले लोजपा रा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान ने नीतीश कुमार को मात्र रत्न देने की मांग की थी। इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। यही मांग केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने की। जदयू के मुख्य प्रवक्ता नीरज कुमार की प्रतिक्रिया आई कि मुख्यमंत्री को किसी पुरस्कार की जरूरत नहीं है। गिरिराज की मांग का गुप्त निहितार्थ यह निकाला गया कि भारत रत्न के बहाने भाजपा नीतीश को मुख्यधारा की राजनीति से अलग करना चाहती है। उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने अटल बिहारी वाजपेयी की याद में आयोजित समारोह में कह दिया कि अटलजी को सच्ची श्रद्धांजलि बिहार में भाजपा की अपनी सरकार बनने पर ही मिलेगी। सिन्हा कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए यह सब बोल गए, परंतु तुरंत उन्होंने संभावित परिणाम का आकलन किया। बिना क्षण गंवाए वक्तव्य में सुधार कर दिया- नीतीश कुमार तो वाजपेयी के सबसे बड़े चहेते थे। उन्होंने ही राज्य में जंगलराज को समाप्त किया। फिर गुरुवार को एनडीए के घटक दलों को थोड़ी राहत महसूस हुई, क्योंकि नीतीश की प्रगति यात्रा में उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी शामिल हो गए थे।

प्रगति यात्रा के दौरान नीतीश कुमार (दाएं), सम्राट चौधरी (दाएं से दूसरे) और अन्य नेता। जागरण

असल में यह सब अनायास नहीं हो रहा है। वर्ष 1996 में जब समता पार्टी और भाजपा के बीच चुनावी गठबंधन हुआ था, वह सामान्य दोस्ती थी। लालू प्रसाद को सत्ता से हटाना इसका प्रधान लक्ष्य था। उसके चार साल बाद 2000 में नीतीश कुमार सात दिनों के लिए मुख्यमंत्री बने। उसी साल नवसृजित झारखंड में भाजपा की सरकार बन गई। वर्ष 2010 तक दोनों दलों के बीच संबंध सामान्य रहा। उसके बाद दोनों तरफ से होशियारी होने लगी। परिणति 2013 में अलगाव के रूप में हुई। यह प्रेम की दोस्ती का धागा टूटने जैसा हुआ। वर्ष 2017 में यह धागा जुड़ा। लेकिन गांठ पड़ गई। वहीं गांठ जब तब संबंधों के सामान्य प्रवाह में अवरोध उत्पन्न कर देती है।

आज की तिथि में कहें तो दोनों दलों का संबंध राजनीतिक नफा-नुकसान के सिद्धांत पर चल रहा है। इसमें डर भी है। राजद अध्यक्ष लालू प्रसाद का डर। यह डर बड़ी है, जिससे निबटने के लिए 1996 में भाजपा-जदयू एकसाथ आए थे। तब से लेकर आज तक बिहार में बहुत कुछ बदल गया। सिर्फ लालू प्रसाद का डर नहीं बदला है। इस डर को बड़े जतन से संजो कर रखा गया है। राजनीतिक दलों में भाजपा ही एकमात्र पार्टी बची है, जो लंबे समय से लालू प्रसाद और उनकी पार्टी राजद से आमने-सामने लड़ती रही है। केवल वर्ष 1990 में भाजपा ने लालू प्रसाद की सरकार का समर्थन किया था। वर्ष 1995 में मुख्य विपक्षी पार्टी बनी थी। तब से उसका विरोध जारी है। बीच के वर्षों में ऐसा कोई दल नहीं रहा, जिसने लालू प्रसाद का समर्थन न किया हो। इसमें जदयू भी शामिल है। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि लालू प्रसाद का विरोध भाजपा की बड़ी पूंजी रही है। उसे इसका लाभ भी मिला है। इस समय वह बिहार विधानसभा में 80 सदस्यों के साथ सबसे बड़ी पार्टी है। विजय सिन्हा ने वाजपेयी की सच्ची श्रद्धांजलि के नाम पर अपनी सरकार की जिस भावना की अभिव्यक्ति की थी, वह भाजपा के कार्यकर्ताओं की असली भावना है।

सच यह भी है कि बिहार की राजनीति में भाजपा-जदयू की दोस्ती जरूरी भी है और मजबूरी भी है। भारतीय जनता पार्टी भी इसे समझती है। तभी तो जदयू की छींक आती है तो भाजपा बुखार में तपने लगती है।

मंथन

हाथियों के प्रति संवेदनशीलता

अरविंद कुमार मिश्रा
लोक नीति विश्लेषक

पारिस्थितिकी तंत्र का अभियंता कहा जाने वाला हाथी भारत की अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार रहा है। परंतु बीते कुछ दशकों से कई कारणों से इनकी संख्या कम हो रही है, जो चिंतनीय है

मध्य प्रदेश के बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में पिछले महीने दस हाथियों की मौत ने वन्य जीवों के संरक्षण के प्रति उदासीनता को उजागर किया है। हाथियों की मौत की प्रारंभिक वजह जंगली कोदो का सेवन बताया जा रहा है। हाथियों की पारिस्थितिकी तंत्र का अभियंता भी कहा जाता है। देश में हाथी को राष्ट्रीय विरासत पशु का दर्जा प्राप्त है। वे घने जंगलों में अन्य जीवों के लिए राह बनाते हैं। एक हाथी रोजाना औसतन 50 से 60 वर्ग किमी के दायरे में विचरता है। इससे बीज एवं परागकण काफी दूर तक फैल जाते हैं। हाथी आहार प्रक्रिया के दौरान बड़ी-बड़ी टहनियों, पत्तियों आदि को जमीन पर गिराते हैं। इससे छोटे जीवों को पौषक आहार मिल पाता है। हाथियों के द्वारा उत्सर्जित अपशिष्ट अनेक जीवों के लिए भोजन एवं आवासीय परितंत्र बनाता है।

जैव विविधता के लिए अत्यंत महत्व रखने वाले हाथियों की संख्या में पिछले कुछ दशकों में अभूतपूर्व गिरावट आई है। संसद में प्रस्तुत एक रिपोर्ट के अनुसार, पिछले पांच साल में 528 हाथियों की मौत असामान्य परिस्थितियों में हुई है। शिकार, विषाक्तता, बिजली का करंट और ट्रेन दुर्घटना हाथियों की मौत की सबसे बड़ी वजह बनती हैं। पिछले पांच साल में 392 हाथी करंट लगने की वजह से मृत पाए गए, जबकि 73 की मौत ट्रेन से टकराकर हुई। भारत विश्व में एशियाई हाथियों (एलिफस मैक्सिमस) का सबसे सुरक्षित घर है। हाथी परियोजना की 2017 की गणना के अनुसार, इनकी संख्या लगभग 30 हजार होने का अनुमान है। हालांकि वर्नों में बढ़ते मानवीय दखल की वजह से यह लुप्तप्राय प्रजातियों की अंतरराष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ की लाल सूची में संकटग्रस्त प्रजाति के रूप में सूचीबद्ध है। मानव-हाथी द्वंद्व की वजह से एशियाई हाथी को भले ही हिंसक रूप रेखांकित किया जाने लगा हो, लेकिन हजारों वर्षों से इसकी पहचान एक सामाजिक पशु के रूप में रही है।

बसाहट में दखल : पिछले कुछ वर्षों में मनुष्यों और हाथियों के बीच संघर्ष के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। मानवीय बसाहट में हाथियों के दाखिल होने से खेतों में खड़ी फसल चौपट हो जाती है। ऐसी घटनाओं से गांव वाले हाथियों को खदेड़ने के लिए कई बार हिंसक उपाय भी करते हैं। इसका नतीजा जानमाल के नुकसान के रूप में सामने आ रहा है। विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि कंटीले तार, कैक्टस रोपण, पटाखा फोड़ने जैसे अव्यावहारिक समाधानों की वजह से भी हाथी हिंसक हुए हैं। हाथियों को भगाने के लिए कई बार पीटाश बम से उन्हें मौत के घाट उतारने जैसी घटनाएं भी सामने आई हैं। लोकसभा में प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार पिछले पांच वर्ष में मानव-हाथी संघर्ष की वजह से 2,853 लोगों की जान गंवानी पड़ी। हाथियों समेत वन्यजीवों के संरक्षण हेतु केंद्र और राज्यों के स्तर पर नीतिगत और वैधानिक कई प्रयास हुए हैं। इनमें वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972, भारतीय वन अधिनियम, 1927 तथा राष्ट्रीय वन नीति, 1988 सहायक हैं।

हाथियों की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार ने राज्यों के साथ मिलकर लगभग 150 हाथी गलियारे चिह्नित किए हैं। देश में लगभग 110 रेल खंड ऐसे हैं, जो हाथियों के आवास से होकर गुजरते हैं। इन रेल खंडों में हाथियों को रेल दुर्घटना से बचाने के लिए सेंसर, ड्रोन आधारित सेवाएं उपयोग में लाई जानी चाहिए। इन स्थानों पर अंडरपास, पटरियों के किनारे पेड़-पौधे की सफाई के साथ रैंप निर्माण किए गए हैं। हाथियों के अवैध स्थानांतरण को रोकने के लिए पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारतीय वन्यजीव संस्थान के सहयोग से डीएनए प्रोफाइलिंग कर रहा है। इसके लिए देशभर में बंदी हाथियों से जीवक नमूने के तथ्य गज सूचना नामक मोबाइल एप्लीकेशन में संकलित किए जाते हैं। केंद्र सरकार ने बंदी हाथी (स्थानांतरण परिवहन) नियम, 2024 अधिसूचित किया है। छत्तीसगढ़ में वन विभाग ने एआइ आधारित हाथी अलर्ट एप तैयार किया है। इस एप में रेलवे लाइन तथा बिजली की अवसंरचनाओं की जानकारी भी मिलती है। इससे हाथियों की चहलकदमी की जानकारी मिलती है। यह एप संवेदनशील इलाकों में हाथियों के प्रवेश से पहले संबंधित विभाग के अधिकारियों को सूचनाएं प्रेषित कर देता है।

हाथियों की सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए नए सिरे से प्रयास किए जाने चाहिए। फाइल

वनों की कटाई, बढ़ता खनन और कृषि कार्य को जब तक सीमित नहीं किया जाएगा, तब हाथियों तथा किसी भी वन्य जीव का संरक्षण अधूरा रहेगा। हाथियों के व्यवहार को समझे बिना उनके संरक्षण का प्रयास सही नहीं होगा। कई राज्यों में वन विभाग ने हाथियों के समूह को चिह्नित करने के लिए कालर आइडी जैसे नवाचार को अपनाया है, इसके अच्छे परिणाम सामने आए हैं। ऐसे प्रयासों को बढ़ाना होगा।

****

दैनिक जागरण
अज्ञान युक्त जीवन मृत्यु के समान है

नकली दवाएं

नकली दवाओं के खिलाफ अभियान छेड़ने की तैयारी समय की मांग है, लेकिन यह सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है कि ऐसे किसी अभियान के नाम पर खानापूरी न की जाए। यह अभियान ऐसा होना चाहिए, जिससे नकली दवाओं के निर्माण और बिक्री में लगे तत्वों को बेनकाब करने के साथ ही उन्हें कठोर दंड का भागीदार बनाया जा सके। इससे ही ऐसे तत्वों को हतोत्साहित करने में मदद मिलेगी। अभी ऐसा नहीं है और इसी कारण नकली दवाओं की बरामदगी के मामले रह-रहकर सामने आते ही रहते हैं। पिछले कुछ समय में देश के विभिन्न हिस्सों में इतने बड़े पैमाने पर नकली दवाएं बरामद हुई हैं कि यह लगता ही नहीं कि उन्हें बनाने वालों में किसी का डर है। चिंताजनक केवल यह नहीं है कि तमाम प्रचलित दवाओं को नकली रूप में बनाया जाता है। यह भी चिंता की बात है कि ऐसा करने वाले नकली दवाएं बेचने में भी समर्थ हो जाते हैं। कई बार तो नकली दवाएं सरकारी अस्पतालों तक पहुंच जाती हैं। यह तभी संभव है, जब नकली दवाएं बेचने वालों की पहुंच सरकारी तंत्र तक हो। कुछ मामलों में तो यह भी सामने आ चुका है कि महंगी जीवनरक्षक दवाएं भी नकली पाई गईं। एक समस्या यह भी है कि कई बार दवा बनाने वाली कंपनियों की दवाओं के सैंपल निम्नकोटि के पाए जाते हैं।

निम्नस्तरीय दवाएं एक तरह से नकली दवाएं ही हैं। इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अभी पिछले महीने दवाओं के 111 सैंपल निम्नस्तरीय पाए गए। इसी तरह दो दवाओं के सैंपल नकली पाए गए। इसका कोई औचित्य नहीं कि सरकारी लाइसेंस वाली दवा कंपनियां निम्नस्तरीय दवाएं बनाएं। कटु सत्य यह है कि ऐसा हो रहा है। इसका मतलब है कि दवा बनाने वाली कंपनियों को न तो सही तरह निगरानी हो रही है और न ही उनकी ओर से बनाई जाने वाली दवाओं की गुणवत्ता का परीक्षण नियम-कानूनों के अनुरूप हो रहा है। उन नियम-कानूनों और निगरानी तंत्र का कोई लाभ नहीं, जो प्रभावी न सिद्ध हो रहा है और जिससे नकली या फिर निम्नस्तरीय दवाएं बनाने-बेचने वालों को सेहत पर कोई असर न पड़ रहा हो। ध्यान रहे कि अतीत में भारत में निर्मित दवाओं की गुणवत्ता पर दूसरे देशों में गंभीर सवाल उठ चुके हैं। ऐसे कुछ मामलों में आरोपित कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई भी करनी पड़ी। एक ऐसे समय जब भारत को दुनिया की फार्मेसी के तौर पर देखा जा रहा है, तब यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि नकली और साथ ही निम्नस्तरीय दवाओं का बनना और बिकना बंद हो। नकली और निम्नस्तरीय दवाएं केवल मरीजों के जीवन को ही संकट में नहीं डालतीं, बल्कि वे सरकारी तंत्र पर आम लोगों के भरोसे को डिगाने का भी काम करती हैं।

खेलों को प्रोत्साहन

उत्तराखंड की धामी सरकार ने इस वर्ष गणतंत्र दिवस परेड के लिए साहसिक खेलों की झांकी का चयन किया है। इस फैसले की हर तरफ बहुत सराहना हो रही है। निश्चित रूप से इससे प्रदेश के साहसिक खेलों को राष्ट्रीय स्तर पर एक पहचान मिल सकेगी। विशेष यह कि गणतंत्र दिवस के तुरंत बाद ही उत्तराखंड में राष्ट्रीय खेलों का आयोजन होना है। इस दृष्टिकोण से सरकार का यह कदम साहसिक खेलों को बढ़ावा देगा। उत्तराखंड पिछले कुछ समय से साहसिक खेलों के एक बड़े गंतव्य के रूप में उभर रहा है। यहां की भौगोलिक स्थिति इसके लिए अनुकूल है। यही कारण है कि प्रदेश के विभिन्न हिस्सों में रोमांच के शौकीन लंबे समय से ट्रैकिंग, राफ्टिंग, क्लाइंबिंग, स्कीइंग और रिवर राफ्टिंग के लिए आ रहे हैं। इन साहसिक खेलों का तेजी से प्रचार-प्रसार हुआ है। साथ ही यहां जिप लाइनिंग एवं बंजी जंपिंग के केंद्र भी जगह-जगह खुले हैं, जहां देश-विदेश के पर्यटक इनका आनंद उठा रहे हैं। यद्यपि, इनकी संख्या अभी सीमित है। इस क्षेत्र में यदि थोड़ा और काम किया जाए तो उत्तराखंड निश्चित रूप से साहसिक खेलों का हब बन सकता है। ऐसे में राज्य सरकार द्वारा साहसिक खेलों को राष्ट्रीय स्तर पर लाने के लिए गणतंत्र दिवस की परेड की झांकी के रूप में प्रदर्शित करने का निर्णय उचित है। उम्मीद की जानी चाहिए कि इसके बाद यहां साहसिक खेलों के लिए अवस्थापना सुविधाओं को बढ़ाने पर भी जोर दिया जाएगा।

> उत्तराखंड साहसिक खेलों के लिए बिल्कुल उचित स्थान है। सरकार के प्रयासों से इसे राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिलेगी

देश की दिशा बदलने वाले मनमोहन सिंह

डा. ब्रजेश कुमार तिवारी

अर्थशास्त्री, नीति निर्माता और राजनेता के तौर पर पहचान बनाने वाले मनमोहन सिंह को भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदलने के लिए जाना जाएगा

पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह भारत में आर्थिक सुधारों के प्रणेता के तौर पर जाने जाते हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उनके दस वर्ष के कार्यकाल पर लोगों की आलोचनात्मक राय हो सकती है, लेकिन इस तथ्य से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि भारतीय अर्थव्यवस्था को बचाने एवं बढ़ाने में उनका योगदान अहम है। अर्थशास्त्री, नीति निर्माता और एक उनेजक के तौर पर पहचान बनाने वाले मनमोहन सिंह को भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदलने के लिए जाना जाता है। वर्ष 1990 के खाड़ी युद्ध के कारण तेल की कीमतों में तीन गुनी वृद्धि हुई थी। कुवैत पर इराक के हमले की वजह से भारत को अपने हजारों मजदूरों को वापस लाना पड़ा था। नतीजतन उनकी ओर से भेजी जाने वाली विदेशी मुद्रा पूरी तरह से रुक गई थी। ऊपर से भारत की राजनीतिक अस्थिरता और उस समय का सामाजिक-आर्थिक माहौल अर्थव्यवस्था को कमजोर किए जा रहा था। देश को इस कठिन हालात से बाहर लाने के लिए उस समय देश के प्रधानमंत्री रहे पीवी नरसिंह राव ने अपने वित्त मंत्री के रूप में मनमोहन सिंह को चुना था। स्पष्ट है कि वित्त मंत्री के रूप में मनमोहन सिंह की सफलता का श्रेय नरसिंह राव को भी जाता है।

देश के लिए मनमोहन सिंह का सबसे बड़ा योगदान वित्त मंत्री के रूप में आर्थिक सुधारों की शुरुआत करना था। उन्होंने 24 जुलाई, 1991 को आम बजट पेश करते हुए कहा था, 'समय बर्बाद करने का कोई अवसर नहीं है। न तो सरकार और न ही अर्थव्यवस्था साल दर साल अपनी क्षमता से ज्यादा खर्च कर सकती है। उधार के पैसे की गुंजाइश अब नहीं रही। हमें बाजार की ताकतों के संचालन के लिए दायरे और क्षेत्र का विस्तार करने की जरूरत है।' मनमोहन सिंह ने भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधारों की एक श्रृंखला शुरू की, जिसे उन्होंने 'मानवीय चेहरे के साथ सुधार' कहा। उन्होंने तीन कैटेगरी में बड़े बदलाव किए-उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण, जिसके तहत विदेश व्यापार, निवेश, बैंक एवं कर से जुड़े व्यापक सुधार किए गए।

1991 में भारत का अंतरराष्ट्रीय व्यापार संतुलन भारी घाटे में था। देश पर विदेशी कर्ज 69 बिलियन डालर हो गया था। भारत के पास पैसा और समय दोनों बहुत कम थे। तब विदेशी मुद्रा भंडार छह बिलियन डालर से भी कम था, जो देश के केवल दो सप्ताह के आयात को पूरा करने के लिए ही पर्याप्त था। विदेशी पूंजी निवेश पर सरकारी नियंत्रण था। आयात के लिए जटिल लाइसेंसिंग सिस्टम था। चीन और पाकिस्तान के साथ हुए युद्ध, शेयर बाजार में हो रहे घपले, उत्पादन के क्षेत्र में सरकारी नियंत्रण आदि अर्थव्यवस्था की रफ्तार को थामे हुए थे। देश आर्थिक पतन के कगार पर था। इसे बचाने के लिए उन्होंने रुपये का दो बार अवमूल्यन किया। पहले करीब नौ प्रतिशत एवं फिर 11 प्रतिशत का अवमूल्यन किया गया। इससे हमारा निर्यात सस्ता हो गया, जो हमारे विदेशी व्यापार असंतुलन के लिए एक आकस्मिक सुधार था। फिर औद्योगिक नीति की शुरुआत के साथ लाइसेंस राज को खत्म किया। भारतीय बाजार को विदेशी कंपनियों के लिए खोल दिए। इस कदम से भारत सरकार विदेश में गिरवी रखा सोना छुड़ाया कर आरबीआइ को सौंपने में कामयाब रही।

बेलगावी, कर्नाटक में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते कांग्रेसजन। प्रेट्र

मनमोहन सिंह ने भारत को दुनिया के बाजार के लिए तो खोला ही, निर्यात और आयात के नियमों को भी सरल बनाया। आसान शब्दों में कहें तो किसी वस्तु का कितना उत्पादन होगा और उसकी कितनी कीमत होगी, इसका फैसला सरकार नहीं, बल्कि बाजार पर छोड़ दिया गया। इन सुधारों ने भारत को तेज आर्थिक विकास की राह पर ला खड़ा किया और देश को अंतरराष्ट्रीय निवेशकों के लिए आकर्षक गंतव्य बनाया। विदेशी पूंजी के प्रवाह ने देश को बदलने शुरू किया, लोगों के पास ज्यादा पैसा आया, जीवनशैली बदली। दुनिया के बड़े ब्रांड्स ने यहां दस्तक दी। इससे देश में नौकरियां और उद्योग बढ़े।

वर्ष 2004 से 2014 तक जब वह प्रधानमंत्री थे, तब भारतीय अर्थव्यवस्था के दस स्वर्णिम वर्ष थे। उस दशक में भारत की जीडीपी औसतन 8.1 प्रतिशत की दर से बढ़ी। 2007 में भारत ने नौ प्रतिशत की अपनी उच्चतम जीडीपी वृद्धि दर हासिल की। उनके कार्यकाल में सबसे बड़ा समाजिक कल्याण कार्यक्रम महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम था, जिसे दुनिया की सबसे बड़ी रोजगार गारंटी योजना के रूप में मान्यता प्राप्त है। उनकी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु ऊर्जा समझौते पर हस्ताक्षर भी थी। इसने भारत के लिए परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) के वास्तविक सदस्य के रूप में स्वीकार किए जाने के दरवाजे खोल दिए। इसने दोनों देशों के बीच गहरे रणनीतिक संबंधों का रास्ता भी दिखाया। उन्होंने राजनीतिक जोखिम लेकर अमेरिका से असैन्य परमाणु ऊर्जा समझौता किया। इसके अलावा मनमोहन सरकार ने सूचना का अधिकार अधिनियम (आरटीआइ)-2005 पारित कर नागरिकों को सार्वजनिक प्राधिकरणों से जानकारी मांगने का अधिकार दिया। इससे सरकार में बैठे लोगों के काम में पारदर्शिता आई और जवाबदेही भी तय हुई। आरटीआइ भारतीय लोकतंत्र को सशक्त बनाने, सरकारी कामकाज के तरीके में सुधार करने और नागरिकों को अपनी सरकार से जानकारी लेने का अधिकार प्रदान करती है। मनमोहन सरकार ने वैट लागू किया, जिसने जटिल बिक्री कर का स्थान लिया। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन-2005, भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (आधार)-2009, बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई)-2009, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013 आदि भी उनके प्रमुख कार्य हैं, जिन्होंने देश को बदला। उन्होंने मोबाइल और इंटरनेट कनेक्टिविटी को दूरस्थ इलाकों तक पहुंचाकर डिजिटल क्रांति का आगाज किया। कुल मिलाकर मनमोहन सिंह की आर्थिक नीति ने भारत को बीमारू अर्थव्यवस्था को नई संजीवनी दी। इससे लाखों भारतीयों को गरीबी से उबरने में मदद मिली।

(लेखक जेएनयू के अटल स्कूल आफ मैनेजमेंट में प्रोफेसर हैं)
response@jagran.com

खतरे में संसद की विश्वसनीयता

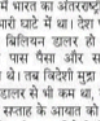

आरके सिन्हा

आमजन में यह भावना तेजी से घर करती जा रही है कि अब संसद में किसी विषय पर ढंग से बहस नहीं होती

'दुश्मनी जम कर करो, लेकिन ये गुंजाइश रहे, जब कभी हम दोस्त बन जाएं तो शर्मिंदा न हों।' प्रसिद्ध शायर बशीर बद्र का यह शेर आजकल बार-बार कहने का मन करता है। वजह है, राजनीतिक कटुता का माहौल। संसद के भीतर-बाहर जिस तरह गलत भाषा का खुला प्रयोग होने लगा है, वह दुखद है। असहमति में तो लोकतंत्र के प्राण बसते हैं, पर वह मर्यादापूर्वक होनी चाहिए। अगर मर्यादापूर्ण असहमति पर ध्यान दिया जाए, तो कम से कम संसद में घटिया शब्दावली का प्रयोग जरूर थम जाएगा। संसद को बाद-विवाद और संवाद से सहमति बनानी होगी, न कि असहमति का माहौल बनाने में अपने समय को नष्ट करना होगा। आज देश की आबादी में 65 प्रतिशत हिस्सेदारी 35 वर्ष से कम युवाओं की है। हमें इस आबादी की संरचना को ध्यान में रखते हुए युवाओं के चौतरफा विकास की गति को तेज कर उस पर खरा उतरना होगा। यदि हम ऐसा नहीं कर पाए तो संसद और सांसदों की प्रतिष्ठा तार-तार हो जाएगी।

विधायिका और इससे जुड़ी संस्थाओं की सार्थकता पर अब हर तरफ से सवाल उठने लगे हैं। कारण यह है कि अब संसद में बहस के बजाय हंगामा ही हो रहा होता है। हंगामे से सदन को बार-बार बिना वजह स्थगित करना पड़ता है। जब सदन चलेगा ही नहीं तो वहां पर कामकाज कैसे होगा?

सच बात यह है कि संसद में हंगामा करने वाले सदस्यों को अपने दल के नेताओं से हरी झंडी मिली होती है। उनसे कहा जाता है कि वे सदन में नारेबाजी करते रहें और कामकाज न होने दें। अगर आप वोटर की कार्यप्रणाली से वाकिफ होंगे तो आपको पता होगा कि वहां वकील सुबह से शाम तक एक-दूसरे के खिलाफ केस लड़ते हैं। उनके बीच तीखी बहस भी होती है, पर लंच और फिर नाश्ते के समय सब बैठकर गपशप कर रहे होते हैं। उनमें कहीं कोई कटुता नहीं होती। ऐसे वकीलों से भी संसद सदस्य कुछ सीख ले सकते हैं। अभी कुछ दिन पहले एक मोटिवेशनल स्पीकर और हिंदू धर्म ग्रंथों के विद्वान एक सेमिनार में कह रहे थे कि जीवन में किसी को शत्रु मानना या उससे शत्रुता रखना कतई सही नहीं है। आप अपने को उसी दिन से बेहतर इंसान मान सकते हैं, जिस दिन आपके मन में किसी के लिए कोई कटुता न रहे, पर संसद में सत्तापक्ष-विपक्ष के बीच दुश्मनी वाला भाव दिखता है। अब यह भाव संसद के बाहर भी दिखने लगा है।

धक्का-मुक्की में पायल भाजपा सांसद। प्रेट्र

कभी-कभी बहुत क्लेश होता है कि अब संसद में यादगार भाषण सुनने को नहीं मिलते। एक दौर था जब संसद में सार्थक चर्चाएं होती थीं और सदस्य सारगर्भित भाषण दिया करते थे। हमारे यहां कई प्रखर सांसद हुए हैं, जिन्होंने अपनी वाक् पटुता, तार्किक क्षमता और संसदीय ज्ञान से महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अटल बिहारी वाजपेयी के संसद में दिए भाषणों को कौन भूल सकता है। वह अपनी कविताओं और भाषणों के लिए जाने जाते हैं। डा. राम मनोहर लोहिया भी आलोचनात्मक शैली और सामाजिक न्याय के मुद्दों पर मुखरता के साथ अपनी बात रखते थे। मधु लिमये तो बार-बार याद आते हैं। वह प्रश्नकाल में तीखे सवाल पूछते थे। औजस्वी वक्ता तो वह थे ही। इसी क्रम में जार्ज फर्नांडिस भी थे। वह सामाजिक न्याय और गरीबों के अधिकारों के लिए मुखर थे। इसके अलावा कई अन्य सांसद भी ऐसे रहे हैं, जिन्होंने अपनी प्रखरता से भारतीय संसद को समृद्ध किया है।

एक बार मशहूर क्रिकेट कमेंटेटर वेंकट सुंदरम बता रहे थे कि उनके शिक्षाविद् पिता पीएम सुंदरम उन्हें बचपन में कहते थे कि वह अखबारों में संसद की कार्यवाही को ध्यान से पढ़ लिया करें। उन्हें पढ़कर देश-दुनिया की स्थिति को समझने मदद मिलेगी। क्या आज कोई अभिभावक अपने बच्चों को कहता होगा कि वे संसद की कार्यवाही से जुड़ी खबरों को पढ़ें या कार्यवाही को टीवी पर देखें? वजह बहुत सफ है कि संसद में बहस का स्तर ही नहीं गिरा है, बल्कि वहां तो संग्राम वाली स्थिति बनी रहती है। सिर्फ पंगेबाजी और एक-दूसरे पर उलटे-सीधे आरोप लगाने से तो संसद नहीं चल सकती। पिछले हफ्ते संसद परिसर में तब शर्मनाक घटना घटी, जब दो सांसद धक्का-मुक्की में घायल हो गए। किसने किसको धक्का दिया इसकी जांच चल रही है, पर धक्का तो दिया गया, तभी तो एक सांसद का सिर फटा?

संसद में तमाम असहमति के बाद भी देश हित के मामलों पर बाद, विवाद और संवाद होना अनिवार्य है। अगर संसदीय लोकतंत्र में राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर बहस ही नहीं होगी तो फिर क्या होगा। आज देश की आम जनता में यह भावना तेजी से घर करती जा रही है कि संसद में कायदे से संविधान के अनुरूप कुछ होता ही नहीं। वहां पर तो सदस्य मात्र शोर-शराबा करने के लिए जाते हैं। यह समझा जाना चाहिए कि संसद की महत्ता और उसकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। यह लोकतंत्र के लिए खतरनाक संकेत है। अब हंगामा करने वालों को देश सीधे टीवी पर देखता है। संसद की कार्यवाही का टीवी प्रसारण इस उम्मीद में शुरू किया गया था कि इससे संसद की कार्यवाही का स्तर ऊंचा उठेगा, लेकिन अब तो इसका उलटा हो रहा है।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)
response@jagran.com

ऊर्जा

श्रद्धा

श्रद्धा एक मानसिक भाव है, जो गुरुजनों के प्रति आदर एवं सम्मान का कारण है। यह मनुष्य का सर्वविध कल्याण करने वाली है। जहां अग्रजों के प्रति श्रद्धा आयु, विद्या, यश और बल प्रदान करती है, वहीं शुभकर्मों के प्रति यही समाज में मानवता को प्रतिष्ठापित करती है। वस्तुतः कर्म में अनुरक्ति श्रद्धा का परिणाम होता है, किंतु किसी भी कर्म में अनुरक्ति श्रद्धा नहीं होती। यह ऐसा पवित्र भाव है, जिसके आने पर कर्म उपासना बन जाता है और करने वाला उपासक। फिर कोई कर्म अकर्म नहीं होता और कोई संकल्प अशुभ नहीं। अतः श्रद्धा मानव के सत्संकल्प का बीजमंत्र है।

द्वंद्वविश्वास भक्ति का प्रथम सोपान है। यही श्रद्धा को जन्म देता है। भगवान शिव के अर्धनारीश्वर रूप के समान दोनों का रूप ब्राह्मरूपेण तो पृथक है, किंतु वे वास्तव में एक हैं। इसीलिए मानस के मंगलाचरण में गोस्वामी जी ने शिव और पार्वती के इसी रूप की वंदना करते हुए कहा है कि इसके बिना सिद्ध पुरुष भी अंतःस्थित परमात्मा को देख नहीं पाते। अतएव इनका अद्भुत सात्त्विर्य भक्ति के अग्रिम सोपानों का आधार बनता है। ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी भी इसके बिना प्रसन्न नहीं होती। इसीलिए ''श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्'' कहकर गीता में श्रद्धा को ज्ञानप्राप्ति का मूल कारण कहा गया है।

ज्ञान, भक्ति और कर्म केवल अध्यात्म के नहीं, लौकिक जीवन की सफलता के भी आधार हैं। मानव जीवन की यात्रा का कोई भी संस्करण इनके बिना पूर्ण नहीं होता। जैसे ज्ञान के बिना भक्ति एवं कर्म तथा भक्ति के बिना ज्ञान एवं कर्म की सिद्धि नहीं होती। उसी प्रकार कर्म के बिना ज्ञान और भक्ति भी संभव नहीं, किंतु श्रद्धा के बिना तो तीनों असंभव हैं। जीवन के आध्यात्मिक एवं लौकिक पथ पर अग्रसर होने के लिए श्रद्धा का संबल आवश्यक है। श्रद्धा को पाथेय बनाकर जीवन में सत्संकल्पों का विधान करें।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

सूरज के बेहद करीब पहुंचा 'पार्कर'!

प्रदीप

> पार्कर यान सूर्य के उन पहलुओं का अध्ययन कर रहा है, जो प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से पृथ्वीवासियों के जीवन पर प्रभाव डालते हैं

नासा के अंतरिक्ष यान 'पार्कर सोलर प्रोब' ने सूर्य के अब तक के सबसे निकटतम बिंदु पर पहुंचकर इतिहास रच दिया है। एक छोटी कार के आकार का पार्कर कोरोना (सूर्य का सबसे बाहरी आवरण) के प्रचंड ताप का सामना करते हुए सूरज की सतह से महज 61 लाख किमी की दूरी से गुजरा। पार्कर इतिहास का सबसे तेज रफ्तार से उड़ने वाला अंतरिक्ष यान है। जिस समय पार्कर सूरज के नजदीक से गुजर रहा था, तब इसकी रफ्तार 6.90 लाख किमी प्रति घंटा थी। ये रफ्तार इतनी ज्यादा है कि इससे टोक्यो से वाशिंगटन डीसी की यात्रा एक मिनट से भी कम समय में पूरी हो जाए।

पार्कर का मुख्य उद्देश्य सूर्य और पृथ्वी के बीच के संबंधों को समझना है। यह यान विशेष रूप से सूर्य के उन पहलुओं का अध्ययन कर रहा है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पृथ्वी वासियों के जीवन पर प्रभाव डालते हैं। साथ ही यह सूर्य पर निरंतर निगरानी रखकर इसके कई रहस्यों को सुलझाने में विज्ञानियों की मदद भी कर रहा है। मोटे तौर पर इस मिशन का लक्ष्य सूर्य के कोरोना का अबूझकर करना है, ताकि सूर्य के विभिन्न कारकों जैसे सौर तूफान, सूर्य के चुंबकीय क्षेत्र और इनसे पृथ्वी के वातावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जा सके। सूर्य की तेजस्विता, अत्यधिक तापमान और उसके चारों ओर निर्मित चुंबकीय क्षेत्र विज्ञानियों की पहुंच को सीमित कर देता है, इन्हीं चुनौतियों से निपटने के लिए 2018 में पार्कर को भेजा गया।

सूर्य के कोरोना का तापमान लगभग 11 लाख डिग्री सेल्सियस है और अंदर का तापमान तो करोड़ों डिग्री सेल्सियस में है। इतना भीषण तापमान कुछ ही सेकेंडों में धरती पर पाए जाने वाले सभी चीजों को पिघला सकती है इसलिए इस भीषण गर्मी का मुकाबला करने के लिए कई अत्याधुनिक तकनीकों और धातु सम्मिश्रणों का उपयोग किया गया है। पार्कर अपनी अभिन्न विशेषताओं की बदौलत अत्याधुनिक थर्मल इंजीनियरिंग का एक बेजोड़ नमूना बन गया है।

उल्लेखनीय है कि सूर्य महज जीवन को सुचारु ढंग से चलाने के लिए प्रकाश और गर्मी ही नहीं देता है, बल्कि इससे हमें सौर पदार्थों का अबूझकर प्रवाह भी प्राप्त होता है। इस अदृश्य प्रवाह में आवेशित कण, उच्च ऊर्जा विद्युत चुंबकीय विकिरण और मजबूत चुंबकीय क्षेत्र रेखाएं शामिल हैं, जिन्हें 'सौर तूफान' के रूप में जाना जाता है। हमारी पृथ्वी का ऊपरी वायुमंडल और इसका सुरक्षामक चुंबकीय क्षेत्र सौर तूफानों को निरंतर झेलता रहता है, जिनका हमारी संचार प्रणालियों और विद्युत सेवाओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है, यहां तक इनकी वजह से ये प्रणालियां और सेवाएं ठप भी पड़ सकती हैं। पार्कर द्वारा जुटाए डाटा से अंतरिक्ष यात्रियों, उपग्रहों, संचार सेवाओं और विद्युत ग्रिडों की सुरक्षा के लिए एहतियात बरतने में मदद मिल सकती है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

मेलबाक्स

जहरीली हवा से कब मिलेगी राहत

'गंभीर संकट का कामचलाऊ समाधान' शीर्षक से लिखे आलेख के तहत पंकज चतुर्वेदी ने दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण के लिए पराली को मुख्य वजह मानने वालों को आईना दिखाने की कोशिश की है। वायु प्रदूषण की मुख्य वजह पराली जलाना नहीं है। वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारण बढ़ती जनसंख्या के कारण कंक्रीट के जंगलों में बढ़ोतरी है। दिन प्रतिदिन बढ़ती वाहनों की संख्या है। सड़कों के निर्माण के लिए जो धड़ाधड़ कुएं पर कुल्हाड़ी चल रही है क्या इससे पर्यावरण साफ सुथरा रहेगा? देश में जिस रफ्तार से प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है, उसके निदान के लिए गंभीरता से प्रयास करने की जरूरत है। प्रदूषण के कारण हमें कोई जानलेवा बीमारी लगेगी, तो उसकी परेशानी हमें ही होगी, सरकार को नहीं। लोगों को भी उन कायदे-कानूनों का गंभीरता से पालन करना होगा, जो सरकारें प्रदूषण की रोकथाम के लिए बनाती हैं। जिस तरह देश में प्रदूषण सिरदर्द बनता जा रहा है, उसके लिए जागरूकता अभियान लगातार चलना चाहिए। मीडिया भी सरकारों और आमजन को इसके लिए कुंभकर्णी नींद से जगाने के लिए तभी गंभीर होता है, जब सर्दियों के मौसम में प्रदूषण ज्यादा परेशान करने लगता है। जब तक हम सभी इस संकीर्ण मानसिकता को नहीं त्यागते कि मेरे एक अकेले के उपाय से कुछ नहीं होगा, सरकारें भी प्रदूषण को लेकर केवल बातें ही करेंगी। गंभीरता से काम नहीं करेंगी। प्रधानमंत्री मोदी बेशक धरती, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण को संभालने के लिए गंभीरता दिखा रहे हैं और इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय मंच पर उठा रहे हैं, लेकिन शेष लोग पर्यावरण को संभालने के लिए खास गंभीर नहीं हैं। अगर गंभीर होते तो आज दिल्ली, यूपी, हरियाणा, पंजाब और अन्य राज्य जहरीली हवा से परेशान न होते।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

गठबंधन में दरार

विपक्षी दलों के मोर्चे आइएनडीआइए को विभिन्न चुनावों में मिली लगातार पराजय के कारण इस गठबंधन में दरार दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है। हरियाणा विधानसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी और समाजवादी पार्टी का कांग्रेस के साथ समझौता न होना गठबंधन में दरार होने का बड़ा कारण है। महाराष्ट्र में आइएनडीआइए को मिली पराजय के कारण यह लड़ाई खुलकर सामने आ गई थी। महाराष्ट्र में साबरकर के मुद्दे पर शिवसेना (उद्धव) के कांग्रेस के साथ मतभेद खुलकर सामने आए हैं। अब दिल्ली के चुनावी दंगल में अंदरूनी कलह अपने चरम पर है। ऐसा प्रतीत होता है कि गठबंधन में चुनावी असफलताओं के कारण घटक दलों का कांग्रेस से मोह भंग हो चुका है। अब ममता बनर्जी ने कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। कुल मिलाकर देखा जाए तो गठबंधन में अविश्वास, आपसी टकराव और अनिर्णय की स्थिति ने उसे खोखला कर दिया है।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

विवादित धार्मिक स्थलों की सच्चाई

मंदिर-मस्जिद विवाद के इतिहास की सच्चाई जानने की लड़ाई जारी है। आरएसएस विचारधारा की पत्रिका आर्गनाइजर ने लिखा है कि इतिहास की सच्चाई जानने का हक सभी को है। आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के उस बयान की दलील पत्रिका को रास नहीं आई, जिसमें उन्होंने कहा था कि ऐसे विवाद लोगों को नहीं उठाने चाहिए, इससे सांप्रदायिक विभाजन बढ़ता है। स्वामी रामभद्राचार्य और संत समिति के स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती इससे असहमत हैं। उनका कहना है कि इसका फैसला धर्माचार्यों की ओर से किया जाना चाहिए। छद्म पंथनिरपेक्षवादी चश्मे से बहस के बजाय सच्चे इतिहास पर आधारित न्याय पाने के लिए विवेकपूर्ण और समावेशी बहस की आवश्यकता है। ऐतिहासिक सच जानने की यह लड़ाई धार्मिक वर्चस्व की नहीं, बल्कि हमारी राष्ट्रीय पहचान की पुष्टि और सभ्यतागत न्याय के लिए है।

कैलाश मेहरा, गुरुग्राम

इस स्तंभ में किसी भी विषय पर राय व्यक्त करने अथवा दैनिक जागरण के राष्ट्रीय संस्करण पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए पाठकगण सादर आमंत्रित हैं। आप हमें पत्र भेजने के साथ ई-मेल भी कर सकते हैं।

आपने पत्र इस पते पर भेजें:
दैनिक जागरण, राष्ट्रीय संस्करण,
डी-210-211, सेक्टर-63, नोएडा
ई-मेल: mailbox@jagran.com

राष्ट्रीय सहारा
नई दिल्ली • शनिवार • 28 दिसम्बर • 2024
www.rashtriyasahara.com

मितभाषी का अवसान

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के साथ भारतीय लोकतंत्र के उस व्यक्तित्व का अवसान हो गया जो भारत में आर्थिक और राजनीतिक बदलावों के दौर का प्रतिनिधि था। समाजवादी रुझान वाली मिश्रित अर्थव्यवस्था से प्रतिबंध मुक्त अर्थव्यवस्था का जो अंतरण हुआ उसमें मनमोहन सिंह की बड़ी भूमिका रही। नब्बे के दशक में जब देश की अर्थव्यवस्था पूरी तरह पटरी पर से उतर गई थी और देश का सोना गिरवी रखने तक की नौबत आ गई थी, तब

प्रधानमंत्री नरसिंह राव के वित्त मंत्री के रूप में उन्होंने आर्थिक सुधारों को गति दी। भारतीय अर्थव्यवस्था में उदारीकरण की शुरुआत करने वाले मनमोहन सिंह को 2004 से लेकर 2014 तक प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा करने का अवसर मिला। यह वह दौर था जब पूरी दुनिया आर्थिक मंदी की चपेट में थी। डॉ. सिंह ने अपनी आर्थिक नीतियों से वैश्विक मंदी से अर्थव्यवस्था को जिस तरह से बचाया उसके लिए देश उनका ऋणी रहेगा। उन्होंने आधुनिक अर्थव्यवस्था का जो मजबूत आधार प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को उपलब्ध कराया उसी के कारण आज भारतीय अर्थव्यवस्था तेज रफ्तार से दौड़ रही है। अगर मनमोहन सिंह चारित्रिक रूप से विनम्र, सदाशयतापूर्ण और सज्जन नहीं होते और उस दौर के खांटी राजनीतिज्ञों जैसे उनके गुण होते तो हो सकता था कि कांग्रेस का स्वर्णयुग लौट आता। यह भी सच है कि अगर वे गांधी परिवार के प्रभाव से मुक्त होते और अपने निर्णय लेने के लिए पूरी तरह स्वतंत्र होते तो शायद देश के आर्थिक और राजनीतिक मोर्चे पर और बड़ा योगदान कर सकते थे, लेकिन वह अपनी व्यक्तिगत और पॉलिटिशियन वाध्यताओं के चलते जितना भी कुछ कर सके वह बहुत था। डॉ. सिंह सचमुच नेहरू-गांधी परिवार से संबंधित होते और देश की अर्थनीति में महत्वपूर्ण बदलाव में इस तरह की भूमिका निभाई होती तो कांग्रेस में उनका कद पं. नेहरू के समकक्ष होता। इन सबको को अलग कर दिया जाए तो भी उन्हें आर्थिक सुधारों को गति देने वाले और अल्पभाषी तथा मितभाषी प्रधानमंत्री के रूप में याद किया जाएगा। राजनीति में मनमोहन सिंह जैसी सज्जनता गुण नहीं दुर्गुण मानी जाती है, लेकिन यह भी तथ्य है कि उनका यह राजनीतिक दुर्गुण भी उनका श्रेष्ठ गुण था। उनके निधन के साथ सरल, सौम्य, कटुताविहीन राजनेताओं की पीढ़ी का अवसान हो गया।

उधार की मार

सुप्रीम कोर्ट ने सोलह साल पुराने एक मामले को खारिज करते हुए फैसला दिया है कि बैंक अब क्रेडिट कार्ड बकाया पर 30 फीसद से अधिक ब्याज वसूल सकते हैं। अदालत ने राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के फैसले को खारिज किया, जिसमें क्रेडिट कार्ड बकाये पर ग्राहकों से अत्यधिक ब्याज दर वसूलने को अनुचित व्यवहार बताया गया था। आयोग के अनुसार क्रेडिट कार्ड बकाये पर 36 से 49 फीसद प्रति वर्ष की ब्याज दरें बहुत ज्यादा हैं, जो उधारकर्ताओं के शोषण की तरह है। सिटी बैंक, अमेरिकन एक्सप्रेस, एचएसबीसी और स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक द्वारा 2008 में उपभोक्ता आयोग के खिलाफ दायर अपीलों पर यह फैसला आया है। पीठ ने आयोग की इस टिप्पणी को अवैध करार दिया है कि भारतीय रिजर्व बैंक की शक्तियों के स्पष्ट, सुस्पष्ट

प्रत्ययोजन में हस्तक्षेप बताया। बैंकों द्वारा लगाए जाने वाली ब्याज की दर रिजर्व बैंक के निर्देशों और वित्तीय विवेक से तय होती हैं। क्रेडिट कार्ड यानी उधार पत्रक का मकसद ही तय वार्षिक शुल्क पर धन मुहैया कराना है, जिसे आसान किस्तों या निश्चित वक्त में चुकाया जाता है। हालांकि भारतीय समाज में आर्थिक समृद्धि के साथ ही क्रेडिट कार्ड का प्रयोग प्रचलित होता जा रहा है। भारतीय समाज में कर्ज लेकर खर्च करने की संस्कृति वर्जित रही है। उच्च ब्याज दरों का दबाव, उधारी के कारण अत्यधिक खर्च, धोखाधड़ी के चलते बहुत से लोग अभी भी इन सुविधाओं से तौबा करते हैं। समय पर भुगतान न कर पाने वालों की संख्या कम नहीं है। बगैर सोचे-समझे या आय से ज्यादा खर्चने वाले इस चंगुल में फंस जाते हैं। कुछ उधारकर्ता निश्चित रूप से आपात स्थिति में मजबूरन उधारी का इस्तेमाल करते हैं। मगर जब वे कर्ज चुकाने में असमर्थ होते हैं तो ब्याज दरों का अत्यधिक बढ़ना लाजिमी है। बैंक अपने नियमों से उपभोक्ताओं को अवगत जरूर कराते हैं। फिर भी उधारकर्ता इसकी अनदेखी करते हैं। पहले साहूकार जो काम किया करते थे, वित्तीय संस्थान बिल्कुल वही कर रहे हैं। हालांकि बैंकों को खुली छूट देने से बेहतर होता कि उपभोक्ता अधिकारों का ख्याल रखा जाता। कर्ज चुकाने में असफल शख्स को मोहलत देने के साथ ही उस पर पेनेल्टी भी लगाई जा सकती है। उसकी जरूरतों और कारण को समझने के प्रति वित्तीय संस्थानों को जिम्मेदार होना चाहिए। ब्याज की दरें बढ़ाने की खुली छूट संकट उत्पन्न कर सकती है।

कटाक्ष/ कबीरदास

सदा अटल

अब कोई कुछ भी कहे, अपने भगवा भाई कमिटमेंट के एकदम पक्के होते हैं। एक बार कमिटमेंट कर दिया, फिर अपने आप की भी नहीं सुनते हैं। पटना में अटल जी के शताब्दी वर्ष वाले समा अटल में यही तो हुआ। अटल होने का कमिटमेंट कर के आए थे, सो भाई लोग आखिर तक अटल रहे। रघुपति राघव राजाराम गाए जाने से भड़क गए, तो फिर भड़के ही रहे। भोजपुरी लोक गायिका, देवी ने लाख समझाया पर नहीं टले। राम के नाम का वास्ता दिया, पर नहीं टले।

'ईश्वर, अल्लाह तेरा ही नाम' जुबान पर लाने के लिए माफी तक मांगी, पर हंगामे पर अटल रहे। जय श्रीराम के जैकारों तक से नहीं टले। बापू का प्रिय भजन छेड़ने वाली और ईश्वर-अल्लाह का नाम एक साथ लेने वाली गायिका को, मंच से उतरवा कर ही माने। ऐसी अटलता कोई पटना के ही भगवाइयों की बपौती नहीं है। मोदी राज में भगवाई हर जगह यूं ही अटल हैं। अब खुद मोदी जी ने ईसाई बिशपों के साथ क्रिसमस मनाया कि नहीं? मोदी जी ने इस मौके पर शांति और प्रेम और भाईचारे का सुंदर सा उपदेश सुनाया कि नहीं, वह भी मुई अंगरेजी में। पर मजाल है जो इससे भगवाइयों की अटलता में जरा सी भी कमी आई हो। उन्होंने तो यही माना कि उपदेश दूसरों के लिए था। केरल में भाइयों ने एक स्कूल में जाकर क्रिसमस की तैयारियों का यज्ञ-ध्वंस कर दिया। इसकी भी परवाह नहीं कि वहां मोदी जी का डबल इंजन राज नहीं है। हवालात की हवा खानी पड़ गई, पर प्रेम के त्योहार में, नफरत घोलने पर अटल रहे। और जब सिंगल इंजनिया केरल वाले प्रण से नहीं टले, तो गुजरात वाले, राजस्थान वाले, मध्य प्रदेश वाले कैसे टल जाते, वहां तो डबल इंजनिया सरकारें हैं। और यूपी, वहां तो डबल इंजनिया के ऊपर से योगी चढ़ा का मामला है। लखनऊ में भाई लोग एक चर्च के बाहर जा जमा हुए और जय श्रीराम के जैकारों और हरे रामा हरे कृष्णा के नारों से, यीशु का जन्म दिन मना डाला! पर इसमें प्राब्लम क्या है? भगवाई आखिरकार, नाच-गाकर वर्ष डे मनाने पर ही तो अटल हैं। राम नवमी पर मस्जिद के सामने नाच-गाने पर और क्रिसमस पर गिरजे पर नाचने-गाने पर। बस उन्हें कोई गुस्सा न दिलाए। वरना भागवत जी तो क्या खुद श्रीराम की भी नहीं सुनेंगे! वही तो-सदा अटल!

अनमोल वचन

सत्य अकाट्य हैं। द्वेष इस पे हमला कर सकता है, अज्ञानता इसका उपहास उड़ा सकती है, लेकिन अंत में सत्य ही रहता है।
-विंस्टन चर्चिल

संपादकीय 8

editpagesahara@gmail.com

आर्थिक सुधारों के शिल्पी

योगेश कुमार गोयल

देश के आर्थिक परिवर्तन के प्रणेता देश के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन के साथ ही एक ऐसे नेता के युग का अंत हो गया, जिन्होंने आधुनिक भारत के आर्थिक परिदृश्य को आकार देने में अहम भूमिका निभाई थी। मनमोहन सिंह ने 92 वर्ष की उम्र में 26 दिसम्बर की रात दिल्ली के एम्स में अंतिम सांस ली। अपने शांत स्वभाव और बौद्धिक कौशल के लिए जाने जाने वाले मनमोहन सिंह ने भारत में ऐतिहासिक आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत करने में अहम भूमिका निभाई थी। 1991 में व्यापक सुधारों का श्रेय उन्हें ही दिया जाता है, जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को खोला, तथाकथित लाइसेंस-परमिट राज को खत्म किया और वैश्विक मंच पर भारत को एक आर्थिक महाशक्ति बनने के मार्ग पर मजबूती से स्थापित किया।

शिक्षाविद, अर्थशास्त्री और राजनीतिज्ञ के रूप में उनकी यात्रा न केवल प्रेरणादायक रही, बल्कि उनके द्वारा किए गए आर्थिक सुधारों और राजनीतिक निर्णयों ने भारत के इतिहास में एक नई दिशा दी। उन्हें आधुनिक भारत के आर्थिक सुधारों का वास्तुकार भी कहा जाता है। डॉ. मनमोहन सिंह ने जुलाई, 1991 में अपने बजट भाषण के अंत में कहा था, 'दुनिया की कोई भी ताकत उस विचार को नहीं रोक सकती, जिसका समय आ गया है, मैं इस सम्मानित सदन को सुझाव देता हूं कि भारत का दुनिया की प्रमुख आर्थिक शक्ति के रूप में उदय एक ऐसा विचार है, जिसका समय अब आ चुका है।'

मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारत ने आर्थिक विकास में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की। 2004-2014 तक भारत 10वें स्थान से उठ कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया था, जिससे लाखों लोगों का जीवन स्तर सुधरा और गरीबी में कमी आई थी। मनमोहन सिंह ने एक दशक से भी ज्यादा समय तक अभूतपूर्व विकास और वृद्धि की दिशा में देश को नेतृत्व प्रदान किया। उनके द्वारा किए गए प्रमुख सुधारों में उदारीकरण के तहत लाइसेंस राज की समाप्ति और व्यवसाय शुरू करने के लिए सरल प्रक्रियाओं का निर्माण, विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के दरवाजे खोलना और विदेशी व्यापार को प्रोत्साहित करना, कर ढांचे को सरल और पारदर्शी बनाना, भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए बाजार पर आधारित सुधार लागू करना, ग्रामीण रोजगार और गरीबी उन्मूलन के लिए 'मनरेगा' लागू करना शामिल हैं। इन सुधारों ने भारत को आर्थिक संकट से बाहर निकाला और उसे विश्व अर्थव्यवस्था में प्रमुख शक्ति के रूप में

स्मरण शेष

स्थापित किया। भारत ने डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान ऐतिहासिक वृद्धि दर देखी, जो औसतन 7.7 प्रतिशत रही और उसी के परिणामस्वरूप भारत करीब दो ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने में सफल रहा था।

वह ऐसे प्रधानमंत्री रहे, जिन्हें न केवल उन कार्यों के लिए स्मरण किया जाता रहेगा, जिनके जरिए उन्होंने भारत को आगे बढ़ाया, बल्कि विचारशील और ईमानदार व्यक्ति के रूप में भी याद किया जाएगा। उन्होंने न केवल आर्थिक विकास की गति को बनाए रखा, बल्कि सामाजिक और विकासशील नीतियों पर भी जोर दिया। हालांकि उनका कार्यकाल आलोचनाओं से भी अछूता नहीं रहा। अपने दूसरे कार्यकाल में उन्हें आर्थिक चुनौतियों और भ्रष्टाचार के आरोपों का सामना करना पड़ा और निर्णय लेने में धीमापन उनकी सरकार के लिए नकारात्मक साबित हुए। 2जी घोटाला उनके कार्यकाल के सबसे बड़े विवादों में रहा। कोयला ब्लॉक आवंटन घोटाले को भी 'कोलगेट' के नाम से जाना गया। उनके दूसरे कार्यकाल में आर्थिक सुधारों की गति धीमी रही। 22 मई, 2004 से 26 मई, 2014 तक दो बार भारत के प्रधानमंत्री रहे डॉ. मनमोहन सिंह की छवि बेहद कम बोलने वाले और शांत रहने वाले व्यक्ति की रही। हालांकि जब भी वे कुछ बोलते थे, वह सुर्खियां बन जाता था। मनमोहन सिंह ने कहा था, 'राजनीति में लंबे समय तक कोई दोस्त या दुश्मन नहीं होता। मैं एक खुली किताब की तरह हूं और मेरे बारे कर्म का कार्यकाल इतिहासकारों के मूल्यांकन का विषय है।'

उन्होंने 27 अगस्त, 2012 को संसद में कहा था, 'हजारों जवाब से अच्छी मेरी खामोशी है, जिसने न जाने कितने सवालों की आबरू रखी।' डॉ. मनमोहन सिंह को उनके अलोचकों द्वारा 'मूक प्रधानमंत्री' की संज्ञा दी जाती थी, लेकिन उन्होंने आम तौर पर इस पर कोई सार्वजनिक प्रतिक्रिया नहीं दी। इस पर उनकी पहली प्रतिक्रिया दिसम्बर 2018 में उनकी पुस्तक 'द चेंजिंग इंडिया' के विमोचन के अवसर पर सामने आई थी, जब उन्होंने कहा था, 'जो लोग कहते हैं कि मैं एक मूक प्रधानमंत्री था, मुझे लगता है कि मेरी ये पुस्तकें बोलती हैं। मैं अपने लिए निश्चित रूप से कहना चाहूंगा कि मैं एसा प्रधानमंत्री नहीं था, जो प्रेस और मीडिया से बात करने से डरता था। मैं नियमित रूप से प्रेस वालों से मिलता था और मैंने अपने कार्यकाल में जो भी विदेश यात्राएं कीं, उनके बाद मैंने विमान में या तुरंत बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस की।'

मनमोहन सिंह ने जनवरी, 2014 में बतौर प्रधानमंत्री अपनी आखिरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में मीडिया के उन सवालों का जवाब देते हुए-जिनमें कहा गया था कि उनका नेतृत्व कमजोर है और कई अवसरों पर वे निर्णायक नहीं रहे-कहा था, 'मैं यह नहीं मानता कि मैं एक कमजोर प्रधानमंत्री रहा हूं बल्कि मैं ईमानदारी से यह मानता हूं कि इतिहास मेरे प्रति समकालीन मीडिया या संसद में विपक्ष की तुलना में ज्यादा उदार होगा।' बहरहाल, राजनीति में डॉ. मनमोहन सिंह जैसी विद्वान वहुत ही कम देखने को मिलते हैं। उनकी सरकार के दौरान भ्रष्टाचार के आरोपों के बावजूद उनकी व्यक्तिगत ईमानदारी हमेशा संदेह से परे रही। वह ऐसे राजनेता थे, जिन्हें राजनीतिक सीमाओं से परे सम्मान प्राप्त था। कुल मिलाकर तमाम आलोचनाओं के बावजूद डॉ. सिंह ऐसे नेता के रूप में याद किए जाएंगे, जिन्होंने भारत को वैश्विक मंच पर सम्मानजनक स्थान दिलाया और भारत को आर्थिक एवं सामाजिक दृष्टि से मजबूत राष्ट्र बनाने में अहम योगदान दिया।

(लेख में विचार निजी हैं)

मनमोहन सिंह ने जनवरी, 2014 में बतौर प्रधानमंत्री आखिरी प्रेस कॉन्फ्रेंस में मीडिया के उन सवालों-जिनमें कहा गया था कि उनका नेतृत्व कमजोर है और कई अवसरों पर वे निर्णायक नहीं रहे-का जवाब देते हुए कहा था, 'मैं यह नहीं मानता कि मैं एक कमजोर प्रधानमंत्री रहा हूं बल्कि मैं ईमानदारी से यह मानता हूं कि इतिहास मेरे प्रति समकालीन मीडिया या संसद में विपक्ष की तुलना में ज्यादा उदार होगा।' वहरहाल, उनका योगदान भुलाया नहीं जा सकेगा

- भारत का रियल एस्टेट क्षेत्र सरकारी नीतियों के समर्थन, डिजिटल नवाचारों के बढ़ते उपयोग और संचारणीयता पर केंद्रित दृष्टिकोण के कारण 2030 तक एक लाख करोड़ डॉलर के बाजार आकार तक पहुंचने के लक्ष्य की ओर अग्रसर है
- यह क्षेत्र कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा रोजगार प्रदाता है, जो देश के 18 प्रतिशत कार्यबल को रोजगार देता है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में 7.3 प्रतिशत का योगदान देता है
- प्रॉपइक्विटी की रिपोर्ट के अनुसार, आने वाले वर्षों में भारत का रियल एस्टेट क्षेत्र देश की प्रगति का प्रतीक होगा

बोत : मीडिया इनपुट्स)

अलविदा! हां मनमोहन सिंह! हमने सड़कों पर आपका विरोध किया, खुशकिस्मत थे कि प्रधानमंत्री का वेखौफ विरोध किया जा सकता था। आपकी नीतियों से मतभेद रहा, लेकिन आपकी ईमानदारी पर शक की गुंजाइश नहीं रही। 'जुगि-दर'-प्रधानमंत्री बनने से पहले, उस बीच और बाद में, हमेशा आपने इसी तरह आत्मीयता से बुलाया। नमन! सत श्री अकाल!

योगेन्द्र यादव, सामाजिक चिंतक
@_YogendraYadav

मुसलमानों को मिल रहा लाभ

मोदी सरकार | **कौसर जहां**

उत्तर प्रदेश के कुंदरकी विधानसभा में 65 फीसद मुसलमान हैं, जहां भाजपा का विधायक बना। महाराष्ट्र में 38 मुस्लिम प्रभाव वाली सीटों पर बीजेपी की अगुवाई वाली महायुति को सफलता मिली। ये आंकड़े इसलिए जानना जरूरी हैं क्योंकि ये भारतीय राजनीति में तुष्टिकरण के बीते दौर की कहानी बयान करते हैं।

दिल्ली चुनाव जब दरवाजे पर दस्तक दे रहा है तो ये आंकड़े और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं। लोग मुझसे सवाल करते हैं कि मुसलमान क्या सचमुच बीजेपी को वोट कर सकता है? मैं पलट कर सवाल करती हूं क्या मुसलमान आम मनुष्य नहीं है? क्या मुसलमान को अच्छी बुनियादी सुविधाएं नहीं चाहिए? क्या मुस्लिम महिलाएं अच्छे और गरिमापूर्ण जीवन की हकदार नहीं हैं? हर कोई मानता है कि हां, मुसलमान की भी जरूरतें औरों की तरह हैं। फिर मैं उनसे कहती हूं कि वह वक्त गया जब डर दिखा कर मुसलमानों का वोट लिया जाता था। कुंदरकी और महाराष्ट्र के नतीजों को शक की निगाह से मत देखिए, बल्कि इस हकीकत को पहचानिए कि मोदी जी की योजनाएं बेहद असरदार रही हैं और उनकी वजह से पूरे देश में अलग तरह का भरोसा पैदा हुआ है। आज मुसलमान अपने बच्चों को अच्छी तालीम दिलाना चाहता है। उसे अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं की दरकार है। मुस्लिम महिलाओं को आर्थिक सशक्तिकरण की चिंता है। साथ ही, वे यह भी चाहती हैं कि उन्हें कोई तीन बार तलाक बोल कर घर छोड़ने को मजबूर नहीं कर सके। इन सभी पैमानों पर जब राजनीतिक दलों और सरकारों का आकलन होता है तो साफ हो जाता है कि जितना काम मोदी सरकार और बीजेपी सरकारों ने किया है, अतीत में या वर्तमान में किसी अन्य दल की सरकार ने नहीं किया। मोदी सरकार ने तीन तलाक खत्म किया और मुस्लिम महिलाओं को गरिमापूर्ण जीवन का हक दिया। ये महिलाएं बीजेपी की साइलेंट वोटर हैं। 'लखपति दीदी योजना' से तीन करोड़ महिलाओं को लखपति बनाने की कवायद शुरू की गई इसका फायदा हिन्दू-मुस्लिम हर जाति, पंथ की महिलाओं को मिल रहा है। उज्ज्वला का सिलेंडर धर्म देख कर नहीं दिया गया। हर घर शौचालय या

पीएम आवास के तहत सभी लोगों को पक्का घर का लाभ भी शत-प्रतिशत संतुष्टिकरण का माडल अपना कर हर वर्ग तक पहुंचाया गया। जिन प्रदेशों में भाजपा की सरकारें हैं, वहां बहनों को सीधे खाते में पैसे अलग-अलग योजनाओं के माध्यम से मिले। मुफ्त राशन का लाभ भी हर वर्ग, जाति, मजहब के लोगों को मिला, लेकिन दिल्ली के लोगों को साथ क्या हुआ और क्या हो रहा है? यहां की जनता को छलावा मिला। मुसलमानों का हक छीना गया है। दिल्ली वालों को इस बात का मलाल हो रहा है कि यहां बीजेपी की सरकार इतने सालों से क्यों नहीं है। लोग समझ गए हैं कि और चाहते हैं कि यहां भी बदलाव होना चाहिए। केजरीवाल समझते हैं कि केंद्र की योजनाओं का लाभ दिल्ली के मुसलमानों को मिल गया तो उनकी राजनीति संकट में पड़ जाएगी जबकि अब मुसलमान समझदार हैं, उन्हें अच्छाई और बुराई का फर्क मालूम है। मुझे पक्का यकीन है कि यहां अबकी बार मुसलमान सहित सभी वर्गों के लोग आम आदमी पार्टी को वोट नहीं करने वाले। इसकी कुछ वजह बहुत स्पष्ट हैं। दिल्ली में स्वास्थ्य सुविधाएं बुरी तरह चरमरा गई हैं। क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सभी अस्पतालों और स्वास्थ्य सेवाओं की खस्ताहाली से बेहाल हैं, लेकिन केजरीवाल सरकार का अहंकार इतना रहा कि जो आयुष्मान कार्ड योजना पूरे देश में लागू है, उसे दिल्ली में लागू नहीं होने दिया गया। शिक्षा का बहुत शोर प्रचार-प्रसार के लिहाज से अपनाया गया लेकिन इस मोर्चे पर भी क्या हुआ?

केजरीवाल के कुशासन का सबसे बड़ा भुक्तभोगी दिल्ली का गरीब, वंचित, हिन्दू-मुसलमान, मिडिल क्लास, कमेरा वर्ग सभी है। हां! पोटाली में आम आदमी पार्टी वालों ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। काम कुछ नहीं किया। शराब घोटाला, डीटीसी बस घोटाला, जल बोर्ड घोटाला, वक्फ के नाम पर घोटाला हुआ। हवाला में इनके नेता पकड़े गए। केंद्र की भाजपा सरकार हो या कई राज्यों में भाजपा की सरकारें, सबने मोदी जी के मूल मंत्र 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' को अक्षरशः अपनाया है। इस भावना के मुताबिक ही जनकल्याणकारी योजनाओं को जमीन पर उतारा है। इस वजह से मुसलमान इन योजनाओं में सबसे बड़ा लाभार्थी बन कर उभरा है। योजनाओं में सबको साथ लेकर चलने वाली बीजेपी ही दिल्ली को तेज रफ्तार वाला विकास देगी। यह भरोसा अब सबको होने लगा है।

(लेखिका दिल्ली स्टेट हज कमिटी की चेयरपर्सन हैं)

लालच | **संत राजिन्दर**

हम अपनी जिंदगी जीते हुए इस संसार की इच्छाओं को पूरा करने की कोशिश में ही लगे रहते हैं, जिसके कारण हमारी आत्मा पर मन-माया के पर्दे और गहरे होते चले जाते हैं। मन की इच्छाओं को पूरा करने का एक मुख्य कारण है, लालच। हम अपनी इच्छाओं के पीछे पागलों की तरह भागते रहते हैं, लेकिन हम यह नहीं जानते कि इच्छाओं का कोई अंत नहीं है। हमारी इच्छाएं दो तरह की होती हैं। एक, जो कुछ हमारे पास है, हम और अधिक मात्रा में पाना चाहते हैं। दूसरी, हम अपनी संपत्ति से तंग आ जाते हैं और कुछ नया पाना चाहते हैं। अतः हमारा मन हमें एक से दूसरी चीज में फंसाए रखता है। यह ऐसा है जैसे हम रेगिस्तान में मृग-मरीचिका के पीछे भागते हैं। उस वक्त हमें ऐसा लगता है कि पानी हमसे दूर नहीं है परंतु जैसे-जैसे हम पानी के पास जाते हैं, वह और भी दूर होता चला जाता है। हम इसके पीछे भागते रहते हैं, यह उम्मीद रखते हुए कि हम इस तक पहुंच जाएंगे परंतु वह पानी हमें नहीं मिलता। ऐसा ही सांसारिक खुशियों के साथ है। हमारे मन की प्यास कभी भी बुझती नहीं। हमारा मन और भी लालची होता चला जाता है। हमें लगता है कि इस संसार के ज्यादा से ज्यादा भौतिक पदार्थ पाने से हमें संतुष्टि मिलेगी, लेकिन यह प्रतिक्रिया चलती ही रहती है। हमें लगता है कि जो कुछ दूसरों के पास है, यदि वह हमारे पास होता तो हमें ज्यादा सुख मिलता। अतः हम उसे पाने की इच्छा अपने मन में पैदा करते हैं या फिर हम महसूस करते हैं कि जो कुछ हमारे पास है, उससे हम संतुष्ट नहीं हैं। इसलिए हम कुछ नया पाने की इच्छा करने लगते हैं। लालच हमें कई खतरनाक रास्तों पर ले जाता है। यह हमारे ध्यान को प्रभु से दूर कर देता है। जब हम दूसरों से वह चीज लेना चाहें जो वास्तव में हमारी नहीं है, तब यह हमें हिंसक भी बना देता है। चीनी समाज में कहा गया है, बहुत अधिक इच्छाएं रखने से बढ़ कर कोई अपराध नहीं, असंतुष्ट होने से बढ़ कर कोई संकट नहीं और लालची होने से बढ़ कर कोई दुर्भाग्य नहीं। अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए हम झूठ का भी सहारा लेते हैं। लालच हमें स्वार्थी भी बना देता है। बांट कर खाने की बजाय हम सब कुछ अपने लिए जमा करते जाते हैं।

रीडर्स मेल

बहुत याद आएंगे डॉ. सिंह

वर्ष 2024 जाते-जाते अर्थ जगत के बड़े विद्वान डॉ. मनमोहन सिंह को अपने साथ ले गया। वित्त मंत्री, वित्त सचिव तथा प्रधानमंत्री रहते हुए आर्थिक उदारीकरण में डॉ. मनमोहन सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका रही। नश्वर देह त्याग संसार का नियम है। सच तो यह भी है कि उन्होंने कभी संकीर्ण राजनीति को स्वीकार नहीं किया। अपनी विद्वता पर कभी अहंकार नहीं किया, जीवन भर विनम्रता, शांति, सद्भाव, उदारमना जैसे मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पित रहे। भारतीय राजनीति में निश्छल छवि के डॉ. सिंह अपनी सादगी के लिए सदैव स्मरणीय रहेंगे।

डॉ. सुधाकर आशावादी, मेरठ

इंडिया गठबंधन में रार

'इंडिया' गठबंधन को विधानसभा के चुनाव में मिली लगातार पराजय के कारण गठबंधन में दरार दिन-प्रतिदिन गहरी होती जा रही है। इस गठबंधन के बिखराव की शुरुआत कमलनाथ के बयान कौन 'अखिलेश-बिकलेश' से होती है। हरियाणा के विधानसभा चुनाव में भी आम आदमी पार्टी और समाजवादी पार्टी का कांग्रेस के साथ समझौता न होना गठबंधन में दरार होने का बड़ा कारण है। महाराष्ट्र में इंडिया ब्लॉक को मिली पराजय के कारण यह लड़ाई खुल कर सामने आ गई थी। महाराष्ट्र में शिवसेना (उद्धव) के सावरकर के मुद्दे पर कांग्रेस के साथ मतभेद खुल कर सामने आए हैं। अब दिल्ली के चुनावी दंगल में अंदरूनी कलह अपने चरम पर है। ऐसा प्रतीत होता है कि गठबंधन में चुनावी असफलताओं के कारण घटक दलों का कांग्रेस से मोह भंग हो चुका है। अब ममता बनर्जी ने कांग्रेस के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। कुल मिला कर देखा जाए तो इंडिया गठबंधन में अविश्वास, आपसी टकराव और अनिर्णय की स्थिति ने इंडिया गठबंधन को खोखला कर दिया है।

वीरेंद्र कुमार जाटव, दिल्ली

ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर जोर

ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान हेतु सरकार ने हाल ही में 10,000 बहुउद्देशीय प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (पैक्स) की शुरुआत की। यह पहल रोजगार सृजन के साथ-साथ आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता और किसानों की उपज को वैश्विक बाजारों से जोड़ने का मार्ग प्रशस्त करती है। पैक्स सहकारी त्रिस्तरीय संरचना की आधारशिला, ग्रामीण आवश्यकताओं जैसे ऋण, खाद, भंडारण, और जल प्रबंधन में अहम भूमिका निभाती हैं। आने वाले पांच वर्षों में 2 लाख पैक्स के गठन का लक्ष्य निर्धारित है। सरकार ने निष्क्रिय पैक्स के पुनरुद्धार और नई समितियों की स्थापना हेतु SOP तैयार की है। इन समितियों को भंडारण, उर्वरक वितरण, जल प्रबंधन, और डिजिटल सेवाओं जैसे टिकट बुकिंग में बहुआयामी केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। पैक्स का कंप्यूटरीकरण पारदर्शिता और दक्षता को बढ़ावा देता है। नाबार्ड और एनडीडीबी जैसी संस्थाएं पैक्स को मजबूत करने और महिलाओं, दलितों और आदिवासियों को भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्रिय हैं। यह पहल न केवल ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देती है, बल्कि 'सहकार से समृद्धि' के लक्ष्य को साकार करते हुए आत्मनिर्भर और सशक्त गांवों की आधारशिला भी रखती है।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत', ई मेल से
letter.editorsahara@gmail.com

हमें गर्व है हम भारतीय हैं

राष्ट्रीय सहारा
सहारा इण्डिया मास कम्युनिकेशन के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक जिया काज़ी द्वारा सहारा इंडिया मास कम्युनिकेशन प्रेस, सी-2,3,4, सेक्टर-11, नोएडा में मुद्रित तथा 705-706, सातवां तल, नवांत हाउस, 21 के.जी. मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित।
: समूह संपादक - डॉ. विजय राय; स्थानीय संपादक - राकेश मिश्रा* ।
दूरभाष - दिल्ली कार्यालय - 23362368, 23362369, 23362371, 23362372, फैक्स - 23362370, दूरभाष - नोएडा प्रेस 0120-2444755, 2444756 फैक्स - 2550750
वर्ष-34, अंक 131
आर.एन.आई. सं. 53469/91, पंजीकरण संख्या UP/BR /GZB- 38/2024-2026
*इस अंक में प्रकाशित समस्त सामग्री के चयन एवं संपादन तथा कानूनी पहलुओं के लिए उत्तरदायी

बिज़नेस स्टैंडर्ड
वर्ष 17 अंक 269

घरेलू प्रवासन में कमी

एक अनुमान के मुताबिक तकरीबन 40 करोड़ भारतीय देश में ही प्रवासन करते हैं और एक अध्ययन बताता है कि यह 2011 की पिछली जनगणना में देश में प्रवासन के आंकड़ों से 11.78 फीसदी कम है। इसके परिणामस्वरूप प्रवासन दर जो 2011 में आबादी की 37.64 फीसदी थी, 2023 में कम होकर 28.88 फीसदी रह गई है। इस संदर्भ में प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा जारी अध्ययन देश में प्रवासन और शहरीकरण के रुझानों को समझने में बहुत मददगार साबित हो सकता है। आधिकारिक आंकड़ों पर निर्भर रहने के बजाय अध्ययन उच्च तीव्रता वाले आंकड़ों का इस्तेमाल करता है। मसलन ट्रेनों में अनारक्षित यात्रियों की संख्या, मोबाइल फोन के रोमिंग आंकड़े और जिलावार बैंकिंग आंकड़े। वह इनकी मदद से यह समझने का प्रयास करता है कि प्रवासन किस प्रकार हो रहा है। देश में प्रवासन की बात करें तो यह मुख्य रूप से ग्रामीण गरीबों या देश के कम विकसित क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए एक किस्म की पलायन रणनीति होती है ताकि वे अपनी स्थिति बेहतर बना सकें। हालांकि अक्सर यह उनकी आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर पाती। ऐसे में घरेलू प्रवासन आमतौर पर असमान विकास रणनीतियों और क्षेत्रीय असमानता का नतीजा होता है।

जैसा कि अध्ययन दर्शाता है, प्रवासन में कमी को इस तरह भी देखा जा सकता है कि शायद इन प्रवासियों के मूल निवास वाली जगहों पर आर्थिक हालात और अवसरों में सुधार हुआ हो। यह भी माना जा सकता है कि वे जगहें देश के सामाजिक-आर्थिक विकास से लाभान्वित हुई हों। इसके साथ ही यह बड़ी शहरी बसाहटों में कमजोर होते आर्थिक अवसरों का भी परिणाम हो सकता है जिसके चलते संभावित मजदूर अपने घरों को रुक कर वहीं आजीविका के अवसर तलाश करते हों या फिर वे अपने घर के आसपास के राज्यों में काम करने जाते हों।

राज्यवार अंतर एक दिलचस्प तस्वीर पेश करता है। उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल मिलकर करीब आधे यानी 48 फीसदी प्रवासी श्रमिक भेजते हैं। इसी के साथ महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु मिलकर 48 फीसदी प्रवासी श्रमिकों का ठिकाना बनते हैं। परंतु इन राज्यों में भी संबंधित राज्यों को जाने वाले प्रवासियों का प्रतिशत कम हो गया है। महामारी के दौरान उलट प्रवासन के स्पष्ट प्रमाण देखने को मिले लेकिन प्रतिबंध समाप्त होने के बाद लोग वापस शहरों और औद्योगिक ठिकानों की ओर वापस लौटे। हालांकि यह वापसी अभी भी महामारी के पहले वाले स्तर तक नहीं पहुंच सकी है।

प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा जारी एक पर्चा इस मुद्दे को आगे और स्पष्ट करता है। यह पर्चा भारतीय रेल के उपनगरीय परिवहन के रुझानों का अध्ययन करता है। पिछले दशक में चार महानगरों की उपनगरीय यात्रा कम हुई या बहुत कम बढ़ी। इसके साथ ही महाराष्ट्र में ठाणे, तमिलनाडु में कांचीपुरम, उत्तर प्रदेश में गाजियाबाद और पश्चिम बंगाल में उत्तर चौबीस परगना और दक्षिण चौबीस परगना जैसे वैकल्पिक शहरों का तेजी से विकास हुआ जो प्रवासी श्रमिकों के ठिकाने बने। स्पष्ट है कि ये क्षेत्र मुंबई, चेन्नई, दिल्ली और कोलकाता जाने वाले श्रमिकों को कुछ हद तक रोक पाने में कामयाब रहे।

इस बारे में दो अहम मुद्दे हैं जिन पर नीतिगत ध्यान देने की जरूरत है। पहला, सार्वजनिक सेवा आपूर्ति में सुधार करने की आवश्यकता है। इसके साथ ही ग्रामीण इलाकों और छोटे कस्बों में रोजगार तैयार करने की जरूरत है ताकि देश में अतिशय प्रवासन को रोका जा सके। रोजगार और आजीविका के अवसरों को लोगों के पास लाने तथा परिवहन अधोसंरचना को मजबूत बनाने से देश भर में उपनगरीय तथा ग्रामीण इलाकों में कारोबारों के स्थानांतरण में मदद मिल सकती है। दूसरा, कोशिश की जानी चाहिए कि शहरीकरण के एकतरफा रुझान को सुधारा जा सके और शहरों की भीड़भाड़ को कम किया जा सके। नए औद्योगिक केंद्र और उपनगर बनाकर भी प्रवासन को छोटे कस्बों की ओर स्थानांतरित किया जा सकता है। इससे देश भर में संतुलित विकास संभव होगा।

रिजर्व बैंक ने इस साल बढ़ाया निगरानी का दायरा

ग्राहकों के हित को सर्वोपरि रखते हुए केंद्रीय बैंक ने उन पर पूरे साल सख्ती दिखाई, जो नियमों का अक्षरशः पालन नहीं कर रहे थे। बता रहे हैं तमाल बंद्योपाध्याय

साल 2024 अब आखिरी पड़ाव पर है, इसलिए देखते हैं कि भारत के वित्तीय क्षेत्र के लिए यह साल कैसा रहा। नीतिगत दरों में साल भर कोई बदलाव नहीं हुआ और यह 6.5 प्रतिशत बनी रही। किंतु भारतीय रिजर्व बैंक को मौद्रिक नीति समिति की अक्टूबर और दिसंबर में हुई आखिरी दो बैठकों में कुछ हरकत देखी गई क्योंकि आर्थिक वृद्धि और महंगाई का समीकरण बदलने लगा था। साल भर सख्ती दिखाते आए रिजर्व बैंक ने अक्टूबर में अपना नीतिगत रुख 'तटस्थ' कर लिया और कुछ भी नया नहीं करने का फैसला किया। इसके फौरन बाद दिसंबर में उसने बैंकों का नकद आरक्षी अनुपात (सीआरआर) घटा दिया ताकि बाजार में और पैसा आ सके।

गुजरते साल की घटनाओं और रुझानों पर विचार करने से पहले हमें कुछ आंकड़ों पर विचार करना चाहिए। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) पर आधारित मुद्रास्फीति दिसंबर 2023 में 5.69 प्रतिशत थी। जनवरी 2024 में यह कम होकर 5.10 प्रतिशत रह गई और जुलाई में तो गिरकर 3.6 प्रतिशत पर टिक गई। पिछले पांच साल में यह सीपीआई महंगाई का दूसरा सबसे कम आंकड़ा था और रिजर्व बैंक के सहजता वाले दायरे में काफी नीचे आ रहा था। लेकिन खाद्य कीमतें बढ़जने के साथ ही अक्टूबर में यह 14 महीने के सबसे ऊंचे आंकड़े 6.2 प्रतिशत पर पहुंच गई। यह आंकड़ा केंद्रीय बैंक के महंगाई लक्ष्य को लांघ गया था। नवंबर में यह एक बार फिर घटकर 5.47 प्रतिशत रहा।

देश की अर्थव्यवस्था में वृद्धि की रफ्तार भी लगातार धीमी होती रही है। वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में मार्च तिमाही के दौरान 7.76 प्रतिशत वृद्धि हुई थी, जो जून तिमाही में घटकर 6.5 प्रतिशत रह गई और सितंबर तिमाही में तो लुढ़ककर केवल 5.36 प्रतिशत पर टिक गई। दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था में लगातार तीसरी तिमाही में धीमी वृद्धि रही है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि भारत की अर्थव्यवस्था, बैंकिंग और वित्त का संकेत देने वाले दूसरे पैमाने क्या कह रहे हैं?

10 साल के सरकारी बॉन्ड की यील्ड 2023 में 7.17 प्रतिशत पर बंद हुई थी। पिछले शुक्रवार (20 दिसंबर) को यह 38 आधार अंक नीचे 6.79 प्रतिशत पर बंद हुई। पूरे साल की बात करें तो 22 अप्रैल को यील्ड सबसे ज्यादा 7.245 प्रतिशत तक गई और 16 दिसंबर को सबसे कम 6.65 प्रतिशत रही। एक आधार अंक प्रतिशत का सौवां हिस्सा होता है। बॉन्ड की यील्ड बढ़ती है तो उसकी कीमत घटती है और यील्ड घटने पर कीमत बढ़ती है।

2024 में अमेरिका के 10 साल के बॉन्ड की यील्ड भी 3.88 प्रतिशत से बढ़कर 4.55 प्रतिशत हो गई। इससे भारत और अमेरिका के 10 साल के बॉन्ड की यील्ड में 224 आधार अंक का अंतर रह गया, जो दिसंबर 2023 में 330 आधार अंक था। इस समय यह अंतर दो दशक में सबसे कम आंकड़े के आसपास है। इससे विदेशी निवेशकों की भारत में दिलचस्पी कम हो सकती है क्योंकि अमेरिका में उन्हें बॉन्ड पर ज्यादा रिटर्न मिल रहा है।

रुपये और डॉलर की विनिमय दर कैसी रही है? भारतीय मुद्रा पिछले साल 83.21 प्रति डॉलर पर बंद हुई थी। इस साल डॉलर की कीमत 11 मार्च को सबसे कम 82.76 रुपये रही और इस शुक्रवार यानी 27 दिसंबर को सबसे अधिक 85.54 रुपये हो गई। इस साल अभी तक डॉलर की औसत कीमत 83.64 रुपये के आसपास रही है। 2023 के आखिरी शुक्रवार को देश का विदेशी मुद्रा भंडार 623 अरब डॉलर था। इस साल 27 सितंबर को यह सबसे अधिक 704.9 अरब डॉलर तक पहुंचा और उसके बाद से घट ही रहा है। यह भंडार 13 दिसंबर तक घटकर 644.4 अरब डॉलर रह गया क्योंकि विदेशी मुद्रा बाजार में उतार-चढ़ाव रोकने के लिए रिजर्व बैंक डॉलर बेच रहा है।

निफ्टी 50 पिछले साल 21,731 पर बंद हुआ था। इस साल के आखिरी शुक्रवार यानी 27 दिसंबर को यह 23,813 पर बंद हुआ। इस साल यह सूचकांक 27 सितंबर को सबसे अधिक 26,277 अंक तक पहुंचा था और 24 जनवरी को यह सबसे कम 21,137 अंक पर बंद हुआ। ब्रेंट क्रूड के दाम पिछले साल दिसंबर में 77.04 डॉलर प्रति बैरल थे। 12 अप्रैल 2024 को भाव चढ़कर 92.18 डॉलर तक पहुंच गया और पिछले हफ्ते लगभग 72.50 डॉलर पर बंद हुआ। इस साल 10 सितंबर को ब्रेंट क्रूड का दाम सबसे कम 68.68 डॉलर प्रति बैरल था।

पिछले वर्ष के अंत तक बैंकिंग प्रणाली ने कुल 159.6 लाख करोड़ रुपये के कर्ज दिए थे। इस साल 29 नवंबर तक उनके द्वारा दिए गए कर्ज की कुल रकम बढ़कर 175 लाख करोड़ रुपये हो गई। इसी दौरान कुल जमा रकम 200.8 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 220 लाख करोड़ रुपये हो गई है। मगर इस साल बैंकिंग क्षेत्र की जमा और ऋण में वृद्धि की रफ्तार बहुत कम हो गई है।

अंत में वित्तीय प्रणाली की सेहत का जायजा भी लेते हैं। नवीनतम आंकड़े तो इस हफ्ते के अंत तक ही आएंगे, जब भारतीय रिजर्व बैंक की वार्षिक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट जारी होगी। बैंकिंग प्रणाली की कुल गैर निष्पादित आस्तियां (एनपीए) सितंबर 2023 में 3.2 प्रतिशत थीं, जो मार्च 2024 में घटकर 2.8 प्रतिशत रह गईं। इस दौरान प्रोविजनिंग के बाद शुद्ध एनपीए 0.8 प्रतिशत से घटकर 0.6 प्रतिशत रह गया। मगर पूंजी पर्याप्तता अनुपात 16.8 प्रतिशत ही रहा। इसी बीच गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) का कुल एनपीए भी 4.6 प्रतिशत से घटकर 4 प्रतिशत रह गया और परिसंपत्ति पर रिटर्न 2.9 प्रतिशत से बढ़कर 3.3 प्रतिशत हो गया। उनके पूंजी पर्याप्तता अनुपात में मामूली गिरावट आई और यह 27.6 प्रतिशत से घटकर 26.6 प्रतिशत रह गया।

बहरहाल 2024 में रिजर्व बैंक का ज्यादा ध्यान निगरानी करने और सतर्कता बरतने पर रहा है। उसने नियमों का अक्षरशः पालन नहीं करने वालों पर कड़ी नजर रखी है। ग्राहकों के हित को सबसे ऊपर रखते हुए केंद्रीय बैंक लोकतांत्रिक रहा है। उसने कार्रवाई करते समय बड़ी या छोटी कंपनियों के बीच भेदभाव नहीं किया है और दोनों के साथ एक जैसा बरताव किया है।

पीयर-टु-पीयर (पीटूपी) उधारी देने वाले प्लेटफॉर्म जब जमा लेने वाली एनबीएफसी की तरह काम करने लगे तो रिजर्व बैंक ने उन्हें सही सबक सिखाया। उनमें से कुछ प्लेटफॉर्म सामूहिक निवेश योजनाएं भी चलाने लगे थे, जहां कर्ज देने वालों से पैसा इकट्ठा कर लिया जाता था और फिर वह पैसा उधार मांगने वाले तमाम लोगों को दिया जाता था। जब नियामक को पता चला कि कई नियमों का उल्लंघन करने के साथ ही पीटूपी उधारी प्लेटफॉर्म मध्यस्थ की तरह काम नहीं कर रहे हैं बल्कि कर्ज को निवेश योजना की तरह पेश कर रहे हैं और नकदी के विकल्प दे रहे हैं तब उसे दखल देना पड़ा।

अगर भारत का पीटूपी बाजार भी चीन की राह पर चलने लगे तो किसी को ताज्जुब नहीं होगा। 2007 और 2020 के बीच चीन का पीटूपी बाजार बुलबुले की तरह दिखा। बाजार एकाएक चढ़ने लगा मगर उसके भागीदारों ने सूचना देने वाले मध्यस्थों के बजाय छद्म बैंक की तरह काम करना शुरू कर दिया और मूलधन की गारंटी भी देने लगे तो यह बुलबुले की तरह फूटकर खत्म हो गया।

ज्यादा वक्त नहीं बीता है, जब रिजर्व बैंक ने देश के सबसे बड़े निजी बैंक, एक बहुत बड़े सरकारी बैंक, एक भारीभरकम एनबीएफसी और कुछ अन्य के खिलाफ कार्रवाई की थी। उसने इन सभी को कुछ योजनाओं में नए ग्राहक जोड़ने से रोक दिया था। इस साल बैंकिंग नियामक ने सफाई का यह अभियान नए उत्साह के साथ चलाया। अप्रैल में उसने बड़े निजी बैंक को ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग के जरिये नए ग्राहक जोड़ने तथा नए क्रेडिट कार्ड जारी करने से रोका। एक पेमेंट बैंक 15 मार्च को बंद हो गया। उससे पहले मार्च के पहले हफ्ते में केंद्रीय बैंक ने निगरानी से जुड़ी चिंताओं का हवाला देकर एक गोल्ड लोन कंपनी पर रोक लगा दी।

रिजर्व बैंक ने एक एनबीएफसी को भी शेयर और डीबेंचर के बदले किसी भी तरह का कर्ज देने से रोका। अक्टूबर में ऐसा ही आदेश जारी कर उसने चार एनबीएफसी को नए कर्ज मंजूर करने और बांटने से रोक दिया गया। उसे पता चला कि ये एनबीएफसी कर्ज के बदले ज्यादा ब्याज वसूल रहे हैं और कर्ज देते समय कर्जदार की आय तथा मासिक किस्त चुकाने की क्षमता भी नियमानुसार नहीं आंक रहे हैं। इतना ही नहीं वे ग्राहकों को नया कर्ज लेकर पुराना कर्ज चुकाने के लिए भी लुभा रही थीं।

कुछ मामलों में रिजर्व बैंक अपने आदेश की समीक्षा कर कंपनियों को काम दोबारा शुरू करने की इजाजत दे चुका है। बाकी कंपनियां राहत का इंतजार कर रही हैं। मगर इतना साफ है कि दो एनबीएफसी को बंद होते देख और कुछ बैंकों को लगभग बंद होते देखने के बाद नियामक ने निगरानी करने का अपना तरीका बदल लिया है। क्या यह सिलसिला अगले साल भी जारी रहेगा? क्या फरवरी में दर घटाई जाएंगी? और ऐसा होता है तो दर कटौती का सिलसिला लंबा चलेगा या जल्दी थम जाएगा? देखते हैं कि रिजर्व बैंक के नए गवर्नर अपनी प्राथमिकताएं कैसे तय करते हैं।

असंभव को संभव करने वाले राजनेता

सन 1996 में जब मनमोहन सिंह ने वित्त मंत्री का पद छोड़ा तब उनके मित्रों ने उन्हें सलाह दी कि वह कांग्रेस की मूल्यविहीन राजनीति में गुम न हों और उन लोगों के बीच अपना समर्थन और आधार बनाए रखें जो उन्हें आर्थिक सुधारों के लिए सराहते हैं।

इस पर सिंह ने अपनी स्वाभाविक शर्मीली मुस्कान के साथ कहा था, 'लेकिन मैं राजनीति में हूं।' उनके इस जवाब के बाद चुप्पी छा जाती थी क्योंकि लोग शायद उन्हें इस तरह देखते ही नहीं थे।

तथ्य यही है कि मनमोहन सिंह एक राजनेता थे, भले ही वह इसे स्वीकार करने से बचते थे। इतना ही नहीं वह एक कुशल वार्ताकार थे। कुछ ही लोगों को याद होगा कि 2002 में जम्मू कश्मीर विधान सभा चुनावों के बाद कांग्रेस और पीपल्स डेमोक्रेटिक पार्टी यानी पीडीपी के बीच गठबंधन को मूर्त रूप देने के लिए मनमोहन सिंह को ही भेजा गया था। उक्त संवेदनशील सीमावर्ती राज्य में शांति और स्थिरता की अहमियत को समझते हुए तथा सरकार को सही मायनों में जनता का प्रतिनिधित्व वाला बनाना सुनिश्चित करते हुए सिंह ने असंभव को संभव कर दिखाया था। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि गुलाम नबी आजाद के नेतृत्व वाली कांग्रेस और मुफ्ती मोहम्मद सईद के नेतृत्व वाली पीडीपी बारी-बारी से मुख्यमंत्री बनाएं। यह रिश्ता 2008 के विधानसभा चुनावों से छह महीने पहले टूट गया लेकिन इसके बावजूद वह एक ऐसी व्यवस्था कायम करवाने में कामयाब रहे जिससे जम्मू कश्मीर के लोगों का भरोसा जीता जा सके। यह बारी-बारी से मुख्यमंत्री चुने जाने का सबसे पहला और सफल प्रयोग था।

उनका यह गुण उस समय भी काम आया जब 2009 के लोक सभा चुनावों में जीत के बाद उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री और बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की नेता मायावती ने उन्हें बधाई देने के लिए फोन किया। सिंह ने उन्हें अपनी 'छोटी बहन' बताकर उनका दिल जीत लिया। किसी और के मुंह से यह बात खराब लग सकती थी लेकिन सिंह के मुंह से बात वैसी ही थी जैसी सामाजिक रूप से वंचित को खुले दिल से गले लगाना।

आदिति फडणीस

इसी प्रकार 2008 की गर्मियों में सिंह ने समाजवादी पार्टी के नेताओं से बात की और उनकी समझदारी से अपनी सरकार बचाई। दोनों दलों में मधुर संबंध नहीं थे लेकिन वे मनमोहन सिंह के लिए एक साथ आए।

एक राजनेता के रूप में सिंह के सामने गठबंधन सरकार चलाने की लगभग असंभव जिम्मेदारी थी। ढेर सारे कांग्रेस नेता ऐसे भी थे जो पार्टी में खुद को सिंह से वरिष्ठ और बेहतर राजनेता मानते थे। तमाम अन्य लोगों की तरह सिंह भी जानते थे कि किसी भी विषय पर अंतिम निर्णय उनका नहीं बल्कि उनके निवास से दो किलोमीटर दूर रहने वाली सोनिया गांधी का होगा।

एक समय पर उन्होंने समझौते भी किए फिर चाहे वे कितने भी खराब क्यों न रहे हों। उन्होंने एक मंत्री को पद पर बनाए रखा जिस पर हत्या का आरोप था। मंत्रिमंडल के फेरबदल में उन्होंने पेट्रोलियम मंत्री के पद पर एक ऐसे व्यक्ति को नियुक्त किया जो पेट्रोलियम कारोबार वाली एक कंपनी से रिश्तों के लिए जाना जाता था। उनके संचार मंत्री का भाई मीडिया कारोबार चलाता था जो एक हद तक संचार मंत्रालय द्वारा भी विनियमित होता था।

परंतु ऐसे भी अवसर आए जब उन्होंने कठोरता दिखाई। जब भ्रष्टाचार के लिए दोषी एक मंत्री को पद छोड़ना था और गठबंधन का दबाव था कि मंत्री को दोबारा पद सौंपा जाए तब उन्होंने कड़ाई बरती।

इसके बावजूद कांग्रेस ने हमेशा सोनिया गांधी को ही बॉस का दर्जा दिया, न कि प्रधानमंत्री को। तमाम लोग प्रधानमंत्री कार्यालय को कोई काम करने के लिए कहते और साथ में जोड़ देते कि 'मैडम से बात हो गई है।' राज्य भी केंद्र को तवज्जो नहीं देते थे। तत्कालीन गृहमंत्री शिवराज पाटिल ने संसद में स्वीकार किया था कि पंजाब विधानसभा द्वारा हरियाणा के साथ जल साझेदारी के वादे को तोड़ने और मणिपुर सरकार द्वारा कुछ इलाकों में सशस्त्र बल विशेष अधिकार कानून समाप्त करने जैसे अवसरों पर राज्यों ने केंद्र की सलाह के प्रतिकूल काम किया था। उनके गृह मंत्री ने बार-बार दोहराया कि वह तब तक पद पर रहेंगे जब तक उन्हें कांग्रेस अध्यक्ष का भरोसा हासिल है। वह शायद भारत के संविधान को भूल गए जिसमें लिखा है कि मंत्रियों की नियुक्ति प्रधानमंत्री की सलाह पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। मनमोहन सिंह के मीडिया सलाहकार रहे संजय बारू ने अपनी पुस्तक 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर: द मेकिंग ऐंड अनमेकिंग ऑफ मनमोहन सिंह' में सिंह के हवाले से लिखा है, 'देखिए, आपको एक बात समझनी होगी। सत्ता के दो केंद्र नहीं हो सकते। इससे भ्रम की स्थिति बनती है। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि पार्टी अध्यक्ष ही सत्ता की केंद्र हैं। सरकार पार्टी के प्रति जवाबदेह है।'

परंतु इन बातों के बीच मनमोहन सिंह को कम करके आंकना समझदारी नहीं होगी। उस कनिष्ठ मंत्री का किस्सा याद कीजिए जिसे उसके वरिष्ठ सहयोगी की बीमारी के समय मंत्रालय संभालने को कहा गया। जब अखबारों ने यह छापा कि उक्त कनिष्ठ मंत्री अपनी 'पदोन्नति' से इतने प्रसन्न हैं कि वह जश्न मनाने के लिए पार्टी कर रहे हैं और यह भूल गए हैं कि वह केवल अस्पताल में कोमा में पड़े अपने वरिष्ठ साथी की जगह काम कर रहे हैं, मनमोहन सिंह ने चुपचाप राष्ट्रपति को सूचित किया कि उक्त मंत्रालय वह स्वयं देखेंगे।

जुलाई 2008 में जब उनकी सरकार के विश्वास मत पर बहस चल रही थी तब उन्होंने तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष को सलाह दी थी कि वह अपना भविष्य बांचने वाले को बदल दें क्योंकि वह अक्सर उनकी सरकार गिरने की भविष्यवाणी करता रहता है। या फिर उनका यह पूछना कि वाजपेयी सरकार ने जब कंधार में आतंकवादियों को मंत्री की निगरानी में सुरक्षित भेजा तब वह दरअसल क्या करना चाह रही थी?

उसके बाद 23 मार्च, 2011 को जब लोक सभा में वोट के बदले नोट मामले पर चर्चा चल रही थी और मनमोहन सिंह विपक्ष के सवालों का जवाब दे रहे थे तब नेता प्रतिपक्ष ने उन पर व्यंग्य करते हुए कहा था, 'तू इधर उधर की न बात कर, ये बता कि कारवां क्यों लुटा, तुझे राहजन से गिला नहीं, तेरी रहबरी का सवाल है।'

इस पर मनमोहन सिंह ने जवाब दिया था, 'माना कि तेरी दीद के काबिल नहीं हूं मैं, तू मेरा शौक देख, मेरा इंतजार देख।' इसके बाद स्वराज सहित सारा विपक्ष मुस्करा पड़ा।

आप एक सफल प्रधानमंत्री को लेकर चाहे जो धारणा बनाएं, वह ऐसी हर धारणा को चुनौती देते थे। उन्हें उनकी वाक कला के लिए नहीं जाना जाता था। उन्होंने कभी सत्ता या अधिकार का भाव नहीं दिखाया। वह हवाई बातें करने से बचते थे और शिखर बैठकों में जहां दूसरे लोग कैमरे पर मुस्कराते या बातचीत करते नजर आते थे, वहीं अक्सर मनमोहन सिंह कहीं खोये हुए नजर आते थे। इसके बावजूद वह ऐसे प्रधानमंत्री थे जिसे उसकी बुद्धिमत्ता, बौद्धिकता और सादगी के लिए याद किया जाएगा।

आपका पक्ष

देश ने महान अर्थशास्त्री डॉ मनमोहन सिंह को खो दिया

हमारे देश ने आर्थिक व्यवस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले विश्वविख्यात अर्थशास्त्री पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह को खो दिया। डॉ सिंह का 92 वर्ष की आयु में गुरुवार रात दिल्ली स्थित एम्स में निधन हो गया। उन्होंने वर्ष 1991 में भारत की आर्थिक व्यवस्था की नाजुक दौर को संभालने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने देश को आर्थिक मंदी से उबारने के लिए पांच उपाय बताए थे। पहले उपाय में उन्होंने जीएसटी को तर्कसंगत बनाने की सलाह दी। दूसरे में गांवों में खपत बढ़ाने, कृषि में और सुधार लाने, तीसरे में कर्ज की कमी को पूंजी निर्माण के लिए जरूरी, चौथे में नौकरी बढ़ाने वाले क्षेत्रों की तरफ गंभीरता दिखाने तथा पांचवें उपाय में उन्होंने अमेरिका-चीन में चल रहे व्यापार युद्ध में नए निर्यात बाजारों को तलाशने की सलाह दी थी। उन्होंने हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग पहचान देने और इसे अंतरराष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के उद्देश्य से 10 जनवरी, 2006 से दुनियाभर में विश्व हिंदी दिवस मनाने का ऐलान किया था। उन्होंने गांवों की दशा सुधारने के लिए 24 अप्रैल, 2010 को पंचायती राज दिवस का भी शुभारंभ किया। उन्होंने कहा था कि अगर पंचायती राज संस्थाएं उचित तरीके से काम करती है और लोग विकास कार्य में भाग लेता है, तो देश में माओवाद का भी मुकाबला किया जा सकता है। बेशक वह दुनिया छोड़ गए हों लेकिन उन्होंने देश की आर्थिक व्यवस्था को जो नई पहचान दी है उस पर देश और सारी दुनिया अमल करती रहेगी।

राजेश कुमार चौहान, जालंधर

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ मनमोहन सिंह की फाइल फोटो

भारत और कुवैत के बीच व्यापारिक संबंध

वैश्विक और रणनीतिक क्षेत्र में कुवैत के रूप में भारत को खाड़ी क्षेत्र के एक और सहयोगी देश मिल गया है। कुवैत की कुल 43 लाख की आबादी में लगभग एक चौथाई अर्थात 10 लाख से ज्यादा भारतीय हैं और वहां के कुल श्रमिकों में 30 प्रतिशत भारतीय हैं। वहां रह रहे भारतीयों की वजह से ही भारत में मौजूद अनेक भारतीय परिवारों के आर्थिक स्तर में सुधार हुआ है। वहीं भारत का लगनशील कुशल श्रम कुवैत की प्रगति मे सहायक बना है। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया कुवैत दौरे से दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंध और मजबूत हुए हैं। दोनों देशों के बीच 2023-2024 में 10.479 अरब डॉलर का व्यापार हुआ। भारत का कुवैत में निर्यात 2.1 अरब डॉलर का रहा और इसमें सालाना 34.78 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। भारत ने 2022 में कुवैत से 15 अरब डॉलर के कच्चे तेल, गैस और पेट्रोकेमिकल उत्पाद का आयात किया था। वर्तमान में गल्फ को-ऑपरेशन काउंसिल अर्थात जीसीसी की अध्यक्षता कुवैत के पास है। वह इस काउंसिल के सभी देशों का दौरा कर चुके हैं। इससे खाड़ी के देशों के साथ संबंधों में बहुत ही प्रभावी एवं सकारात्मक परिवर्तन आया है। भारत के कुल वैश्विक व्यापार में जीसीसी देशों की हिस्सेदारी 16 प्रतिशत है तथा 2022-23 में भारत का जीसीसी देशों के साथ 184 अरब डॉलर का व्यापार हुआ था।

विमलेश पगारिया, धार

पाठक अपनी राय हमें इस पते पर भेज सकते हैं : संपादक, बिजनेस स्टैंडर्ड, 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली 110002. आप हमें ईमेल भी कर सकते हैं : lettershindi@bsmail.in
पत्र/ईमेल में अपना डाक पता और टेलीफोन नंबर अवश्य लिखें।

देश-दुनिया

फोटो - पीटीआई

जम्मू-कश्मीर के बारामूला में ताजा बर्फबारी के कारण सड़कों पर बर्फ की मोटी चादर बिछ गई। मौसम विभाग के अनुसार उत्तर कश्मीर के कुपवाड़ा में न्यूनतम तापमान शून्य से 6.4 डिग्री सेल्सियस नीचे दर्ज किया गया जबकि कोकेरनाग में यह शून्य से 4.8 डिग्री सेल्सियस नीचे रहा।

पाक-अफ़गान टकराव

शांति को खतरा

पाकिस्तान के अफगानिस्तान पर हवाई हमलों ने दक्षिण एशिया में शांति के लिए खतरा पैदा कर दिया है। 24 दिसंबर, 2024 को पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के बरमाल जिले में हवाई हमले किए जिसमें कम से कम 15 नागरिकों की जानें गईं। सात गांवों पर हुए हमलों में भारी विनाश हुआ है। इस घटना ने पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच तनाव और बढ़ा दिया है जिससे दक्षिण एशिया में स्थायित्व को खतरा पैदा हो गया है। हवाई हमले तहरीके तालिबान पाकिस्तान-टीटीपी की गतिविधियों के खिलाफपाकिस्तान की कार्रवाई है। पाकिस्तान ने इसे अपनी सीमाओं पर टीटीपी के अड्डों का सफाया करने और सीमा सुरक्षा के नाम पर उचित ठहराया है। लेकिन अफगान तालिबान ने इन आरोपों से इनकार किया है। उसने दावा किया है कि हवाई हमलों में नागरिकों को निशाना बनाया गया है जिनमें पाकिस्तान के कबीलाई क्षेत्रों में सैनिक कार्रवाइयों के फलस्वरूप पलायन करने वाले वजीरिस्तानी शरणार्थी शामिल हैं। तालिबान ने इन हवाई हमलों का बदला लेने की बात कही है जिससे पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा पर टकराव बढ़ सकता है। इस प्रकार का टकराव बढ़ने से क्षेत्र में अस्थिरता बढ़ सकती है जो पहले ही विद्रोहों, सीमापार से आतंकवाद तथा दीर्घकालीन विवादों का शिकार बना हुआ है।

पाकिस्तान व अफगानिस्तान के बीच टकराव के भू-राजनीतिक प्रभावों के साथ ही मानवीय प्रभाव भी बहुत गंभीर हैं। अफगानिस्तान अब भी दशकों से जारी युद्ध से उबर रहा है और उसे अधिक विनाश का सामना करना पड़ रहा है। इस हिंसा का खामियाजा नागरिकों व खासकर शरणार्थियों को भुगतना पड़ रहा है क्योंकि मुर्गाबाजार जैसे गांव खंडहर में बदल गए हैं तथा बड़ी संख्या में परिवार विस्थापित हुए हैं। इस विनाश के कारण पहले से ही गंभीर मानवीय संकट और गंभीर हो गया है। इसे देखते हुए तत्काल अंतरराष्ट्रीय सहायता और समर्थन की जरूरत है। इस टकराव से क्षेत्र में जारी शांति प्रयासों को भी धक्का लगा है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान तथा अन्य पक्षों के बीच संवाद पूरे क्षेत्र में स्थायित्व बनाए रखने के लिए जरूरी है, पर ऐसी घटनाओं से यह प्रक्रिया पटरी से उतर सकती है। इसके साथ ही, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच बढ़ते टकराव से आतंकवाद के खिलाफ सहयोगी प्रयासों की पहल में बाधा आती है जिससे आतंकी घटनाओं का खतरा बढ़ता है क्योंकि इस खतरे से बचने के लिए समन्वित क्षेत्रीय कार्रवाई की जरूरत है। इस स्थिति से दक्षिण एशिया में भू-राजनीतिक स्थिति और जटिल हो गई है। इसे देखते हुए भारत, चीन और ईरान को अपनी रणनीतियों के पुनः आंकलन की जरूरत होगी। हालांकि, पाकिस्तानी कार्रवाई तत्कालीन सुरक्षा चिन्ताओं के कारण है, पर इससे परंपरागत सहयोगियों तथा क्षेत्र में शांति की पैरवी करने वाली विश्व शक्तियों से उसके संबंध प्रभावित हो सकते हैं। इस बढ़ते संकट का मुकाबला करने के लिए दोनों देशों को संवाद व सहयोग को प्राथमिकता देनी चाहिए। परस्पर सरोकारों व खासकर तहरीके तालिबान पाकिस्तान-टीटीपी संबंधी चिन्ताओं व सीमा सुरक्षा को संबोधित करने के लिए रचनात्मक द्विपक्षीय संबंध जरूरी हैं। संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसे तटस्थ पक्ष इन चर्चाओं में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। द्विपक्षीय प्रयासों के साथ ही स्थिति में सुधार के लिए क्षेत्रीय सहयोग भी जरूरी है। दक्षिण एशिया क्षेत्रीय सहयोग असोसियेशन-सार्क जैसे संगठनों के नेतृत्व में की जाने वाली पहलों से आतंकवाद के खिलाफसामूहिक कार्रवाई मजबूत हो सकती है तथा इससे आर्थिक परस्पर-निर्भरता को भी बढ़ावा मिल सकता है। ऐसे प्रयासों से पाकिस्तान व अफगानिस्तान के बीच टकराव घटाने को प्रोत्साहन मिलेगा।

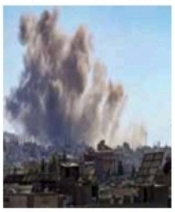

समावेशी भविष्य का आधार

स्वचालीकरण, कृत्रिम बुद्धि तथा वैश्वीकरण ने उद्योगों को नया स्वरूप दिया है। इससे प्रतियोगी बने रहने के लिए आजीवन सीखना तथा परिवर्तनशीलता जरूरी हो गई है।

दिनेश सूद
(लेखक, कौशल विकास से संबद्ध हैं)

तेज तकनीकी प्रगति तथा परिवर्तनशील आर्थिक परिदृश्य में कौशल विकास पर केन्द्रित विचार-विमर्श कभी इतना प्रासांगिक नहीं था। कौशल अब केवल रोजगार का साधन न होकर ऐसे औजार बन गए हैं जो हमारे सामूहिक भविष्य को स्वरूप देते हुए व्यक्तियों और देशों को बदल रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से कौशल परंपराओं और भूगोल से बंधे थे। किसान ने अपना कौशल पुरानी पीढ़ियों से सीखा था और कारीगर सालों तक प्रशिक्षण के बाद अपनी कला में माहिर बने थे। लेकिन इक्कीसवीं शताब्दी ने ये सीमायें तोड़ दी हैं।

आज स्वचालीकरण, कृत्रिम बुद्धि और वैश्वीकरण के कारण ऐसे कार्यबल की आवश्यकता है जो लगातार परिवर्तन, खोज एवं सीखने के रास्ते पर चल सके। कौशल अब स्थिर नहीं हैं, वे विकसित होते हैं और इस विकास की गति तेज हो रही है। इस परिवर्तन के केन्द्र में यह समझदारी है कि कौशल विकास अब एक बार के बजाय आजीवन यात्रा है। भविष्य उन लोगों का है जो इस सोच को स्वीकार करते हैं। एक साफ्टवेयर इंजीनियर को कल डेटा एनालिस्ट बनने की जरूरत पड़ सकती है।

इसी प्रकार मार्केटियर को व्यावहारिक मनोविज्ञानी या कृत्रिम बुद्धि का प्रयोग करना पड़ सकता है। दुनिया इस समय तेजी से 'गिग इकोनोमी' की ओर बढ़ रही है जिसमें लचीलापन, रचनात्मकता तथा परिवर्तनशीलता केवल योग्यता न होकर जरूरत बन गई हैं। ऐसे में आराम से रहने वाले लोग दुनिया में पीछे छूट जाएंगे जहां केवल परिवर्तन ही स्थाई हैं। सरकारें, शिक्षा संस्थान और निजी उद्यम कौशल विकास की संस्कृति विकसित करने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

पूर्व-औद्योगिक युग में बनी परंपरागत शिक्षा व्यवस्थाओं में आमूल परिवर्तन होना चाहिए। इनको अब रट कर सीखने या डिग्री प्राप्त करने के बजाय आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान तथा तकनीकी क्षमताओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। 'कोडिंग बूट कैंप', पेशेवर प्रशिक्षण तथा आनलाइन शिक्षण प्लेटफर्म जैसे तत्वों ने यथास्थिति बदलनी शुरू की है और इनसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच लोकतांत्रिक हुई है। लेकिन जयादा समावेशन तथा पहुंच को व्यापक बनाने के लिए बहुत कुछ करना जरूरी है।

कौशलों से हमारा अभिप्राय किसी को अच्छी आजीविका हेतु जल्दी से जल्दी प्रशिक्षित करना होता है। कौशल विकास एवं उद्यमिता पर राष्ट्रीय नीति, 2015 के अनुसार हमने 2022 के अंत तक 40 करोड़ लोगों को विभिन्न कौशलों से प्रशिक्षित करने का लक्ष्य बनाया था, लेकिन केवल 4 करोड़ लोगों को ही प्रशिक्षण दिया जा सका। विभिन्न पक्षों के सामने आने तथा महिलाओं और पुरुषों को विभिन्न रोजगार योग्य कौशलों से लैस करने के कारण इस क्षेत्र में व्यापक अवसर हैं। इसका अर्थ पूरे 'स्किलिंग इकोसिस्टम' को सेवाप्रदाताओं की मांगों के अनुसार ढालना है। आज कुशल कामगारों की मांग और उनकी बाजार में उपलब्धता के बीच भारी कमी है।

विकासशील देशों में 150 मिलियन युवाओं में लगभग 33 प्रतिशत कुशल पर बेरोजगार हैं क्योंकि उनकी रोजगार प्राप्त करने की क्षमता बेहतर बनाई जा सकती है। सरकारी नीति हस्तक्षेपों से विश्व बाजार में मांग और सप्लाई के बीच कमी दूर की जा सकती है। सब्सिडी, कर लाभ या सार्वजनिक-निजी साझेदारी से रोजगार योग्य कौशल विकास को प्रोत्साहन देने से नागरिकों की अपस्किलिंग या रिस्किलिंग हो सकती है। इसके साथ ही सरकारों को आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए ढांचा बनाना होगा। इनमें पेशेवर लोगों द्वारा अपने सीखने का कौशल बढ़ाने के सस्ते कोर्स शामिल हैं। इसके साथ ही उद्योगों को उपयुक्त कार्यबल बनाने में अपनी भूमिका की पहचान करनी होगी। कार्पोरेट प्रशिक्षण कार्यक्रम, मेंटरशिप पहलों तथा शिक्षा संस्थानों से सहयोग न केवल कर्मचारियों में निवेश है, बल्कि यह स्वयं बिजनेस के भविष्य में भी निवेश है। निरंतर सीखने की संस्कृति को बढ़ावा देने वाली कंपनियां उच्च उत्पादकता, कर्मचारियों को अपने साथ बनाए रखने तथा उद्योग में प्रतियोगिता करने में सफल होती हैं।

इसके साथ ही निजी क्षेत्र मार्केट प्रवृत्तियों व तकनीकी प्रगति को देखते हुए भावी कौशलों का आंकलन कर सकता है जिससे प्रशिक्षण कार्यक्रम भविष्योन्मुखी तथा प्रासांगिक बने रह सकते हैं। लेकिन कौशल विकास का अर्थ केवल आर्थिक प्रगति नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सशक्तीकरण का भी औजार है। अनेक विकासशील देशों में शिक्षा और कौशलों तक पहुंच में कमी लगातार गरीबी का दुष्चक्र बनाए रखने में योगदान कर रही है। ऐसे में हाशियाकृत समुदायों की मांग वाले कौशलों में प्रशिक्षित करने से पूरी जनसंख्या की प्रगति होगी तथा ज्यादा समावेशी प्रगति सुनिश्चित होगी। कोडिंग सीखने वाली ग्रामीण महिला या डिजिटल मार्केटिंग सीखने वाले विस्थापित श्रमिक इस बात का उदाहरण हैं कि कौशल से जीवन में कैसे परिवर्तन आता है। ऐसी खबरों से कौशल विकास की परिवर्तनशील संभावनायें उजागर होती हैं, विपरीत स्थितियों को अवसरों में बदलती हैं तथा सर्वाधिक आवश्यकता वाले लोगों में उम्मीद की किरण जगाती हैं। इस प्रकार के सशक्तीकरण का विस्तार व्यक्तियों से समुदायों और पूरे समाजों तक होता है। कुशल जनसंख्या स्थानीय चुनौतियों का बेहतर ढंग से सामना कर सकती है जिसमें ढांचागत संरचनाओं में सुधार से लेकर छोटे बिजनेस स्थापित करना शामिल हैं।

इस प्रकार कौशल विकास खोज व आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देता है, बाहरी सहायता पर निर्भरता घटाता है तथा टिकाऊ विकास को बढ़ावा देता है। मानव पूंजी में निवेश करने वाले समुदाय अक्सर अनेक लाभ उठाते हैं जिनमें उत्पादकता में वृद्धि तथा समृद्धि के साथ ही बेहतर स्वास्थ्यरक्षा, शिक्षा और जीवन गुणवत्ता शामिल हैं। कौशल विकास को बढ़ावा देने से हम गंभीर चुनौतियों का सामना भी कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, 'डिजिटल डिवाइड' से तकनीक या इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुंच न रखने वाले लोगों के पृथक्करण का खतरा पैदा हो जाता है। ग्रामीण क्षेत्र तथा वंचित क्षेत्र अक्सर इस असमानता का सामना करते हैं, जिससे लाखों लोग आधुनिक अर्थव्यवस्था में सहभागिता के उपकरण ही नहीं प्राप्त कर पाते हैं। यह खाई पाटने के लिए सार्वजनिक व निजी क्षेत्र को प्रयास करने जरूरी हैं जिनमें ढांचागत संरचनाओं में निवेश, सस्ती तकनीक तथा स्थानीय प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल हैं जो विशिष्ट क्षेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें।

इसी प्रकार कौशल प्रशिक्षण के एक प्रकार के समाधान सबके लिए विफल हो सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की कौशल प्रशिक्षण की यात्रा विशिष्ट होती है जो उसकी आकांक्षाओं, संदर्भ व क्षमताओं पर निर्भर करती है। ऐसे में सीखने के व्यक्ति-केन्द्रित मानकों को बढ़ावा मिलना चाहिए। नया कौशल सीखना एक प्रकार से 'प्रयास एवं गलतियां' शामिल होती हैं। इससे वह परिवेश बनता है जहां व्यक्तियों को प्रयोग करने और निर्भय होकर आगे बढ़ने को प्रोत्साहन मिलता है। सेवायोजकों और शिक्षकों को ऐसी संस्कृति विकसित करनी चाहिए जहां संपूर्णता के बजाय दृढ़ता तथा निरंतर सुधार जैसे मूल्यों को प्रोत्साहन मिले।

कौशल विकास की संभावनायें उसी प्रकार असीम हैं जैसे संगमरमर से अनेक प्रकार की रचनायें बनाई जा सकती हैं, लेकिन इसके लिए समुचित औजारों, निर्देशन एवं प्रयासों की जरूरत होती है। कृत्रिम बुद्धि-एआई, डेटा निजता तथा टिकाऊपन के प्रभावों को समझना तकनीकी उत्कृष्टता के लिए जरूरी है। समग्र दृष्टिकोण अपनाने से तेज एवं जिम्मेदार प्रगति होती है। इससे ऐसा भविष्य बनता है जहां मानवीय मूल्य और समाज की बेहतरी एक दूसरे से जुड़ते हैं। कुल मिला कर कहें तो कौशल विकास आर्थिक मांगों से आगे जाता है। यह एक परिवर्तनकारी शक्ति है जो हमारी दुनिया को बदल रही है।

इससे व्यक्तियों का सशक्तीकरण होता है, खोज को बढ़ावा मिलता है तथा समावेशी वृद्धि सुनिश्चित होती है। कौशलों में निवेश कर हम लोगों में निवेश करते हैं और लोगों में निवेश कर हम भविष्य में निवेश करते हैं।

विजेता कभी मैदान नहीं छोड़ते

> यह केवल एक सकारात्मक स्वभाव और विचार ही हैं जो हमें आगे बढ़ाते हैं ताकि सफल लोग अपनी सतर्कता कम न करें।

रवि वलूरी
(लेखक, रेलवे विभाग से संबद्ध हैं)

जैक क्राउशोर एक करिश्माई नेता, एक सफल स्टील मैग्नेट और एक सफल व्यक्ति थे, जिन्होंने कभी हार नहीं मानी, चाहे उनके सामने कोई भी परिस्थिति क्यों न आई हो। वे परिस्थितियों के अनुसार बच्चों की तरह व्यवहार करने की रणनीति अपनाने में भी उतने ही माहिर थे।

समय के साथ, उनके दिमाग ने सीखा कि परिस्थितिजन्य कारक नेतृत्व की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं। सफल नेता उच्च-स्तरीय उपलब्धि वाले होते हैं, जो हार नहीं मानते। उन्हें जीवन में सुखद दिन मिलते हैं, जो उन्हें खुशी के पल प्रदान करते हैं, और कुछ दुखद घटनाएं भी हो सकती हैं जो सौभाग्य से समृद्धि की सीढ़ी चढ़ने के उनके जुनून को कम नहीं करती हैं। पैन्सी गिब्स कहती हैं, हम कल्पना करते हैं कि उच्च उपलब्धि वाले लोग जन्म से ही महानता के लिए तैयार होते हैं। लेकिन फिर आपको आश्चर्य होगा कि समय के साथ, कुछ लोगों में प्राकृतिक प्रतिभा क्यों प्रन्वलित होती है और दूसरों में फीकी पड़ जाती है।

जादुई फिल्म 3 इडियट्स को याद करें। आमिर खान, शरमन जोशी और आर. माधवन ने मुख्य भूमिकाएं निभाई थीं। संस्थान के निदेशक ने उन्हें शिष्ट भाषा में 3 इडियट्स कहा था। उनमें से एक रैंचो (आमिर खान) एक सफल व्यक्ति था, जो प्राकृतिक प्रतिभा, अलग सोच और क्रांतिकारी विचारों से संपन्न था। फिल्म में एक मार्मिक दृश्य है, जिसमें जॉय लोबो की भूमिका निभाने वाले अली फजल की जान चली जाती है, क्योंकि वह निर्धारित प्रोजेक्ट कार्य को पूरा करने की समय सीमा को पूरा करने में असमर्थ था और इस तरह एक फिसड्डी बन गया। वह एक बैटरी से चलने वाली %फ्लाइंग मशीन% पर काम कर रहा था, जो अपनी जादुई आँखों और विशेषताओं के माध्यम से विभिन्न घटनाओं को कैद कर सकती थी। अफसोस, उसके प्रयास विफल रहे, जबकि निपुण रैंचो ने मशीन को डिजाइन करने में सफलता प्राप्त की... और एक परीक्षण उड़ान के दौरान, वह और पूरा कॉलेज जॉय लोबो की अपनी जान लेने की चौंकाने वाली त्रासदी का गवाह बना। घटनाओं के मोड़ से निराश होकर, लोबो ने अपने कमरे की दीवारों पर प्रमुखता से लिखा - मैं छोड़ रहा हूं। इस दृश्य ने परियोजना की विफलता और उस चरित्र की घोर अधीनता को ग्राफिक रूप से दर्ज किया, जो एक सफल व्यक्ति नहीं था। एक बार, कुछ वरिष्ठों ने एक कर्मचारी को उसके खराब प्रदर्शन के कारण नौकरी से निकाल दिया। उसने सभी रिश्तों और अपनी आध्यात्मिकता को छोड़ने का फैसला किया, और निराशा में उसने भगवान को बताया कि उसने अपना जीवन त्यागने का फैसला किया है। भगवान ने उसे जंगल में फर्न और बांस की तलाश करने के लिए कहा। जब भगवान ने फर्न और बांस के बीज लगाए, तो उन्होंने उनका विशेष ध्यान रखा और उन्हें मौसम की सभी अनिश्चितताओं से बचाया। एक साल के भीतर फर्न शानदार और इंद्रधनुषी हो गए, पूरे फर्श को कवर कर लिया, जबकि बांस के बीजों में कोई वृद्धि नहीं हुई। अगले चार वर्षों में, जंगल लगातार बढ़ते फर्न से हरा-भरा हो गया और फिर भी बांस के बढ़ने या पेड़ बनने का कोई संकेत नहीं था।

पांचवें वर्ष में, बांस के बीज अंकुरित होने लगे। अगले छह महीनों में, बांस के अंकुर सौ फीट की ऊंचाई तक बढ़ गए, जो फर्न के बागान पर राज कर रहे थे। भगवान ने उस व्यक्ति को देखकर मुस्कुराया और कहा कि उसने पांच साल तक बांस के बीजों को उगाना नहीं छोड़ा। इस समयावधि के दौरान, बांस के पेड़ की जड़ें बढ़ रही थीं। हमारे संघर्ष का दौर बांस के पेड़ की जड़ों के विकास जैसा है। फर्न और बांस दोनों ही अपनी-अपनी गति से बढ़े, जैसा कि ब्रह्मांड और प्रकृति ने चाहा।

वे एक-दूसरे के विकास के पूरक थे और प्रतिस्पर्धी नहीं थे। खुशी हमें मधुर बनाती है और परीक्षण हमें मजबूत बनाते हैं; दुखों का सामना करने पर हमें मजबूत बनना चाहिए और सफलता के द्वारा हमें आभारी और उज्ज्वल बनना चाहिए। अंतिम विश्लेषण में, यह केवल एक सकारात्मक स्वभाव और विचार ही हैं जो हमें आगे बढ़ाते हैं ताकि सफल लोग अपनी सतर्कता कम न करें और इस तरह हार न मानें।

आप की बात

महान राजनेता का निधन

डॉ. मनमोहन सिंह एक महान अर्थशास्त्री और राजनेता थे, जिन्होंने भारत के आर्थिक इतिहास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका निधन एक बड़ी क्षति है, और हम उनकी याद में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। डॉ. सिंह ने अपने जीवनकाल में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया, डॉ. सिंह 1991 से 1996 तक भारत के वित्त मंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को उदारीकरण और निजीकरण की दिशा में आगे बढ़ाया। डॉ. सिंह 2004 से 2014 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। उनके नेतृत्व में भारत ने कई महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक सुधार किए।सिंह 1982 से 1985 तक भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर रहे। इस दौरान उन्होंने भारत की मौद्रिक नीति को मजबूत किया। डॉ. सिंह योजना आयोग के उपाध्यक्ष भी रहे। इस दौरान उन्होंने भारत के पंचवर्षीय योजनाओं को तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। डॉ. सिंह को उनके कार्यों के लिए कई पुरस्कार और सम्मान मिले। उन्हें 1987 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया, जो भारत का दूसरा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। डॉ. सिंह का निधन एक बड़ी क्षति है, लेकिन उनकी विरासत जीवित रहेगी। हम उनकी याद में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

– **सुभाष बुड़ावनवाला**, रतलाम

बीते वर्ष की उपलब्धियां

सैन्य सशक्तिकरण की दिशा में वर्ष 2024 अनेक मायनों में महत्वपूर्ण रहा है। सीमावर्ती क्षेत्रों में आधारभूत संरचना का विकास, सैना के तीनों अंगो के सशक्तिकरण हेतु नवीन तकनीक वाले रक्षा उपकरणो के सौदे तथा रक्षा उत्पादन एवं निर्यात मे वृद्धि इस वर्ष की महत्वपूर्ण उपलब्धिया रही है। नौसेना को इस वर्ष आईएनएस तुशील तथा अरिहंत श्रेणी की दूसरी परमाणु पनडुब्बी आईएनएस अरिघात मिलने से भारतीय नौसेना के सशक्तिकरण में एक नया अध्याय जुड़ गया है।हस के साथ हाल ही में किया गया पांचवीं पीढ़ी के सुखोई स्ह-57 स्टील्थ लड़ाकू विमान का सौदा वायुसेना के सशक्तिकरण में मील का पत्थर साबित होगा। अमरिका के साथ प्रीडेटर ड्रोन का सौदा को भी सैन्य दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। इन 31 प्रीडेटर ड्रोन में से 15 भारतीय नौसेना को मिलेंगे, जबकि बाकी वायुसेना और थल सेना के को बंटि जाएंगे। इसी प्रकार हाइपरसोनिक मिसाइल के सफल परीक्षण के बाद भारत उन चुनिंदा देशों में शामिल हो गया है, जिनके पास यह एडवांस टेक्नोलॉजी है। 1700 कि.मी की रेंज वाली हाइपरसोनिक मिसाइल आवाज की गति से पाँच गुना तेज रफ्तार से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती हैं। जिसे एंटी मिसाइल सिस्टम ट्रैक नहीं कर पाता है। जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी पर बनाया गया विश्व का सबसे ऊंचा रेलवे पुल भी सीमा क्षेत्र में आधारभूत संरचना का महत्वपूर्ण अंग है।

– **विमलेश पगारिया**, बदनावर, मप्र

भारत बनाम बांग्लादेश

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के कदम भारत और बांग्लादेश के रिश्तों में खटास बढ़ा सकते हैं। यह डर सही साबित हो रहा है क्योंकि बांग्लादेश की सरकार ने पाकिस्तान के साथ तेजी से रिश्ते सुधारने शुरू कर दिए है। इससे भारत के लिए समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं, खासकर सीमा सुरक्षा के मामले में। भारत को बांग्लादेश सीमा को लेकर सतर्कता बढ़ानी होगी ताकि किसी भी अप्रत्याशित स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहा जा सके। बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच बढ़ती नजदीकी भारत के लिए चिंता का विषय हो सकती है। दोनों देशों के बीच आर्थिक और सामरिक सहयोग बढ़ रहा है, जो भारत की सुरक्षा और आर्थिक हितों को प्रभावित कर सकता है। इस स्थिति में, भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव लाने की आवश्यकता हो सकती है। भारत को बांग्लादेश के साथ अपने संबंधों को मजबूत बनाने के लिए कूटनीतिक प्रयास करने होंगे, साथ ही पाकिस्तान के साथ अपने संबंधों को सावधानी से संभालना होगा। इसके अलावा, भारत को अपनी सीमा सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए कदम उठाने होंगे। इसमें सीमा पर सुरक्षा बलों की तैनाती बढ़ाना, सीमा बाड़ लगाना और सीमा पार से होने वाली अवैध गतिविधियों पर नजर रखना होगा। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के कदम रिश्तों में खटास बढ़ा सकते हैं।

– **विभुवित बुपक्या**, खाचरोद

भागवत के बयान

स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत के धार्मिक बयानों से शायद आजकल संत समाज नाराज दिख रहा है। पिछले दिनों भागवत ने कहा था कि हर मस्जिद के नीचे मंदिर खोजना ठीक नहीं है। उनकी नहीं बातों को लेकर संत समाज नाराज है। उनका कहना है कि यह बयान अल्पसंख्यकों को खुश करने वाला अधिक लगता है। इसी पर जगतगुरु श्रीरामभद्राचार्य जी ने अपने बयान में कहा है कि मोहन भागवत संघ प्रमुख हैं परंतु हिन्दू धर्म के प्रमुख नहीं हैं, तथा उनकी बातों पर अमल करना जरूरी नहीं है। फिर हिन्दू समाज के लिए उनके अपने धार्मिक संत एवं शंकराचार्य मौजूद हैं। अतः भागवत को अपने किसी भी बयान में हिन्दू समाज को सम्बोधित नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह कोई हिन्दू समाज के धर्मगुरु नहीं कहलाए जाते। जगतगुरु जी का कहना एकदम उचित है कि हिन्दुओं के धार्मिक स्थल उनके अपने हैं एवं उनका ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व भी है। अतः अगर कोई उन्हें पाने का प्रयास करता है तो उसका समर्थन करना चाहिए।

– **आदित्यराज सोनी**, मनावर

पाठक अपनी प्रतिक्रिया ई-मेल से responsemail.hindipioneer@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।